Hin- 1-10.
First language.

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

हिंदी पाठ्यक्रम निर्माण समिति

डॉ.एम.विमला
अध्यक्षा
अध्यक्षा, हिंदी विभाग
बेंगलूर विश्वविद्यालय
बेंगलूर - 560 056.

डॉ.बी.नरसिंहमूर्ति प्राध्यापक हिंदी विभाग कोंगाड़ियप्पा कॉलेज दोड्ड बल्लापुर ।	**डॉ.बी.एस.सुब्बलक्ष्मी** प्राध्यापिका हिंदी विभाग वी.वी.एस.फस्ट ग्रेड कॉलेज फॉर विमेन बसवेश्वर नगर बेंगलूर ।	**टी.सी.सिद्धरामेश** प्राध्यापक श्री जगद्गुरु रेणुकाचार्या कॉलेज आनंद राव सर्कल बेंगलूर ।
एस.बी.जोशी पूर्व प्राचार्य एच.एस. बी.एड़ कॉलेज एस.बी.एम रोड़ शिमोगा ।	**एस.के.पंचारिया** पूर्व प्राचार्य गुलेदगुड्डा बागलकोट ता. ।	**डॉ.के.आय.सत्तिगेरी** प्राचार्य डॉ.बी.डी.जत्ती शिक्षा महाविद्यालय सिविल अस्पताल रोड़, अयोध्या नगर बेलगाम ।

उमा राव अध्यापिका सरकारी हायर प्राइमारी स्कूल जैन मार्केट बल्लारी ।	**एस.विजी** अध्यापक सरकारी हाईस्कूल रेलवे वर्कशाप मैसूर ।	**के.वी.लक्ष्मण** अध्यापक सरकारी हाईस्कूल सोमेश उच्चिला मंगलूर ता. ।
शंकरम्मा एस.दावलगी अध्यापिका डी.अइ.ई.टी धारवाड़ ।	**डॉ.टी.शुभानंद** अध्यापक गुरुदेव हाईस्कूल कोट्टूर कूड़लिगि ता. बल्लारी ।	**मंजुनाथ डी.** अध्यापक सरकारी पदवी पूर्व कॉलेज चिक्कागोंडनहल्ली चित्रदुर्गा ।
पुट्टराजु अध्यापक सरकारी हाईस्कूल चिक्क मंड्या मंड्या ता. ।	**सुब्बा रेड्डी** अध्यापक सरकारी जूनियर कॉलेज चिंतामणी कोलार ता. ।	

प्रथम भाषा हिंदी

कक्षा 1 से 4

प्रस्तावना

कर्नाटक राज्य में प्रथम भाषा हिंदी के अध्ययन का शुभारंभ पहली कक्षा से ही होता है । बालकों को अपने अनुभव तथा विचार व्यक्त करने का मौका दिया जाय ; उनमें शिक्षा के प्रति उत्सुकता, इच्छा को जागृत किया जाय ; घर के वातावरण तथा पाठशाला के वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया जाय ; बालकों के आपसी संबंध मधुर तथा घनिष्ठ बन सके ; उनको बात कहने तथा पूछने का पूरा मौका दिया जाय ; उनमें सुनने की रुचि पैदा हो तथा वे अपने भावों को अभिव्यक्त करना सीख सकें ; विद्यालय में उपलब्ध साधनों के आधार पर बालकों के सीखने की प्रक्रिया को व्यवस्थित करने का प्रयास किया जा सके ; पढ़ी, सुनी कहानियाँ तथा कविताओं के द्वारा वे अपने नये अनुभवों का विकस कर सकें ; उनमें सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जा सके ; वे जीवन में सकारात्मक विचारों को ग्रहण करने की क्षमता का विकास भी कर सकें ; उनमें जीवन-यापन की अपूर्व कला का विकास हो ; साथ ही, उनमें मानवीय गुणों का भी विकास हो — इन्हीं सारे उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पहली से चौथी कक्षा के पाठ्यक्रम की नई रूप-रेखा तैयार की गयी है । शिक्षा को आवश्यकतानुसार व्यावहारिक बनाना ज़रूरी है । बालक अपने समय की परिस्थितियों में सामंजस्य बिठा सकें - इसी बात को ध्यान में रखकर इस पाठ्यक्रम की नई रूप-रेखा प्रस्तुत की गयी है । इसमें बालकों के मानसिक स्तर का भी विशेष ध्यान रखा गया है । पहली कक्षा से चौथी कक्षा के छात्रों की आयु तथा मानसिक स्तर के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करने का प्रयास किया गया है । बच्चों के व्यक्तित्व-विकास के लिए जिन विषयों को आवश्यक माना गया है, उनको ही समाहित किया गया है । आशा है इससे छात्रों को सीखने में आत्म संतुष्टि मिलेगी ।

प्राथमिक स्तर पर प्रथम भाषा हिंदी शिक्षण के सामान्य उद्देश्य

* भाषा के माध्यम से दूसरों के विचारों को सुनकर समझने में तथा दूसरों के सम्मुख विचारों को हिंदी में अभिव्यक्त करने में छात्रों को सक्षम बनाना ।

* भाषा के मानक रूप का प्रयोग करने की योग्यता उत्पन्न करना ।

* हिंदी साहित्य की विविध विधाओं से परिचित कराना तथा सरल साहित्य में रुचि उत्पन्न करना ।

* पढ़ने के द्वारा ज्ञान वृद्धि एवं मनोरंजन प्राप्त करने में सक्षम बनाना ।

* लेखन की यांत्रिक कुशलताओं का विकास करना ।

प्राथमिक स्तर पर प्रथम भाषा हिंदी शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य

* बोलने में छात्रों की झिझक दूर करना तथा उन्हें अपने साथियों और अध्यापकों से सहज ढंग से बोलने में समर्थ बनाना ।

* छात्रों में विभिन्न ध्वनियों को सुनकर उनमें अंतर पहचानने की योग्यता का विकास करना ।

* कहानी व कविता सुनने तथा समूह-गान गाने आदि के द्वारा मौलिक अभिव्यक्ति का विकास करना ।

* छात्रों के उच्चारण को धीरे-धीरे मानक हिंदी की ओर लाना ।

* छात्रों को देवनागरी के सभी लिपि-संकेतों के योग से बननेवाले परिचित शब्दों को पढ़ने में समर्थ बनाना ।

* दूसरों के सरल विचारों को पढ़कर समझने की योग्यता उत्पन्न करना तथा पढ़ने में उनकी रुचि जगाना ।

* छात्रों का शब्द-भण्डार बढ़ाना ।

* दैनिक व्यवहार में उपयोग करनेवाले शब्दों का परिचय तथा ग्रहण करना ।

उद्देश्य : पहली और दूसरी कक्षा

1. विद्यालय में उपलब्ध चित्रों के द्वारा बच्चों के अनुभवों को विकसित करना । उनमें सुनने की क्षमता का विकास करना । विद्यालय में अपनेपन के भाव को विकसित करना ।
2. बालकों को बोलने के लिए पर्याप्त समय देना । सुनी गयी बातों के आधार पर उनको बोलने के लिए तैयार करना ।
3. पहली कक्षा में पाँच से आठ तक अभिनय गीत दिये जाय ताकि बालक समूह में गीत गाना सीख सकें ।
4. चित्रों के द्वारा वर्णमाला का परिचय देना । उसी से वर्ण सिखाने का अभ्यास भी कराना ।
5. तीन से चार तक छोटी-छोटी चित्र-कथाएँ पाठ्य-पुस्तक में सम्मिलित की जाय । उससे बालकों के अनुभवों का विकास करना ।
6. जीवन में उपयोग होनेवाले घरेलू उपकरण, फल, सब्ज़ियाँ आदि का चित्रों द्वारा परिचय देना । पारिवार के सदस्यों का, शरीर के प्रमुख अंगों का परिचय भी देना ।
7. भिन्न-भिन्न रंगों की आकृतियों का परिचय चित्रों द्वारा देना ।
8. बिना मात्राओं के दो या तीन अक्षरों के शब्दों का परिचय देना । देवनागरी अंक एक से दस तक का परिचय चित्रों से देना ।
9. दूसरी कक्षा से बारहखड़ी, मात्राओं से संबंधित छोटे-छोटे पाठ देना । लिखने का अभ्यास भी कराना ।
10. रेखाओं के द्वारा चित्र-रचना-कौशल को विकसित करना । इससे नये शब्दों को सिखाना ।
11. चित्रों की सहायता से लिंग-भेद परिचय देना । स्वर तथा व्यंजन, संयुक्ताक्षरों को पहचानने, बोलने की क्षमता का विकास करना ।
12. बारहखड़ी का परिचय देकर विराम चिह्नों को सिखाना । सरल संवाद की क्षमता विकसित करना । वाचन, लेखन में रुचि उत्पन्न करना । सुंदर लेखन पर अधिक ध्यान देना ।

उद्देश्य : तीसरी और चौथी कक्षा

1. इन्हीं कक्षाओं से मातृभाषा की ध्वनियों को समझने का ज्ञान बढ़ाना । यहीं से उच्चारण, शब्दों के प्रयोग, वाक्य-रचनाएँ, वार्तालाप के द्वारा इन कौशलों का विकास करना ।
2. पूर्वज्ञान के आधार पर सुनी हुई कहानियों या बातों के द्वारा नई सोच को विकसित करना । विद्यालय में उपलब्ध साधनों के अनुसार उनका प्रयोग करना ।
3. पूर्वज्ञान के आधार पर बोलने की योग्यता का विकास करना । कुछ-एक घटनाएँ बताकर उनके द्वारा बोलने की क्षमता बढ़ाना ।
4. इसी कक्षा से वाचन कला का विकास करना । नये शब्दों, नये वाक्यों का ज्ञान देना । इसमें सस्वर वाचन कविताओं का उपयोग करना । गद्य-वाचन में विराम चिह्नों का परिचय देना ।
5. सरल मुहावरों का प्रयोग करके उनके अर्थ को समझाना, ताकि वे अपने बातचीत में मुहावरों का प्रयोग कर सकें ।
6. मौन-वाचन के द्वारा पाठ्यवस्तु के अर्थग्रहण करने की क्षमता का विकास करना । (इसमें शिक्षाप्रद छोटी-छोटी कहानियाँ लीं जाय । विशेष घटनाओं को भी इसमें लिया जा सकता है ।)
7. पाठों का चयन करते समय बालकों के मनोरंजन का ध्यान रखना भी अत्यंत आवश्यक है । उनकी मानसिक योग्यता, उनकी अभिरुचि के अनुसार पाठ्य सामग्री को तैयार करना । यहीं से लेखन-कला का विकास करना ।

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 1

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 1

1. पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा ।
2. अवधि की तालिका ।
3. सामान्य सूचनाएँ ।
4. संकलित सामर्थ्य तालिका ।
5. सामर्थ्याधारित पाठ्यक्रम ।

पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा

1 प्रस्तुत पाठ्यक्रम को तैयार करते समय राज्य पाठ्यक्रम 2001 - 02, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम 2005 पर ध्यान दिया गया है ।

2 पाठ्यक्रम को शिशुकेन्द्रित, कौशलाधारित क्रियाओं तथा आनन्ददायक सन्दर्भों को आधार बनाकर तैयार किया गया है ।

3 छात्र को साहित्यिक भाषा तथा बोलचाल की भाषा का यथावत् प्रयोग करने के लिए अवसर दिया गया है ।

4 छात्र को शाला में प्राप्त ज्ञान को निजी जीवन में अपनाने के लिए अवसर दिया गया है ।

5 'सरल से कठिन की ओर' शिक्षण-सूत्र को ध्यान में रखा गया है ।

6 पाठ्यक्रम में पाठ का क्षेत्र-विस्तार तथा मूल्यांकन की ओर भी ध्यान दिया गया है ।

7 अवधि-निर्धारण करने के पश्चात् ही पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है ।

8 समाज-उपयोगी मूल्यों को छात्रों में बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है ।

9 भाषा-कौशलों को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है ।

10. आत्मगौरव, जिम्मेदारी, सहायता, परिसरप्रेम
विनम्रता, सफाई, मित्रभावना, सरलता, परिसरप्रेम - पाठ-पद्यों में इन मूल्यों की ओर ध्यान दें।

सामर्थ्याधारित अवधि की तालिका

क्षेत्र	निर्धारित अवधि
सुनना	107
बोलना	113
पढ़ना	94
लिखना	88
शाला वातावरण के समायोजन के लिए पूर्व तैयारी-क्रियाएँ	53
कुल अवधि	**455**

पाठ्य-पुस्तक रचनाधारित अवधि की तालिका

पाठ्य विभाग	संख्या	निर्धारित अवधि
सामर्थ्याधारित गद्यपाठ	10	250
सामर्थ्याधारित पद्यपाठ	8	152
शाला वातावरण के समायोजन के लिए पूर्व तैयारी-क्रियाएँ		53
कुल अवधि		**455**

पाठ्य-पुस्तक रचना के लिए कुछ सामान्य सूचनाएँ

* सरल से सरल **दस** गद्य पाठ हों ।

* सरल से सरल **आठ** पद्य पाठ हों ।

* गद्य पाठ छात्रों के आस-पास के परिवेश पर आधारित हों, सरल परिचित शब्दों का प्रयोग हो ।

* प्रचलित सरल चित्रकथा, नीति प्रधान कथा, परिवार तथा शाला परिवेश में होनेवाले सरल वार्तालाप के गद्य पाठ हों ।

* वर्ण तथा शब्द अधिक से अधिक चित्रों के साथ हों ।

* अधिक प्रचलित लयबद्ध, बालगीत, कविता पाठ हों । आठ से बारह पंक्तियाँ हों ।

* हर गद्य और पद्य पाठ में होनेवाले अभ्यास क्रम छात्रों की सामर्थ्य के पूरक हों ।

* हर गद्य और पद्य पाठ में अर्जित कौशलों के पुनर्बलन के लिए उपयोगी आयोजन हो ।

* मूल्यांकन के लिए पाठ्य-पुस्तक में सूचना दें ।

सामर्थ्यों का विवरण

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* सरल और उपयोगी, लोकप्रिय लयबद्ध, बालगीत तथा कहानियों को सुनने के साथ अर्थग्रहण करना ।	* सरल वाक्यों का यथावत् स्पष्ट उच्चारण करना ।	* वर्णमाला और बारहखड़ी को विच्छेद तथा क्रमानुरूप से पहचानना ।	* स्वर, व्यंजन तथा बारहखड़ी का अनुकरण करना ।
* परिचित परिवेश में वार्तालाप एवं संवाद का अर्थग्रहण करना ।	* सरल लयबद्ध, कविता तथा गीतों को अभिनय के साथ सामूहिक रूप से गाना ।	* श्यामपट तथा चमक कार्ड पर बड़े आकार में लिखे अक्षरों को पढ़ना ।	* श्रुतलेखन के द्वारा वर्णमाला तथा बारहखड़ी लिखना ।
* परिचित परिवेश की सूचना और मौखिक माँगों का अर्थग्रहण करना ।	* सरल प्रश्नों का 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर देना ।	* दो या तीन वर्णों से बने सरल शब्दों को जोर से पढ़ना ।	* परिचित सरल शब्द और वाक्यों को लिखना ।

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* पाठ्य विषय के सरल विचारों को याद करना ।	* प्रश्न करने की कुशलता बढ़ाना ।	* करीब 1500 शब्दों को पढ़कर अर्थग्रहण करना ।	* हिन्दी में गिनती लिखना ।
* सुनने के बाद कौन ? कब ? तथा कहाँ ? - इन प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम बनना ।	* विनयपूर्वक बातचीत करना ।		

सुनना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सरल और उपयोगी लोकप्रिय, लयबद्ध बालगीत और कहानियों को सुनने के साथ अर्थग्रहण करना ।	* श्रवण कौशल की क्षमता बढ़ाना । * लयबद्ध गीतों को दुहराना । * सरल, छोटी कहानियों को सुनकर अर्थग्रहण करना ।	* अधिक प्रचलित जनप्रिय लययुक्त गीत । * सरल कहानियाँ हो ।	* लयबद्ध गीतों को अभिनय के साथ पढ़ाना । * सरल गीतों को रागात्मक ढंग से छात्रों को पढ़ाना । * सरल और छोटी कहानियाँ सुनाना ।	* छात्रों से गीतों को गवाना । * छात्रों को कहानी सुनाने के लिए कहना । * मौखिक प्रश्न पूछकर उत्तर पाना ।
* परिचित परिवेश के वार्तालाप को समझना और अर्थग्रहण करना ।	* व्यक्तियों के वार्तालाप को सुनने के साथ-साथ अर्थ-ग्रहण करना । * वार्तालाप के विषय को सुनकर अर्थग्रहण करना।	* परिवार में होनेवाले छोटे-छोटे वार्तालाप संबंधी गद्य । जैसे :- माँ-बाप भाई-बहन, नाना-नानी	* वार्तालाप को पात्रानुसार बोलने और सुनने का अवसर देना । * छात्रों से वार्तालाप करवाना ।	* सुने हुए वार्तालाप से संबंधित प्रश्न पूछना और उत्तर पाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
	* एक विषय के बारे में होनेवाले वार्तालाप का अर्थग्रहण करना ।		* आस-पास में होनेवाले अन्य विषयों से संबंधित वार्तालाप । * जैसे :-डॉक्टर और रोगी व्यापारी और ग्राहक	* छात्रों से सरल वार्तालाप करवाना । * छात्रों से अभिनय कराना ।
* परिचित परिवेश की सूचना और मौखिक माँगों का अर्थ-ग्रहण करना ।	* सरल सूचनाओं को सुनकर अर्थग्रहण करना । * सूचनाओं को सुनकर अर्थग्रहण करके फिर अभिव्यक्त करना ।	* अधिक प्रचलित खेल-खूद से संबंधित छोटा-सा पाठ ।	* पाठ में दी गयी सूचनाओं को समझाना । * प्रादेशिक स्तर पर परिचित खेलों को खेलने के लिए सूचना देना । * शाब्दिक और आंगिक सूचना देना ।	* पाठ पर आधारित प्रश्न पूछना और उत्तर पाना । * शाला परिवेश में देनेवाली सूचनाओं का पालन कराना । छात्रों का निरीक्षण करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* पाठ्य विषय के सरल विषयों को याद करना ।	* पठित पाठ में निहित नये विचारों को ग्रहण करना । * मन पसंद विचारों को अभिव्यक्त करना ।	* परिचित कथा के आधार पर सरल कविता । **उदा** :- मूर्ख कछुआ, सियार और अंगूर * छोटी कहानियाँ भी हो ।	* कविता को रागात्मक ढंग से अभिनय के साथ पढ़ाना । * कविता के भावार्थ को सरल वाक्यों में समझाना । * सरल और छोटी कहानी सुनाना । * प्रचलित बालगीतों को सुनाना ।	* कविता के आधार पर प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करना ।
* सुनने के बाद कौन ? कब ? और कहाँ ? -- इन प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम बनाना ।	* एक गद्य या पद्य सुनने के बाद उसके प्रधान अंशों पर प्रश्न करके उत्तर देना ।	* व्यक्ति, प्राणी, पक्षी से संबंधित सरल कविता ।	* कविता को राग और अभिनय के साथ पढ़ाना । * कविता का अर्थ सरल वाक्यों में बताना ।	* कविता पाठ के आधार पर प्रश्न पूछकर उत्तर पाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
	* किसी सरल विषय सुनने के बाद कौन ?कब ? कहाँ ?-इन प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता बढ़ाना ।		* कविता के आधार पर कौन ? कब ? और कहाँ ? -- इन प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता बढ़ाना ।	

बोलना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सरल वाक्यों को यथावत् दुहराना ।	* सुने गये सरल वाक्यों को दुहराने का कौशल बढ़ाना । * बोलने के लिए प्रेरणा देना । * स्वतंत्र रूप में सरल वाक्यों को बोलने की क्षमता बढ़ाना ।	* सरल और अर्थगर्भित कविता । उदा :- तोता कौआ	* कविता की पंक्तियों को स्पष्ट रूप से पढ़ाना । * हर एक छात्र से कविता की पंक्तियों को दुहराना ।	* कविता के आधार पर प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करना । * अन्य गीत सुनने के लिए अवसर प्रदान करना ।
* सरल, लयबद्ध, कविता तथा गीतों को अभिनय के साथ सामूहिक रूप से गाना ।	* लयात्मक, कविता और गीतों को सामूहिक रूप से गाने से छात्रों में निर्भीकता आती है । * अभिनय के साथ गीतों को सामूहिक रूप से गाने से याद रखने में सहायता होगी ।	* सरल और प्रचलित लयबद्ध कविता ।	* कविता को रागात्मक ढंग से पढ़ाना । * प्रचलित बालगीतों को अभिनय के साथ पढ़ाना ।	* वैयक्तिक और सामूहिक रूप से कविता कहलवाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
	* सरल कविता और गीतों को गाने से छात्र आनन्द का अनुभव करते हैं ।			
* सरल प्रश्नों का 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर देना ।	* सरल प्रश्नों को सुनकर अर्थग्रहण करने का कौशल बढ़ाना । * प्रश्न सुनकर अर्थग्रहण करके उत्तर देने की क्षमता बढ़ाना ।	* नीतियुक्त सरल गद्य पाठ ।	* कहानी को समझाना । * मुख्य अंशों को ध्यान में रखते हुए एक तालिका तैयार करना । * दैनंदिन कार्य में हाँ या नहीं के उत्तर पाने के प्रश्न हों ।	* पाठ से संबंधित प्रश्न पूछकर उत्तर पाना । * तालिका के आधार पर प्रश्न पूछना ।
* प्रश्न करने की कुशलता बढ़ाना ।	* छात्रों में प्रश्न पूछकर उत्तर पाने की क्षमता बढ़ाना ।	* सफाई से संबंधित पाठ । * नीतिपरक कविता या कहानी ।	* प्रधान विषयों का अर्थ-ग्रहण कराना । * प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना ।	* पाठ के आधार पर सफाई से संबंधित प्रश्न पूछना और उत्तर प्राप्त करना । * प्रश्न रचना का अवसर देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* विनयपूर्वक बातचीत करना ।	* विनयपूर्वक बातचीत करने का उपयोग जानना । * बड़ों के साथ वार्तालाप करते समय गौरवपूर्ण शब्दों का उपयोग करने की कुशलता बढ़ाना । * मित्रों के साथ सौजन्यपूर्ण बर्ताव करने में सक्षम बनाना ।	* नीतिपरक वार्तालाप संबंधी पाठ ।	* पाठ में व्यक्त सविनय बातचीत करने के विचारों को समझाना । * पाठशाला और घर में बड़ों और गुरुजनों के साथ व्यवहार करने के लिए उपयुक्त शब्दावली सिखाना । * मित्रों के साथ व्यवहार करने की भाषा को समझाना ।	* छात्र अपने सहपाठियों के साथ करने-वाले वार्तालाप का अवलोकन करना । * शाला-परिवेश में छात्रों के व्यवहार का अवलोकन करना ।

पढ़ना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* वर्णमाला तथा बारहखड़ी का विच्छेद तथा अनुक्रम को पहचानना ।	* वर्णमाला के सभी वर्णों को पहचानकर पढ़ना । * वर्णमाला को जोड़कर पढ़ना । * चित्रयुक्त शब्दों को पढ़ना । * परिचित तथा सरल शब्दों को पढ़ना । * सरल वाक्यों को पढ़ना ।	* वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण से आरंभ होनेवाले चित्रयुक्त शब्द । * सरल और परिचित शब्द ।	* वर्णों को एक के बाद एक सिखाना । * सिखाते वक्त वर्णों के आधार पर ही शब्द रचना करवाकर पढ़ना । * वर्णों को पुस्तक या समाचार पत्रों में पहचानने के लिए कहना ।	* अक्षरों को श्रुतलेखन द्वारा पढ़ाना व लिखाना । * सरल शब्दों को पढ़ाना । * चित्र दिखाकर उससे संबंधित शब्द लिखाना और पढ़ाना ।
* श्यामपट और चमक कार्ड पर बड़े आकार में लिखित अक्षरों को पढ़ना ।	* वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण को पहचानकर स्पष्ट रूप से पढ़ना ।	* बिना संयुक्ताक्षर से रची गयी कविता ।	* चमक कार्ड पर विच्छेदित रूप में वर्णों को लिखकर पढ़ाना । * समाचार पत्र में छपे बड़े-बड़े अक्षरों को पढ़ाना ।	* चमक कार्ड पर लिखे अक्षरों को पढ़ाना । * समाचार पत्र तथा अन्य साहित्य के शीर्षकों को पढ़ाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* दो या तीन अक्षरवाले सरल शब्दों को जोर से पढ़ना ।	* सरल शब्दों को जोर से पढ़ने में सक्षम बनना । * अर्थ ग्रहण के साथ शब्दों को पढ़ना । * पठित शब्दों का अनुकरण करना ।	* बिना संयुक्ताक्षरवाले, परिचित चित्रयुक्त सरल पाठ ।	* चित्रयुक्त शब्दों को पढ़ाना । * चित्र रहित शब्दों की तालिका बनाकर पढ़ाना । * सरल शब्दों को श्यामपट पर लिखकर पढ़ाना । * पाठ में प्रयुक्त शब्दों को पढ़ाना और अनुकरण कराना ।	* श्यामपट और चमक कार्ड़ / समाचार पत्र पर लिखे सरल शब्दों को पढ़ाना ।
* करीब 1500 शब्दों को पढ़कर अर्थग्रहण करना ।	* शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़कर अर्थग्रहण करने की कुशलता बढ़ाना ।	* परिचित सरल शब्दयुक्त पाठ ।	* पाठ में प्रयुक्त शब्दों को पढ़कर समझाना । * अर्थ के साथ शब्दों को पढ़ाना । * अन्य गद्य-पद्यों को पढ़ाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन करना । * चमक कार्ड़ पर लिखित शब्दों को पढ़ाना और लिखाना ।

लिखना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* स्वर, व्यंजन तथा बारहखड़ी का अनुलेखन करना ।	* अक्षरों को उनकी लंबाई, चौड़ाई, मोटाई के अनुक्रम में लिखना । * व्यंजनों को स्वर चिह्नों के साथ लिखने से निर्मित वर्ण-स्वरूप को पहचानकर पढ़ना तथा लिखना ।	* बिना संयुक्ताक्षर और बारहखड़ीयुक्त गद्य पाठ। * विशेष पाठ के रूप में संयुक्ताक्षरों को एक ओर जोड़ना ।	* अक्षरों को क्रमबद्ध रूप से लिखने का अभ्यास कराना । * अक्षरों की लंबाई, चौड़ाई और मोटाई की ओर ध्यान दिलाना । * व्यंजनों के साथ स्वर चिह्नों को जोड़ने के क्रम का अभ्यास कराना । * सुलेख का अभ्यास कराना	* पाठाधारित मूल्यांकन करना । * अक्षरों के अनुलेखन का अवलोकन करना ।
* श्रुतलेखन द्वारा वर्णमाला तथा बारहखड़ी को लिखना ।	* अक्षर तथा बारहखड़ी को सीखना । * आकारानुसार लिखने का अभ्यास कराना । * स्मरण शक्ति को बढ़ाना ।	* कम-से-कम संयुक्ताक्षर-युक्त राष्ट्रीय त्योहार का विवरण देनेवाला सरल पाठ ।	* गद्य पाठ को समझाना । * गद्य में प्रयुक्त नये शब्दों का श्रुतलेखन देना । * सरल शब्दों की तालिका तैयार कर श्रुतलेखन द्वारा लिखाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन करना तथा बच्चों की तत्संबंधी जानकारी का दृढ़ीकरण करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* अप्रचलित शब्दों का श्रुतलेखन देना ।	* चमक कार्ड जोडने के लिए कहना । * वर्ण और शब्दों का श्रुतलेखन देना ।
* परिचित सरल शब्द और वाक्यों को लिखना ।	* अर्थ के साथ सरल शब्द और वाक्यों को लिखने का अभ्यास कराना ।	* पशु या पक्षी से संबंधित एक सरल पद्य ।	* पद्य को अभिनय के साथ गाना । * पद्य के अर्थ को सरल वाक्यों में समझाना । * पद्य की पंक्तियों को श्यामपट पर लिखकर छात्रों को अनुलेखन के लिए निर्देश देना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन करना और उनकी भाषाई क्षमता का दृढ़ीकरण करना । * श्रुतलेखन द्वारा सरल शब्द और वाक्यों को लिखाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
				* पद जोड़कर पढ़ाना । जैसे : मैं / जाता, गाता, पढ़ता / हूँ
* हिन्दी में गिनती लिखना ।	* हिन्दी में गिनती तथा देवनागरी अंकों का परिचय कराना ।	* 1 से 10 तक की गिनती युक्त गीत हो ।	* चमक कार्ड पर 1 से 10 तक की गिनती लिखकर बच्चों को सिखाना और लिखाना। * क्रमानुसार कहलाना ।	* प्रत्येक छात्र से कोई एक संख्या लिखाना ।

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 2

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 2

1. पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा

2. अवधियों की तालिका

3. पाठ्यवस्तु लिखने के लिए कुछ सामान्य सूचनाएँ

4. समेकित सामर्थ्य सूची

5. कौशलाधारित पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम तैयार करते समय राज्य पाठ्य क्रम 2001-02 और एन.सी.एफ. - 2005, इन दोनों को ध्यान में रखा गया है ।
2. पाठ्यक्रम को शिशुकेंद्रित, सामर्थ्य-आधारित, सुंदर परिवेश के आधार पर तैयार किया गया है ।
3. बच्चे की बोल चाल की भाषा, घरेलू भाषा को यथावत् स्वीकृत करने का अवसर दिया गया है ।
4. बच्चों को विद्यालय में प्राप्त ज्ञान को निजी जीवन में लागू करने के लिए अवसर दिए गए हैं ।
5. राष्ट्रीय मूल्यों, राष्ट्रीय भावैक्यता से संबंधित अंशों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है ।
6. सरलता से कठिनता की ओर पाठ्यक्रम को जोड़ा गया है ।
7. पाठ्यक्रम में ही मूल्यांकन और पाठ का विस्तार कितना होना चाहिए यह भी सूचित किया गया है ।
8. प्राप्त अवधियों को ध्यान में रखते हुए उसके अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया गया है ।
9. बोल चाल की भाषा स्तर से व्याकरणिक भाषा की ओर जाने के तरीक़े अपनाने के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया गया है ।
10. राष्ट्र, समाज, व्यवसाय, अपेक्षित और निरीक्षित मूल्यों को बढ़ाने के लिए अवसर दिया गया है ।
11. भाषा वृद्धि के साथ भाषा कौशल को प्रभावपूर्ण रूप से कल्पित कर समुचित फल की अपेक्षा की गई है ।
12. शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए अनुसंधान, प्रयोग तथा समेकित फलितांश को लागू करने का अवसर दिया गया है ।
13. भाषा विज्ञान की बुनियाद पर तैयार करने पर भी प्रादेशिक भाषा की विविधता को भी दर्शाया गया है ।
14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में सूचित बच्चों के सर्वतोमुख व्यक्तित्व-विकास के तत्वों के आधार पर तैयार किया गया है ।
15. ग्राम और नगर के शैक्षिक भेदों को दूर करने की ओर ध्यान दिया गया है ।
16. सीखने की प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सभी साहित्यिक विधाओं को अवसर दिया गया है ।
17. बड़ों के प्रति प्रेम, भाई-बहनों में प्यार, मित्रत्व, प्रामाणिकता, राष्ट्रप्रेम आदि मूल्यों की ओर पाठ्यपुस्तक रचना में समग्र ध्यान है।

सामर्थ्य के आधार पर अवधि की तालिका

क्षेत्र	निर्दिष्ट अवधियाँ
1. सुनना	113
2. बोलना	107
3. पढ़ना	94
4. लिखना	94
5. सेतुबंध	47
	455

पाठ्य-पुस्तक-रचना के आधार पर अवधि की तालिका

पाठ्य के विभाग	संख्या	निर्दिष्ट अवधि
सामर्थ्य के आधार पर गद्य पाठ	11	275
सामर्थ्य के आधार पर पद्य पाठ	07	133
सामर्थ्य के आधार पर सेतुबंध	47	47
		455

प्रत्येक गद्य / पद्य के लिए निर्धारित अवधियाँ

क्रम संख्या	स्तर	गद्य	पद्य
01	पूर्व सिद्धता / सीखने से पूर्व-क्रियाएँ	3	2
02	सीखने के अंश	8	6
03	अभ्यास / उपयोगी प्रक्रिया	8	6
04	मूल्यांकन	4	3
05	परिहार बोधन / पुनर्बलन कियाएँ	2	2
		25	**19**

पाठ्यवस्तु लिखने के लिए कुछ सामान्य सूचनाएँ

1. गद्य पाठ **11** हों ।
2. पद्य पाठ **07** हों ।
3. छोटी कहानी, चित्र सहित कहानी, करो-सीखो, विवरण, सरल संभाषण आदि चित्रों से परिपूर्ण हों ।
4. गद्य पाठ सरल शब्दों से युक्त हों ।
5. आरंभिक गद्य पाठों में संयुक्ताक्षर कम हों ।
6. परिचित शब्दों का ही गद्य में प्रयोग करें ।
7. प्रत्येक पाठ में 70 से 160 शब्द हों ।
8. अक्षरों की मात्रा / गात्र बड़ा हो ।
9. नीति प्रधान पाठ हों ।
10. पाठ के अंत में सरल भाषा क्रियाकलाप हो ।
11. अर्थ सहित शब्द-भण्डार हो ।

12. पाठ के अंत में पाठ की सीख दूसरे रंग में लिखें ।

13. अभ्यास की क्रियाएँ सामर्थ्य के पूरक हों ।

14. स्वाध्याय का अवसर प्रदान करें ।

15. अभिनय, संवाद, विवरण, कहानी सुनाना, भाषाई खेल आदि का प्रयोग हो ।

16. गद्य पाठ वर्णमय हो ; गद्य में कम से कम 1 से 3, पद्य में 1 से 2 चित्र हों ।

17. कहानियों का चयन करते समय कौतूहल, कल्पना के लिए प्रधानता दें ।

18. अभ्यास में सभी तरह के मूल्यांकन के लिए प्रमुखता दें ।

    (प्रश्नोत्तर विवरण, उदाहरण, संबंध कल्पना, सही गलत की पहचान, जोड़कर लिखना, पद क्रीड़ा, अन्य वर्ग के शब्दों को पहचानना, उदाहरणानुसार लिखना आदि) ।

19. बच्चे की बोल-चाल की भाषा को प्रधानता देकर उसी बोल-चाल की भाषा में लिखने, बात करने के लिए आरंभिक स्तर पर अवसर दें ।

20. मूल्यांकन में केवल पाठ्य-विषय को प्रधानता न देकर सामर्थ्य के आधार पर मूल्यांकन के लिए प्रधानता देनी चाहिए ।

21. पाठ्यवस्तु, अभ्यास और मूल्यांकन, शीघ्र सीखने वाले और सीखने में पिछड़े हुए बच्चों को ध्यान में रखकर रचना करनी चाहिए ।

22. पद्य पाठ, लयबद्ध गीत, शिशु गीत, कथा, कविता गाने के लिए योग्य हों ।

23. पद्य 3-4 चरणों में हो अथवा 16 पंक्तियों का हों ।

24. बच्चों के लिए लिखित कुछ प्रचलित गीतों को चुनना चाहिए ।

* * * * *

कौशलों का विवरण

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* सरल एवं दैनिक जीवन में उपयुक्त जनप्रिय लयबद्ध गीत और कहानियों को सुनने के साथ अर्थ समझ लेना ।	* अक्षरों का ठीक से उच्चारण करना ।	* विरल प्रयुक्त होने वाले अक्षर और संयुक्ताक्षरों को पहचानना ।	* संयुक्ताक्षर, पद और वाक्यों की नकल करना ।
* परिचित परिवेश में संभाषण और संवाद को समझ लेना ।	* गीत और पद्यों को समूह में और अकेले गाना ।	* बड़े और छोटे आकार में छापे गए अक्षरों को पढ़ना ।	* श्रुतलेखन के द्वारा संयुक्ताक्षर और परिचित पदों को लिखना ।
* परिचित परिवेश की सूचना और मौखिक माँग, आदेशों का अर्थ समझ लेना ।	* सरल प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में देना ।	* लयबद्ध पद्य, गीत और सरल कहानियों को जोर से पढ़ना ।	* सूचना के अनुसार सरल वाक्यों को लिखना ।
* पाठ्य की घटनाओं को क्रम से याद कर लेना ।	* परिचित वस्तुओं के बारे में विवरण देना ।	* लगभग 200 पदों को ग्राहण करना ।	* दिए गए शब्दों के आरंभ या अंत में अक्षरों को मिलाकर नये पदों की रचना करना ।
* सुनने के बाद क्या ? कब ? और कैसे ?प्रश्नों के उत्तर देना ।			

सुनना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सरल एवं अप्रचलित लयबद्ध गीत और कहानियों को समझना ।	* सीखने में रुचि पैदा करना । * सुनने के कौशल को क्रमबद्ध बनाना । * अपरिचित लयात्मक पद एवं परिचित पदों को सुनकर ग्रहण करना ।	* प्रचलित शिशु गीत । * अपरिचित लोरी गीत हो । * सरल पदों से युक्त कहानी हो ।	* शिक्षक अभिनय के माध्यम से लोरी गीत सिखायें, बच्चों से गवायें, पूरक प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करें। * कैसट द्वारा अप्रचलित लोरी गीत या कहानियों को सुनाकर तत्पश्चात् प्रश्न पूछकर उत्तर पाना ।	* सुनी हुई कहानी, शिशु गीतों के पूरक प्रश्नों को मौखिक रूप से पूछकर उत्तर पाना । * **अवधि : 19**
* परिचित परिवेशों में संभाषण और संवादों को समझना ।	* एक ही समय में एक से अधिक लोगों की बातचीत सुनने की कुशलता बढ़ाना ।	* परिचित परिवेश (विद्यालय, घर, परिसर) का एक विषय लेकर दो व्यक्तियों के के बीच का संभाषण । (गद्य भाग)	* परिवार, पाठशाला, परिसर से संबंधित संवाद के परिच्छेदों को कैसट द्वारा सुनाना ।	* पूरक प्रश्न । * परिचित परिवेश एवं संवादों को सुनाने के बाद संवाद द्वारा अभिव्यक्त कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* कक्षा में हास्यमय वातावरण का निर्माण करना । * सुने हुए संभाषण को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने का कार्यक्रम आयोजित करना ।	* **अवधि : 25**
* परिचित परिवेशों की सूचनायें, मौखिक माँग, आदेश और प्रश्नों को समझना ।	* परिचित परिवेशों में होनेवाले संभाषण-संवाद, मौखिक माँग या आदेश, प्रश्नों को सुनकर समझने की सामर्थ्य पैदा करना ।	* बच्चों के दैनंदिन जीवन के लिए आवश्यक मार्गदर्शी अंश, अनुशासित जीवन - अनुकरण, आवश्यक सरल सूचना और मौखिक माँग आदि गद्य पाठ में हों ।	* मौखिक सूचनायें देकर बच्चों को उनका अनुपालन करने के लिए प्रेरित करना । * सरल भाषा-खेल खिलाना (पद रचना, अंत्याक्षरी खेल) ।	* बच्चे दैनंदिन कार्य में पहले दी गई सूचनाओं को पालन करने का वीक्षण करना । * **अवधि : 25**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* पाठ्यवस्तु की घटनाओं को क्रमानुसार याद करना और अर्थ समझना ।	* किसी भी घटना को सुनने के बाद उसको क्रमानुसार याद रखने की कुशलता उत्पन्न करना ।	* कम से कम 4-5 घटनाओं की हो । अनूठी रसीली कहानी। उसके अनुकूल कम से कम दो चित्र बड़े और रंगीन हो ।	* कहानी सुनाना, उसके मुख्यांशों को पहचानना और उनको क्रमानुसार सुनाना । * कम से कम दो कहानियाँ हों । * कहानी की घटनाओं को सुनाना ।	* सुनने के बाद घटनाओं को क्रमानुसार कहलाना । * **अवधि : 25**
* सुनने के बाद क्या ? कब ? और कैसे ? -- इन प्रश्नों का उत्तर देना ।	* सुनने के बाद क्या ? कब ? कैसे ? -- इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए समर्थ बनाना ।	* क्या ? कब ? कैसे ? -- इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए अनुकूल शिशुगीत, कविता । * कथन गीत हो । * सरल रूप से गाने योग्य हो ।	* शिशुगीत गाना । * कैसट द्वारा गीत सुनाना। * नाटक के अंशों को सुनाना । बाद में क्यों ? कब ? कैसे ? -- इन प्रश्नों के उत्तर पाना ।	* शिशुगीत, कहानी सुनाना । बाद में क्यों ? कब ? कैसे ? आदि प्रश्नों को पूछकर उत्तर प्राप्त करना । * **अवधि : 19**

बोलना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* अक्षरों का सही उच्चारण करना ।	* वर्णमाला के अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण की क्षमता बढ़ाना ।	* वर्णमाला के स्वर, व्यंजन, योगवाह, अल्प प्राण, महाप्राण एवं आनुनासिक स्वर तथा संयुक्ताक्षर युक्त सरल पद्य ।	* पद्य का सस्वर वाचन कर सुनवाना, पाठों का सस्वर वाचन करना, सब अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण सिखाना । **उदा :** कच्चा पापड़ पक्का पापड़ आदि।	* छात्रों के उच्चारण/ बाचतीत की ओर ध्यान देना, प्रश्न का उत्तर देते समय बच्चों के उच्चरण को ध्यान से सुनना । * **अवधि : 19**
* गीत और पद्यों को समूह में और अकेले में गाना ।	* राग, ताल, लय एवं उच्चारण की स्पष्टता की ओर ध्यान देना । सामूहिक गान का अनुकरण करना ।	* लयबद्ध सरल पदों के शिशुगीत हों । * बच्चों के लिए तैयार की गई कोई एक जनप्रिय शिशुगीत ।	* पद्यों को गाकर सुनाना। * पद्यों को उतार-चढ़ाव के साथ सुनाना । * सामूहिक रूप से पद्यों को गवाना । * पाठ्य-पुस्तक में से कम से कम दो गीतों को स्पष्ट उच्चारण के साथ गवाना ।	* शिशु गीतों को अकेले में और समूह में कहलाना । * **अवधि : 19**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सरल प्रश्नों का उत्तर देना ।	* प्रश्नों का उत्तर संपूर्ण वाक्य में बोलने की क्षमता बढ़ाना ।	* गाने योग्य सरल पदों से युक्त पद्य । (सूर्य, चंद्र और परिसर से संबंधित पद्य)	* पद्य सुनाने के बाद सरल प्रश्नों का उत्तर पूर्ण वाक्यों में कहना । * कहानी सुनाकर उससे संबंधित पूरक प्रश्न का उत्तर उदाहरण देकर पूर्ण वाक्य में बोलना ।	* संपूर्ण उत्तर अपेक्षित प्रश्न पूछकर उत्तर पाना । * **अवधि : 19**
* परिचित वस्तुओं का विवरण पूछना ।	* परिचित वस्तुओं का विवरण पूछने के द्वारा बच्चों के संदेह को दूर करना । * अधिक विवरण संग्रह करने की प्रवृत्ति का विकास करना ।	* (परिचित, वस्तु, पशु, पक्षी) दैनिक जीवन में उपयोगी चीज़ें एवं घरेलू उपयोगी चीज़ें आदि के विवरण सहित गद्य भाग। * प्राणी-पक्षियों से संबद्ध संभाषण का गद्य भाग ।	* चित्र का विवरण देना और समझाना । * परिचित वस्तुओं के बारे में 3-4 वाक्यों में विवरण कहलवाना । * परिचित वस्तुओं के बारे में आशुभाषण करवाना ।	* यह एक निरंतर सामर्थ्य है । अतः बच्चों के बात करते समय उनका निरीक्षण करना । * **अवधि : 25**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* विनम्रतापूर्वक बात करना ।	* गुरुजन, बड़ों से एवं अन्य व्यक्तियों से बात करते समय विनम्रता से बोलने की क्षमता बढ़ाना ।	* विनयपूर्वक बात करने के लिए लोकोक्तियाँ, मुहावरे आदि का प्रयोग करना । * गुरुभक्ति, देशप्रेम, आदर पैदा करने की कहानी तथा तत्संबंधी चर्चा करना ।	* गुरु-शिष्य का संभाषण । * पिता-पुत्र का संभाषण । * नाटकाभिनय करवाना । * आदर सहित बात करने का अवसर प्रदान करना ।	* यह एक निरंतर सामर्थ्य है । बच्चों के बात करते समय उनको प्रोत्साहित करना और भाषा का निरीक्षण करना । * **अवधि : 25**

पढ़ना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* विरल प्रयुक्त अक्षर और संयुक्ताक्षरों को पहचानना ।	* स्पष्ट रूप से पढ़ने के लिए संयुक्ताक्षर को पहचानकर उच्चरण की कुशलता बढ़ाना ।	* विरल एवं संयुक्ताक्षर से बने कम-से-कम दस शब्द हों (गद्य भाग) । जैसे : ई, ऐ, औ, ख, य ऋ, घ, श, ष, ण - इन अक्षरों से बने शब्द । * कोई एक त्योहार से संबंधित सरल विवरण का गद्य पाठ । उदा : दीपावली ।	* पढ़ने का खेल । * भाषा - खेल । * पदों का अंत्याक्षरी । * संयुक्ताक्षरों की पहचान क्ष,त्र,ज्ञ,श्र * आँख मिचौली का खेल और इसमें हिंदी शब्दों का प्रयोग ।	* विरल - उपयोगी अक्षर-संयुक्ताक्षर पढ़वाना । * चमक कार्ड का उपयोग करना । * **अवधि : 25**
* बड़े और छोटे आकार में प्रकाशित अक्षरों को पढ़ना ।	* किसी भी तरह की छापी गयी रचना को पढ़ने की कुशलता बढ़ाना ।	* छोटे और बड़े आकार में छपा गद्य भाग । * प्रसिद्ध अखबार की सचित्र कहानी । * खट्टे अंगूर, टोपीवाला लोमड़ी और कौआ जैसी कोई एक कहानी ।	* बाल कहानी पढ़ाना । * अखबारों के शीर्षकों को पढ़ना और पढ़ाना । * कथा चित्रों के चार्टों का प्रयोग करना ।	* मोटे अक्षरों के शब्दों को पढ़वाना । * अखबारों के शीर्षकों को पढ़वाना । * बड़े और छोटे आकार के छपे अक्षरों को पढ़वाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* प्रकाशित अक्षरों के चमक कार्ड का प्रयोग कर सकते हैं । * बाल-साहित्य पढ़वाना ।	* निमंत्रण पत्र / सचित्र कथाओं को पढ़वाना । * **अवधि : 25**
* लयबद्ध गीत और कहानियों का आदर्श वाचन ।	* स्वरों के ताल मेल, बलाघात आदि से स्पष्ट एवं सही उच्चारण की कुशलता बढ़ाना ।	* छात्रों के पढ़ने योग्य सरल पद, लयात्मक पद एवं ध्यान में रखने के लिए अनुकूल पद्य / गद्य ।	* लयात्मक गीतों को सुनाना । * अभिनय द्वारा गीत सुनवाना । * बाल कहानियाँ पढ़वाना । * कम से कम 2 लयबद्ध गीत, 1 कहानी का सस्वर वाचन करवाना ।	* शिशुगीत तथा पद्यों को राग एवं अभिनय के साथ कहलाना । * गद्य भाग का सस्वर वाचन करवाना । * **अवधि : 19**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* लगभग 2000 शब्दों को ग्रहण करना ।	* शब्द-भंडार को बढ़ाना । * स्वतंत्र रूप से पढ़ना, नये पदों को पहचानना और उनके अर्थग्रहण की क्षमता पैदा करना ।	* सरल क्रियात्मक व रचनात्मक व्याकरण से युक्त पाठ्य भाग । * पाठ में समानार्थक, विरुद्धार्थक, लिंग, वचन लिखने योग्य पदों का चयन करना । * व्यक्ति चित्रण, बाल - प्रतिभा का परिचायक पाठ हो ।	* पाठ पढ़ना । * पदों का अर्थ एवं वाक्य रचना बताना। * वचन बदलना, पदों को मिलाकर नये पदों की रचना। * अंत्याक्षरी खेल । * विरुद्धार्थक पद परिचय ।	* इन सामर्थ्यों का मूल्यांकन करने के लिए प्रत्येक पाठ में पदों को मिलाकर लिखना, बदलना आदि से संबंधित मूल्यांकन करना । * **अवधि : 25**

लिखना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* संयुक्ताक्षर, पद और वाक्यों का अनुकरण करना ।	* स्पष्ट रूप से पढ़कर वाक्यों का अनुकरण करने की कुशलता बढ़ाना ।	* सरल शब्द * वाक्य * वाक्यों में सजातीय संयुक्ताक्षर हों । * उदा : गाँव के मेले के बारे में गद्य पाठ ।	* सुलेखन कार्य । * देखकर लिखना । * रेखाओं में सुलेखन कार्य । * अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर लिखवाना । * चमक कार्ड पर संयुक्ताक्षरों से युक्त शब्द लिखकर उन्हें स्मृति के आधार पर लिखने का अभ्यास कराना ।	* वाक्य एवं संयुक्ताक्षरों का अनुकरण करवाना । * **अवधि : 25**
* श्रुतलेखन के द्वारा संयुक्ताक्षर और परिचित पदों को लिखना ।	* परिचित पद और संयुक्ताक्षरों के श्रुतलेखन की कुशलता बढ़ाना ।	* ज्यादातर परिचित पदों का प्रयोग करना । परिचित वस्तु, प्राणी, पक्षियों के पद, घरेलू वस्तुओं के शब्द (चिड़ियाघर से	* प्रतिदिन कम-से-कम दस पदों का श्रुतलेखन लिखवाना । * परिचित वस्तुओं की सूची बनाना ।	* शब्द-भंडार, पद, शब्दकोश की सहायता से श्रुत-लेखन देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
		संबंधित सरल विवरणात्मक गद्य पाठ) ।	* चित्र देखकर पद रचना करवाना । * पाठ पढ़ने के बाद बिना देखे कम-से-कम दस संयुक्ताक्षर, परिचित पदों को लिखाना ।	* **अवधि : 25**
* सूचना के अनुसार सरल वाक्यों को लिखना ।	* सूचना के अनुसार सरल वाक्यों को स्वतंत्र रूप से लिखने का कौशल बढ़ाना ।	* घर, विद्यालय, परिसर एवं व्यक्तिगत कार्यों की सूचनाएँ । * सरल खेल, सरल क्रियाकलाप की सूचनाएँ । * विद्यालय के बगीचे के बारे में सरल विवरण देना ।	* सरल सूचना के अनुसार सरल वाक्य लिखना । * सरल वाक्य लिखना । * प्रचलित मुहावरों को लिखना । * सोच विचार कर लिखने का क्रिया कलाप सिखाना ।	* सरल सूचना द्वारा सरल वाक्यों को लिखना । * बच्चे सोचकर सरल वाक्य लिखने के लिए परिसर संबंधी (पेड़, फल, फूल) शब्द देकर प्रश्न पूछना । * लिखे हुए उत्तर का परिशीलन करना । * **अवधि : 25**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* दिये गये शब्द के आरंभ या अंत में अक्षर जोड़कर नये पद की रचना करना ।	* पद के आरंभ या अंत में अक्षर जोड़कर या पद जोड़कर अर्थपूर्ण वाक्य रचना करने की कुशलता बढ़ाना ।	* आरंभ या अंत में अक्षर या पद जोड़कर अर्थपूर्ण पद रचना करना । उदा : रस, सरस, समरस । सर, सरस । इस तरह क्रम से गाने योग्य लयात्मक पदों से युक्त पद्य भाग ।	* अंत्याक्षरी पदों का खेल। * लयात्मक पदों की सूची करवाना । * नये पदों की रचना । * पद के आरंभ में अक्षर जोड़कर नया सार्थक पद बनाना ।	* कुछ पदों के साथ आरंभ और अंत में अक्षर या पद जोड़कर अर्थपूर्ण पद रचना करना । * **अवधि : 19**

<u>प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम</u>

कक्षा - 3

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 3

1. पाठ्यक्रम की रूप-रेखा
2. पाठ लिखने की सामान्य सूचनाएँ
3. तीसरी कक्षा के कौशलों की सूची
4. अवधि आबंटन कोष्ठक
5. कौशलाधारित पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम की रूप-रेखा

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम तैयार करते समय राज्य पाठ्यक्रम 2001-2002 और एन.सी.एफ 2005 - इन दोनों की ओर ध्यान दिया गया है ।
2. सामर्थ्यों को प्रस्तुत एन.सी.एफ 2005 के आधार पर परिष्कृत किया गया है ।
3. पाठ्यक्रम को शिशुकेन्द्रित, सामर्थ्याधारित, क्रियाकलाप और आनंददायक प्रसंगानुसार तैयार किया गया है ।
4. बच्चों की भाषा, स्थानीय भाषा को यथावत् अपनाने का मौका दिया गया है ।
5. राष्ट्रीय मूल्यों का, राष्ट्रीय भावैक्यता से संबंधित अंशों का पाठ्यक्रम में समावेश किया गया है ।
6. सरलता से कठिनता की ओर जाने के लिए कई अंश पाठ्यक्रम में जोड़े गये हैं ।
7. पाठ्यक्रम में मूल्यांकन एवं पाठ्य का विस्तार जितना हो सकता है उसका विवरण दिया गया है ।
8. अवधियों को निर्धारित करके उसके अनुसार पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है ।
9. बोल-चाल की भाषा से साहित्यिक भाषा की ओर धीरे-धीरे बच्चों को बढ़ने के लिए अनुकूल पाठ्यक्रम तैयार किया गया है ।
10. बच्चों में राष्ट्र, समाज, वृत्ति, अपेक्षित एवं निरीक्षित मूल्यों के विकास का अवसर दिया गया है ।
11. मित्रता, समय तत्परता, दृढ़ निश्चय आदि मूल्यों को पाठों में प्रस्तावित दिया जाय।

11. भाषाभिवृद्धि के साथ-साथ भाषा-कौशलों को निरुपित कर सीखने के निरीक्षित फल को ध्यान में रखा गया है ।

12. शैक्षिक क्षेत्र के नये-नये संशोधन, प्रयोग और समीकरण के परिणामों को अपनाने का अवसर दिया गया है ।

13. भाषा विज्ञान की नींव पर रूपित किया गया है किंतु प्रांतीय भाषा की विभिन्नता को भी अपनाया गया है ।

14. राष्ट्रीय शिक्षण नीति 1986 में निर्धारित बच्चों के सर्वांगीण व्यक्तित्व-विकास के तत्वों पर आधारित पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है ।

15. शहर और गाँव के शैक्षणिक अंतर को कम करने की ओर ध्यान दिया गया है । बालकों के मनोविकास की भूमिका को भी समानता दी गयी है ।

16. प्रभावकारी ढ़ंग से सीखने में क्रियाकलाप और अन्य समस्त विधाओं को अपनाने के लिए मौका दिया गया है ।

* * *

पाठ लिखने के लिए सामान्य सूचनाएँ

1. पाठ में प्रयुक्त शब्द बच्चों की आयु के अनुकूल हों ।
2. गद्य में लगभग 250 से 320 शब्द हों ।
3. कविता में 4 से 6 पद (अनुच्छेद) हों । 10-16 पंक्तियाँ हों ।
4. पाठ्य-पुस्तक के कुल पृष्ठों की संख्या निर्धारित हों । (प्राक्कथन आदि मिलाकर)
5. पढ़कर समझना, क्रियाकलाप द्वारा समझना - इस विभाग में मात्र शब्द न दें । उनके साथ-साथ उनसे संबंधित एक सरल वाक्य भी दें ।
6. गद्य पाठ में कम-से-कम दो या तीन वर्णरंजित चित्र हों ।
7. कविता के प्रारंभ में कवि-परिचय तथा कविता के अंत में भावार्थ भी लिखें ।
8. रोचक, कौतूहलपूर्ण, कल्पनाप्रधान, अद्‌भुत व सरल कहानियों का चयन करें ।
9. 'अभ्यास' में प्रश्नोत्तर, विवरण, उदाहरण, संबंध स्थापना, चित्रों का विवरण, संदर्भ-विवरण, वाक्य-रचना, सही-गलत की पहचान, जोड़कर लिखना, विजातीय शब्दों को पहचानना, शब्द-खेल, समानार्थक-विलोम-अनेकार्थ आदि से संबंधित विविध प्रश्नों के लिए प्रातिनिधिक मूल्यांकन उपकरणों को महत्व दें ।

10. मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का आवश्यक प्रतिनिधित्व हो ।

11. प्रारंभिक स्तर पर छात्रों को बोलचाल की भाषा में बोलने तथा लिखने का अवसर प्रदान करें ।

12. 'अभ्यास' में सृजनात्मकता तथा मौलिकता पर अधिक बल दें ।

13. स्थानीय लोकोक्ति, पहेलियाँ और कहानियों का संग्रहण तथा संरक्षण करने तथा उनको कक्षा में पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

14. मूल्यांकन करते समय पाठ्यवस्तु के साथ-साथ कौशलाधारित मूल्यांकन पर भी ध्यान दें ।

15. स्वाध्याय के क्रियाकलापों के लिए अवसर निर्मित करें ।

16. विषयवस्तु, अभ्यास और मूल्यांकन-क्रियाकलापों का आयोजन करते समय बच्चों के सीखने की सामर्थ्य को ध्यान में रखें ।
    (त्वरित गति में सीखनेवाले, मंद गति में सीखनेवाले तथा सीखने में पिछड़े बच्चों को ध्यान में रखकर विषयवस्तु का चयन करें ।)

* * *

कौशलाधारित अवधि कोष्ठक

क्र.सं.	क्षेत्र	निर्धारित अवधि
1.	सुनना	87
2.	बोलना	99
3.	पढ़ना	114
4.	लिखना	98
5.	सेतुबंध	57
	कुल अवधि	**455**

पाठ्य-पुस्तक रचनाधारित अवधि कोष्ठक

पाठ्य विभाग	संख्या	निर्धारित अवधि
कौशल-आधारित गद्य पाठ	13	273
कौशल-आधारित पद्य पाठ	07	135
कौशल-आधारित सेतुबंध	—	47
कुल अवधि	--	**455**

गद्य / पद्यों के लिए अवधि आबंटन

क्र. सं.	सोपान	गद्य	पद्य
1.	पूर्व तैयारी	02	01
2.	सीखना	08	06
3.	पुनरावर्तन	05	04
4.	मूल्यांकन	04	03
5.	परिहार बोधन / पुनर्बलन क्रियाकलाप	02	01
	कुल अवधि	**21**	**15**

कौशलों का विवरण

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
कथन-विवरण तथा पहेलियों को सुनने के साथ-साथ उन्हें समझना ।	शुद्ध उच्चरण के साथ बोलना ।	सूचना पट्टों पर दी गई सूचनाओं को पढ़ना ।	अक्षरों तथा शब्दों का सही क्रम, उचित ढंग से लिखना ।
अपरिचित परिवेशों में वार्तालाप और संवादों को समझना ।	प्रभावशाली ढंग से कविता और कहानी को अभिनय के साथ प्रस्तुत करना ।	अपनी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की लिखावट पढ़ना ।	लेखों में आए हुए अपरिचित शब्दों को लिखना ।
खेलों को खेलते समय और सरल क्रियाकलापों को कार्यरूप में लाते वक्त मौखिक सूचनाओं को समझना ।	देखी और सुनी घटनाओं का तथा परिचित वस्तुओं का वर्णन अपने शब्दों में करना ।	सरल कहानी तथा बाल साहित्य संबंधी पुस्तकों को पढ़ना ।	सूचनाओं का अनुसरण करते हुए विवरणात्मक वाक्यों को लिखना ।

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
पाठ में निहित विचारों को ग्रहण करना ।	कक्षा में बच्चों का चर्चा और संवादों में सक्रिय रूप से भाग लेना ।	लगभग 3000 शब्दों को पढ़कर समझना और सीखना ।	दिए गए शब्दों के आधार पर अर्थपूर्ण वाक्यों की रचना करना ।
पाठ सुनने के बाद क्यों प्रश्न का उत्तर देना ।	सामूहिक चर्चा में अपनी बारी आने पर बोलना ।	पाठ पढ़कर केन्द्र विषय को पहचानकर घटनानुक्रम को बताना ।	
		पाठ पढ़ने के बाद कौन ? कब ? कहाँ ? क्यों और क्या आदि प्रश्नों का उत्तर देना ।	

सुनना

कौशल	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* कथन-विवरण तथा पहेलियों को सुनने के साथ-साथ उन्हें समझना ।	* सुनने की क्षमता की वृद्धि करना । * अपने परिवेश में सुने हुए विभिन्न कथन-विवरण तथा पहलियों को सुनना और समझना ।	* ऐसा विषय का चयन हो जो सरल तथा परिचित और बच्चों की जानकारी की व्याप्ति के अनुकूल शब्दों से युक्त हो ।	* नीति प्रधान सरल कथन-आख्यान-गीत । * हास्य और विनोद की कहानियाँ जैसे अकबर और बीरबल की कहानियाँ । * लोक कथाएँ, लोकगीत, सरल बाल गीत और कविताएँ । उपर्युक्त में से किसी एक को पाठ्य के रूप में शामिल करें । * इनको कैसट द्वारा सुनाना ।	* सुने हुए पाठ्य के बारे में प्रश्न पूछते हुए विषय की पुनरुक्ति करवाने के द्वारा मूल्यांकन करना । * विभिन्न कथन तथा पहलियों को सुनने का अवसर प्रदान कर उनके समझने के बारे में स्पष्टीकरण प्राप्त करें ।

कौशल	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* पाठ्येतर कथन गीत, पहेलियाँ और विवरणों को सुनने का अवसर प्रदान करते हुए बच्चों में सुनने की क्षमता को बढ़ाना । * स्पष्ट उच्चारण के साथ सुनाना । * अन्यान्य परिचित वस्तुओं के बारे में शिक्षक विवरण देकर बच्चों को सुनने के लिए प्रेरित करना ।	* कक्षा के विद्यार्थियों से किसी एक के द्वारा पहेली और कथा कहलवाकर बाकी सारे बच्चों को उन्हें सुनने का अवसर प्रदान करना और सुनकर समझने की क्षमता का प्रमाण पाना । * स्थानीय पहेलियाँ एवं कहावतों को प्राधान्यता देना । **अवधि : 25**

कौशल	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* अज्ञात प्रसंगों में वार्तालाप और चर्चाओं को समझना ।	* बच्चों के अपरिचित संदर्भ में सुने हुए वार्तालाप तथा चर्चाओं को ग्रहण करना ।	* सरल वार्तालाप, चर्चाओं से युक्त ऐतिहासिक कथ्यों का गद्य ।	* बच्चों के लिए अनभिज्ञ अपितु सरल संदर्भों से युक्त नाटकों का बच्चों द्वारा मंचन कराना । * अभिनय द्वारा प्रस्तुत नाटकों को अन्य बच्चों को सुनने का अवसर देकर उन्हें समझने के अनूकूल प्रसंगों का निर्माण करना । * शिक्षक स्वयं पात्रों का अभिनय करते हुए बच्चों को सुनने का अवसर प्रदान करना । * बालकों को अपरिचित लेकिन उपलब्ध स्थानों पर ले जाकर वहाँ के वार्तालाप को सुनवाना ।	* पाठ्य में निहित अन्य प्रकार के मूल्यांकन संबंधी उपकरणों का प्रयोग करते हुए वार्तालाप तथा संवादों की जानकारी का मूल्यांकन करना । * रेडियो, टैपरिकार्डर द्वारा वार्तालाप व संवादों को सुनकर समझने की सामर्थ्य का परिशीलन करना । **अवधि : 21**

कौशल	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* खेल खेलने के सरल क्रियाकलापों को लागू करने के संबंध में मौखिक संकेतों को समझना ।	* बच्चे प्रतिदिन के क्रियाकलाप एवं खेल-कूद में बाकी बच्चों द्वारा दिये गये संकेतों को सुनकर, समझकर उसी तरह कार्य निभाना । * सूचनाओं के अनुपालन से प्राप्त होनेवाले लाभ को समझना ।	* सरल सूचनाओं युक्त खेल जो बच्चे की सीमा के बाहर न हो । यथा आँख मिचौनी, चोर-पुलिस का खेल, गाय-बाघ का खेल आदि ।	* पठित खेलों को बच्चों से सूचनानुसार खिलाना । खेल खेलते समय बच्चों को सूचना पालन करने को कहना । * शाला के विविध प्रसंगों में बच्चों को सूचना देकर उनका अनुसरण करते हुए क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करना ।	* पाठ्य संबंधी विषयों के साथ बच्चों के लिए विभिन्न प्रसंगों का निर्माण कर सूचनाएँ देकर उनमें से उनको जितना हो सके उतना पालन करने के संबंध में बताकर स्पष्टीकरण प्राप्त करना । जैसे - गाय-बाघ के खेल के नियमों को समझाते हुए उसी तरह खेलने को बताना ।

कौशल	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* सूचनाओं के क्रम पर ध्यान देते हुए बच्चों से क्रियाकलाप कराना ।	* ग्रामीण खेल-कूद के बारे में बच्चों से एक सरल समीक्षा करवाकर उसकी रिपोर्ट तैयार करवाना । * पाठशाला के विविध संदर्भों में बच्चों के सूचनाओं का पालन करने का निरीक्षण करना । **अवधि : 21**

कौशल	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* चर्चित पाठ्य के प्रधान विषयों को पहचानना।	* एक पाठ्य को सुनने के उपरांत उसके प्रमुख केंद्रबिंदुओं को पहचानना ।	* राष्ट्र नेताओं, ऐतिहासिक विभूतियों व स्मरण योग्य व्यक्तियों के सरल जीवन चित्रणों से युक्त सुबोध कविता पाठ ।	* पाठ्य सुनकर उसके केन्द्र विषय को पहचानने का मौका प्रदान करना ।	* पाठ्य के मुख्य विषय से संबंधित मूल्यांकन के साथ-साथ इतरेतर विषयों को सुनने का अवसर प्रदान कर उसके मुख्य बिंदुओं को पहचानने का संदर्भ निर्मित करना ।
		* पाठ्य सरल तथा नीति प्रधान होना चाहिए । इनमें बोधगम्य शब्द होने चाहिए ।	* वाक्य समूह एवं विवरणात्मक विषयों से युक्त एक पाठ्यांश को सुनने का अवसर निर्मित कर उसके मुख्य बिन्दुओं को पहचानने का तरीका सिखाना ।	* बच्चों की पहचान का परिशीलन कर उन्हें मार्गदर्शन देना । **अवधि : 15**

कौशल	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* पाठ्य श्रवण के पश्चात् क्यों ? प्रश्न का उत्तर देना ।	* एक पाठ्य को सुनकर समझने के उपरांत उत्पन्न होनेवाले ऐसे क्यों हुआ ? वैसे क्यों हुआ ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देना ।	* राष्ट्रीय त्यौहार,राष्ट्रप्रेम एवं भावैक्यता से संबंधित कविताएँ या स्वातंत्र्य दिवस, युद्धभूमि में शहीद वीर सेनानियों से संबंधित गद्य पाठ ।	* प्रारंभ में पाठ्य को सुनने का अवसर देना । * तत्पश्चात् उसके मुख्य तथ्य, प्रमुख घटनाएँ और उनके कारणों को ढूँढ़ने की प्रक्रिया समझाना अथवा उन्हें स्वयं ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करना । * इस दौरान पाठ्य में उद्भव होनेवाले क्यों ? प्रश्नों के लिए उत्तर देने का मौका देना ।	* पाठ्य संबंधी विषयों के साथ-साथ छात्रों को अन्यान्य वृत्तांत बताकर वहाँ क्यों वैसा हुआ, ऐसे होने का क्या कारण है ? आदि प्रश्न पूछकर मूल्यांकन करना । उदा : स्वतंत्र दिवस 15 अगस्त को ही क्यों मनाया जाता है ? * त्यौहारों की तालिका बनाना ।

कौशल	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
				* गाँधीजी हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के नेता नहीं होते तो क्या होता ? * किसी एक विषय को सुनाने के बाद ऐसे अवसरों का निर्माण करें जहाँ छात्र खुद क्यों ? प्रश्न लगा सकें और उनका उत्तर दे सकें ।

बोलना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* स्पष्ट उच्चारा के साथ बोलना ।	* बच्चों को ग्रहित विषयों का शब्दों में प्रयोग करते समय भाषा के विभिन्न स्वर ध्वनियों को समझकर स्पष्ट उच्चारण करना ।	* बच्चे के आस-पास के आम परिवेश से संबंधित पाठ । (जैसे : वन, नदी, गाँव का मेला, बस अड्डा आदि से संबंधित पाठ ।) इन पाठों में सरल शब्दों का समावेश हो । * भाषा की सभी ध्वनियों के साथ पाठ निर्माण होना चाहिए । * बोलना ही विषय-वस्तु का लक्ष्य है ।	* अध्यापकों का वाचन स्पष्ट होना चाहिए । * पाठ को स्पष्ट उच्चारण के साथ वाचन करना तथा स्पष्ट उच्चारण करवाना । उसके पूरक विषय कौन-कौन से हैं ? कौन-सा अक्षर या वर्ण कैसे उच्चरित होता है - इसे बच्चों को समझाना ।	* पाठ के अभ्यास में बोलने का अवसर रहने वाली क्रियाओं को करने का मौका देना । उदा : पाठ पढ़ाना, चीजों के बारे में बोलने का अवसर प्रदान करना । * बच्चों के बीच संप्रेषण का आयोजन करके उसके द्वारा उनका उच्चारण पर ध्यान देकर सही मार्ग-दर्शन देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* बच्चों से उसी तरह अभ्यास कराना । * जीभ के व्यावृत्त से उत्पन्न शब्दों का प्रयोग कर बच्चे के उच्चारण को शुद्ध कराना । * जैसे : पक्षी, पंछी, अक्षी-आँखें । * कृष्ण-किशन लक्ष्मण-लखन आदि ।	* विशेष शब्दों की सूची बनाकर बच्चों से कहलाना । **अवधि : 21**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* उचित स्वरभार तथा आंगिक अभिनय द्वारा समझी हुई सरल कहानियों को सुनाना ।	* समय, प्रसंग, पात्र, स्वभाव से संबंधित ध्वनियों में उतार-चढ़ाव तथा सरल आंगिक अभिनय द्वारा समझी हुई कहानियों का विश्लेषण तथा अर्थपूर्ण, प्रभावपूर्ण ढंग से बोलना ।	* एक विनोद, रोचक विषयों का नाटक । * पाठ्य पात्राभिनय व विवरण के लिए उचित होना चाहिए ।	* अध्यापक सही स्वरभार और सरल अभिनय के द्वारा कहानी सुनाना । * बच्चों को प्रचलित विभिन्न कहानियों को उसी ढंग से सुनाना । * सरल अभिनय अभ्यास में बाधा न हो - इसके बारे में सावधानी बरतने की जानकारी देना । * सरल पात्रों वाले छोटे नाटकों का छात्रों से अभिनय कराके उनके उच्चारण की ओर ध्यान देते हुए उचित मार्गदर्शन देना चाहिए ।	* पाठ्य का बच्चों से वाचन कराना । * कथा, कविता, कव्यों को जैसे है वैसे (यथावत्) उच्चारण करने का अवसर निर्माण करना । * पाठशाला के विभिन्न कार्यक्रम छात्रों के विविध समारोह में स्वतंत्र संचालन, भाषण, नाटकाभिनय आदि का मौका देकर बच्चों के उच्चारण में स्पष्टता, सरल अभिनय की ओर ध्यान देते हुए मूल्यांकन करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* अनौपचारिक रूप से बच्चों के संप्रेषण क्षमता की ओर ध्यान देते हुए उच्चारण संबंधी गलतियों को सुधारना ।	* आंगिक अभिनय के लिए उचित विषयों को चुनकर आशु-भाषण स्पर्धा आयोजित करना । **अवधि : 21**
* परिचित वस्तुओं के बारे में विवरण देना ।	* ज्ञात-परिचित वस्तुओं के बारे में अपने ही ढंग से विवरण देना ।	* बच्चों की परिचित सृजनात्मकता को महत्व देना । वस्तु, पदार्थों से संबंधित पद्य । जैसे : आदर्श शाला, रसोई घर में प्रयुक्त मसाले, वाहन, खाद्य पदार्थ आदि ।	* अध्यापक पाठ की वस्तु पर बल देकर उसका विवरण दें । * किसी विषय का विवरण करते समय ध्यान देने के लिए आवश्यक सुझाव दें । (वस्तु, विषय, रचना, उपयोग आदि ।)	* पाठ संबंधी विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के द्वारा मौखिक विवरण देने के लिए कहना । * आशु भाषण, लघु-निबंध लिखवाकर पढ़ाना । * ज्ञात / परिचित वस्तुओं के बारे में कहलाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* बच्चों को विभिन्न परिचित वस्तुओं का विवरण देकर उन्हें दिखाना । बच्चों को उसको देखकर, सुनकर समझने का सही मार्गदर्शन देना ।	* चर्चा / परिचर्चा का आयोजन करना आदि । **अवधि : 15**
* कक्षा में वार्तालाप में भाग लेना ।	* वार्तालाप को सुनकर, समझकर, तर्कबद्ध रूप से सोचकर वार्तालाप में स्वयं विषय-प्रस्तुतीकरण करना और दूसरों को अपने तर्क पर सहमत कराने के साथ-साथ सरल प्रश्नों को पूछना ।	* पंचतंत्र के विभिन्न पशु-प्राणियों के बीच संवाद युक्त कहानियाँ । * बच्चों की सीमित क्षेत्र के अंदर संवाद हों ।	* पाठ के संवाद को समझने के अनुकूल क्रियाकलापों को आयोजित करना । * वार्तालाप में भाग लेने का अवसर प्रदान करना । * वार्तालाप में भाग लेकर उसमें अपनी राय व्यक्त करने का अवसर देना ।	* पाठ संबंधी सामर्थ्य के ज्ञान को परखने की उचित क्रिया-कलापों का आयोजन करना । * अंत्याक्षरी खेल खिलाना । * पाठशाला में शाला के लोगों या बाहर के अन्य लोगों, कोई प्रसिद्ध व्यक्तियों,

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
			* वार्तालाप में भाग लेते समय अपनी बारी का अनुसरण करने और अपनी बारी के लिए इंतजार करने की आवश्यकता समझाना। * वार्तालाप को सुनकर, उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की सामर्थ्य बढ़ाना ।	किसानों, कर्मचारियों के साथ वार्तालाप का आयोजन करना * वार्तालाप करते वक्त छात्रों की प्रतिक्रियाओं की ओर ध्यान देना । **अवधि : 21**
* समूह में बोलते वक्त बारी का पालन करना ।	* समूह में या संवाद, चर्चा, वार्तालाप के संदर्भ में अपनी बारी के लिए इंतजार करना और बारी का पालन करने के गुण उत्पन्न करना ।	* बच्चों के परिसर की सीमा के अंतर्गत, अलग-अलग दलों / समूहों में बोलते समय बारी का पालन करना ।	* पाठ के वार्तालाप को अध्यापक स्वर के उचित उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ना । * समूह में बोलते वक्त बारी का पालन करने की आवश्यकता के संबंध में बताना ।	* सामर्थ्याधारित तथा पाठाधारित मूल्यांकन करना । * विभिन्न संदर्भ देकर बच्चों को बोलने के लिए कहना । उनके बोलने के ढंग पर ध्यान देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
		* पशु-पात्रों के साथ बारी-बारी से बालने के प्रसंग युक्त कौतूहलपूर्ण कहानी ।	* बच्चों को कोई एक विषय देकर समूह में बोलने का अवसर प्रदान करना । * उसी विषय पर बारी का पालन करते हुए बोलने का सुअवसर देना । * उपर्युक्त दोनों संदर्भ देकर, जो उत्तम है उसको निर्धारित करने का अवसर देना ।	* विविध सहज / स्वाभाविक संदर्भों में बच्चों द्वारा बारी का पालन करने के तरीके का निरीक्षण करना । **अवधि : 21**

पढ़ना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सूचना पट्टों की सरल सूचनाओं को पढ़ना ।	* विभिन्न सूचना पट्टों की सूचनाओं को पढ़कर सकारात्मक प्रतिक्रिया देना ।	* सूचना पट्ट, भित्ति पत्र तथा विज्ञापन और अन्य सूचना युक्त सरल गद्य । * इसमें से स्थानीय परिसर, पर्यावरण, प्रसंगों को अधिक प्रधानता देना ।	* पाठय में प्रयुक्त सूचना पट्ट, विज्ञापन, भित्ति-पत्रों का परिचय कराना । * भित्ति पत्रों, सूचना पट्टों का क्यों उपयोग करते हैं ? उसका फायदा क्या है ? इसके बारे में जानकारी देना । * पाठशाला में विविध संदर्भों में प्रयोग किये जानेवाले विविध भित्ति-पत्रों को पढ़ने का अवसर प्रदान करना ।	* सामर्थ्याधारित मूल्यांकन के लिए विविध प्रसंग देकर वहाँ की सरल सूचनाओं को पढ़ाना । **अवधि : 21**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सहपाठियों की लिखावट पढ़ना ।	* अपनी कक्षा के अन्य बच्चों के हस्तलेखन को पढ़कर समझना ।	* कक्षा के (शाला के अधिक से अधिक अन्य छात्र) बच्चों की लिखावट को पढ़ना । * बच्चों के ही स्वलिखित एक सरल विषय युक्त पत्र ।	* स्वलिखित पत्र को अध्यापक द्वारा स्पष्ट रूप से पढ़ना । * बच्चों को विभिन्न विषय देकर उसका विवरण लिखाना और उनसे ही पढ़वाना । * पढ़ते समय होनेवाली त्रुटियों को ठीक करना ।	* पाठ के संबंध में अभ्यास कराना । * बच्चों की लिखावट को आपस में पढ़ाना। * पठित अंश की नकल करवाकर परिशीलन करना । **अवधि : 21**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सरल कहानी, पुस्तक और बाल-साहित्य को पढ़ना ।	* पढ़ने की आदत अपनाने के साथ पठित अंश का अर्थ-ग्रहण करना ।	* बच्चों की सामर्थ्य के अनुसार सरल कथा-पुस्तकों को पढ़ाना । * कौतूहलपूर्ण पशु-प्राणी पात्र युक्त सरल कहानी। उदा : पंचतंत्र कथाएँ ।	* पाठ्य की कहानी को अध्यापक गण रोचक शैली में बोलें । * ऐसी कहानियाँ जहाँ-जहाँ मिलती हैं, उनकी जानकारी देकर पढ़ने की रुचि की वृद्धि करना । * पुस्तकालय से सरल कहानी पुस्तकें बाँटकर पढ़ाना ।	* पाठ्य का सामर्थ्याधारित मूल्यांकन करना । * सरल कहानी पुस्तक अथवा अन्य पुस्तकों को देकर (उम्र के के आधार पर उपयुक्त) पढ़ने को सूचित करने के पश्चात् पठित अंश का दृढ़ीकरण प्राप्त करना । **अवधि : 21**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* लगभग 3000 शब्दों को पढ़कर ग्रहण करना ।	* बच्चों में इस कक्षा को समाप्त करने से पहले लगभग तीन हज़ार शब्दों को पढ़कर ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना ।	* बच्चों के मानसिक स्तर के आधार पर इससे पहली कक्षा में सीखे गये शब्दों के पूरक नये शब्दों को पढ़कर ग्रहण करना ।	* पाठ्य के नये शब्दों को अर्थ सहित बच्चों को बतलाना । * तीसरी कक्षा में प्राप्त नये शब्दों का पुनर्बलन कराना ।	* नये शब्दों का ग्रहण संबंधी वाक्य बनवाकर अर्थ बतलाकर लिखना । * नये शब्दों को पाठ्य से चुनकर लिखाना तथा परिशीलन करना ।
		* सरल लेकिन ज्ञात शब्दों द्वारा लिखित विवरणात्मक गद्य । उदा : वीर महिलाएँ	* नये शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़कर ग्रहण करने की सामर्थ्य बढ़ाना ।	* नये शब्दों के छोटे-छोटे परचे एक डिब्बे में डालकर एक को उठाकर बोलने के लिए कहना । **अवधि : 21**

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* पाठ्य को पढ़कर प्रधान विषयों को पहचानकर घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से बताना ।	* कुछ घटनाओं के संकेत देने के बाद उनकी क्रमहीनता को पहचानने के साथ-साथ पठित पाठ के प्रधान विषय को पहचानना ।	* कुछ सरल घटनाओं का समावेश करना । एक त्यौहार को मनाने के संबंध में पद्य । * कविता में मुख्यांश का समावेश होना चाहिए ।	* पद्य को समझाकर उसमें वर्णित विभिन्न घटनाओं की क्रमबद्ध सूची कराना । * पाठ्य को पढ़ने के पश्चात् उसमें कौन-से विषय को प्राधान्यता दें- इसके संबंध में सूचित करना ।	* पाठ्य पर आधारित मूल्यांकन । * एक घटना देकर उसमें से विविध विषयों को क्रमबद्ध रूप से जोड़ने के लिए कहना । * घटनाओं को लिखे हुए चमक कार्डों को देकर क्रमबद्ध रूप से जोड़ने को कहना । * अव्यवस्थित पाठ्य बिंदुओं को श्यामपट पर लिखकर उन्हें क्रमानुसार जोड़कर पढ़ाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
				* बच्चे के जीवन में घटित घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से जोड़कर लिखाना । **अवधि : 15**
* पाठ्य को पढ़ने के बाद कौन ? कब ? कहाँ ? क्यों ? और क्या ? जैसे प्रश्नों का उत्तर देना ।	* एक पाठ्य को पढ़ने के बाद उसमें आनेवाले कौन ? कब ? कहाँ ? क्यों ? क्या ? जैसे प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम बनाना । * पाठ्य को पढ़ने के पश्चात् वहाँ की घटनाओं के कारण, संबंध ढूँढना ।	* विभिन्न तरह के प्रश्नों को तैयार करने का अवसर तथा सरल विषय संबंधी एक कविता । * उचित कविता-संकलन से चुनकर दिया जा सकता है ।	* पाठ्य को समझाना । * पाठ्य को पढ़ने का अवसर देकर विषय से संबंधित कौन ? क्या ? और क्यों ? जैसे प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना ।	* पाठ्य को पढ़ने के पश्चात् कौन ? क्या ? कब ? कहाँ ? क्यों ? जैसे प्रश्नों को पूछकर उत्तर पाना । * छात्र के निजी जीवन से सबंधित कौन ? कब ? प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
	* सरल कविताओं को पढ़ने के पश्चात् प्रति-क्रिया व्यक्त करने की क्षमता प्राप्त करना ।			* दस प्रश्न संबंधी खेल खिलाना । * बच्चों के दो दल बनाकर प्रश्नों का खेल खिलाना । * विभिन्न संदर्भों के कार्ड देने के पश्चात् उससे संबंधित प्रश्न पूछना । * चित्र समूह देकर उसमें से चित्र संबंधी प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करना । **अवधि : 21**

लिखना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* वर्ण और शब्दों को सही क्रम और अंतर के साथ लिखना ।	* ठीक आकार के साथ शब्दों को लिखने के सही क्रम का उपयोग करते हुए लिखने का कौशल बढ़ाना ।	* सरल विषय से युक्त स्वतंत्र आंदोलन के नेताओं का जीवन-चित्रण (व्यक्ति चित्र) ।	* पाठ्यक्रम का अर्थ समझाकर वहाँ अक्षर-अक्षर, पद-पद, वाक्य-वाक्य के बीच में अंतर क्यों रहे - यह समझाना । * अक्षर लिखने का सही क्रम समझाना । * नकल कराना ।	* श्रुतलेखन । * वाक्य लिखवाना । * विविध मुख्यांशों को लिखवाना । * अक्षर देकर पद लिखने के लिए बताना । * वाक्य-समूह, पद-समूह लिखवाना । * नकल कराके अक्षर क्रम, पद के बीच का अंतर आदि का निरीक्षण करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* श्रुतलेखन द्वारा अपरिचित शब्दों को लिखना ।	* श्रुतलेखन लिखते समय अपरिचित पदों को पहचानने और लिखने का कौशल बढ़ाना ।	* ज्यादा अपरिचित शब्दों से युक्त सरल लोक गीत ।	* पाठ्यक्रम समझाना । * गीत / पाठ्य के नये शब्दों की सूची बनाना । * शब्दों का अर्थ समझाकर श्रुतलेखन लिखवाना । * बच्चों के ज्ञात सभी पदों की सूची उन्हीं से बनवाना । * आपस में शब्द कहलवाकर, लिखवाकर गलतियों को सुधारना । * चमक कार्ड में शब्द दिखाकर उसका नकल कराना ।	* नये शब्दों का श्रुतलेखन । * शब्दों को बच्चों से परस्पर कहलवाकर लिखवाकर सुधारना । * परिचित और अपरिचित शब्द कहकर लिखाना । * उम्र के अनुसार पदों की सूची तैयार कराना । उनका श्रुतलेखन कार्य कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सूचनाओं का अनुसरण करते हुए विवरणात्मक वाक्यों को लिखना ।	* सूचनाओं को देते वक्त मार्गदर्शी रचनाओं को लिखने के साथ खुद वाक्य लिखने की क्षमता प्रात करना । * वाक्य, लेखन, सूचनाओं की आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त करना ।	* सूचनाओं के साथ विवरणात्मक वाक्यों को लिखने के क्रिया-कलाप । * देहाती कला तथा रोज़गार को परिचित करानेवाले कौतूहल-पूर्ण गद्य पाठ ।	* पाठ्य को समझाना । * पाठ्य की सूचनाओं को समझाना । * सूचनाओं का अनुसरण करते हुए विवरणात्मक वाक्यों को लिखने का तरीका बताना । * सूचनाओं की आवश्यकताओं को ज्ञात कराना ।	* पाठ्य संबंधी मूल्यांकन । * सूचना देते हुए वाक्य-रचना कराना । * एक बच्चे को सूचना देकर बाकी सबको वाक्य लिखने के लिए अनुकूल वातावरण निर्माण करना । * एक सरल निबंध लिखाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* दिये गये शब्दों के आधार पर अर्थ पूर्ण वाक्यों की रचना ।	* शब्दों के बीच के संबंध को जानकर अर्थपूर्ण वाक्य रचना करना ।	* एक सरल वाक्य युक्त चित्र कथा । * इसमें जानवार ही पात्रधारी हों । * उन पात्रों का संवाद भी हो ।	* कविताओं को समझाना । * पाठ्य में आनेवाले पदों का इस्तेमाल करते हुए अर्थपूर्ण वाक्य रचना करना । * वाक्य कैसे प्रारंभ होते हैं ? कैसे समाप्त होते हैं - इस के बारे में समझाना ।	* पाठ्याधारित मूल्यांकन । * पदों को लिखवाकर नकल कराना । * अपूर्ण वाक्य देकर पूर्ण करने का क्रियाकलाप कराना ।

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 4

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 4

1. पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा
2. पाठ लिखने के लिए सामान्य सूचनाएँ
3. अवधि आबंटन कोष्ठक
4. कौशलाधारित पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम की रूप-रेखा

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम तैयार करते समय राज्य पाठ्यक्रम 2001-2002 और एन.सी.एफ 2005 - इन दोनों की ओर ध्यान दिया गया है ।
2. सामर्थ्यों को प्रस्तुत एन.सी.एफ 2005 के आधार पर परिष्कृत किया गया है ।
3. पाठ्यक्रम को शिशुकेन्द्रित, सामर्थ्याधारित, क्रियाकलाप और आनंददायक प्रसंगानुसार तैयार किया गया है ।
4. बच्चों की भाषा, स्थानीय भाषा को यथावत् अपनाने का मौका दिया गया है ।
5. राष्ट्रीय मूल्यों का, राष्ट्रीय भावैक्यता से संबंधित अंशों का पाठ्यक्रम में समावेश किया गया है ।
6. सरलता से कठिनता की ओर जाने के लिए कई अंश पाठ्यक्रम में जोड़े गये हैं ।
7. पाठ्यक्रम में मूल्यांकन एवं पाठ्य का विस्तार जितना हो सकता है उसका विवरण दिया गया है ।
8. अवधियों को निर्धारित करके उसके अनुसार पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है ।
9. बोल-चाल की भाषा से साहित्यिक भाषा की ओर धीरे-धीरे बच्चों को बढ़ने के लिए अनुकूल पाठ्यक्रम तैयार किया गया है ।
10. बच्चों में राष्ट्र, समाज, वृत्ति, अपेक्षित एवं निरीक्षित मूल्यों के विकास का अवसर दिया गया है ।
11. निष्ठा, क्षमाभाव, सहनशीलता, सच्चाई, स्वच्छता आदि मूल्यों को पाठ्य रचना में समाविष्ट किया जाय ।

11. भाषाभिवृद्धि के साथ-साथ भाषा-कौशलों को निरुपित कर सीखने के निरीक्षित फल को ध्यान में रखा गया है ।

12. शैक्षिक क्षेत्र के नये-नये संशोधन, प्रयोग और समीकरण के परिणामों को अपनाने का अवसर दिया गया है ।

13. भाषा विज्ञान की नींव पर रूपित किया गया है किंतु प्रांतीय भाषा की विभिन्नता को भी अपनाया गया है ।

14. राष्ट्रीय शिक्षण नीति 1986 में निर्धारित बच्चों के सर्वांगीण व्यक्तित्व-विकास के तत्वों पर आधारित पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है ।

15. शहर और गाँव के शैक्षणिक अंतर को कम करने की ओर ध्यान दिया गया है । बालकों के मनोविकास की भूमिका को भी समानता दी गयी है ।

16. प्रभावकारी ढ़ंग से सीखने में क्रियाकलाप और अन्य समस्त विधाओं को अपनाने के लिए मौका दिया गया है ।

* * *

पाठ लिखने के लिए सामान्य सूचनाएँ

1. पाठ में प्रयुक्त शब्द बच्चों की आयु के अनुकूल हों ।
2. गद्य में लगभग 250 से 320 शब्द हों ।
3. कविता में 4 से 6 पद (अनुच्छेद) हों । 10-16 पंक्तियाँ हों ।
4. पाठ्य-पुस्तक के कुल पृष्ठों की संख्या निर्धारित हों । (प्राक्कथन आदि मिलाकर)
5. पढ़कर समझना, क्रियाकलाप द्वारा समझना - इस विभाग में मात्र शब्द न दें । उनके साथ-साथ उनसे संबंधित एक सरल वाक्य भी दें ।
6. गद्य पाठ में कम-से-कम दो या तीन वर्णरंजित चित्र हों ।
7. कविता के प्रारंभ में कवि-परिचय तथा कविता के अंत में भावार्थ भी लिखें ।
8. रोचक, कौतूहलपूर्ण, कल्पनाप्रधान, अद्‌भुत व सरल कहानियों का चयन करें ।
9. 'अभ्यास' में प्रश्नोत्तर, विवरण, उदाहरण, संबंध स्थापना, चित्रों का विवरण, संदर्भ-विवरण, वाक्य-रचना, सही-गलत की पहचान, जोड़कर लिखना, विजातीय शब्दों को पहचानना, शब्द-खेल, समानार्थक-विलोम-अनेकार्थ आदि से संबंधित विविध प्रश्नों के लिए प्रातिनिधिक मूल्यांकन उपकरणों को महत्व दें ।

10. मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का आवश्यक प्रतिनिधित्व हो ।

11. प्रारंभिक स्तर पर छात्रों को बोलचाल की भाषा में बोलने तथा लिखने का अवसर प्रदान करें ।

12. 'अभ्यास' में सृजनात्मकता तथा मौलिकता पर अधिक बल दें ।

13. स्थानीय लोकोक्ति, पहेलियाँ और कहानियों का संग्रहण तथा संरक्षण करने तथा उनको कक्षा में पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

14. मूल्यांकन करते समय पाठ्यवस्तु के साथ-साथ कौशलाधारित मूल्यांकन पर भी ध्यान दें ।

15. स्वाध्याय के क्रियाकलापों के लिए अवसर निर्मित करें ।

16. विषयवस्तु, अभ्यास और मूल्यांकन-क्रियाकलापों का आयोजन करते समय बच्चों के सीखने की सामर्थ्य को ध्यान में रखें ।

    (त्वरित गति में सीखनेवाले, मंद गति में सीखनेवाले तथा सीखने में पिछड़े बच्चों को ध्यान में रखकर विषयवस्तु का चयन करें ।)

* * * *

अवधि की तालिका

	क्षेत्र	निश्चित अवधि
1.	सुनना	87
2.	बोलना	99
3.	पढ़ना	114
4.	लिखना	78
5.	सेतुबंध	42
	कुल	**420**

पाठ्य-पुस्तक रचनाधारित अवधि तालिका

पाठ्य विभाग	संख्या	निर्दिष्ट अवधि
सामर्थ्याधारित गद्य	13	273
सामर्थ्याधरित पद्य	07	105
सेतुबंध		42
कुल		**420**

प्रत्येक गद्य-पद्य शिक्षण के लिए आवश्यक अवधि आबंटन

स्तर	गद्य	पद्य
पूर्व तैयारी	02	01
शिक्षणपूरक स्तर	08	06
पुनरावर्तन	05	04
मूल्यांकन	04	03
परिहार बोधन (पुनर्बलन, क्रियाकलाप)	02	01
कुल	**21**	**15**

सुनना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* परिचित परिवेश के सरल भाषणों को सुनने के साथ अर्थग्रहण करना ।	* भाषण को सुनकर अर्थग्रहण करना । * कौन ? कब ? किस विषय के संबंध में भाषण दिये हैं ? यह जानने का कौशल बढ़ाना ।	* शाला में मनाया गया स्वतंत्र दिवस से संबंधित गद्य पाठ । * समारोह के परिवेश में भाषण देने के लिए योग्य गद्य रचना करना । * मुख्य शिक्षक/शिक्षक/अथितिगण के भाषण के जैसे हो ।	* पाठ में दिये गये स्वतंत्र दिवस संबंधी भाषण को सुनने का अवसर देना .। * पाठशाला में मनाये गये राष्ट्रीय त्योहारों के बारे में भाषण देना । * बाल दिवस, पर्यटन, पर्यावरण दिवस के बारे में दिये गये भाषणों के कैसेटों का उपयोग कर छात्रों को सुनने का अवसर देना । * आशुभाषण का आयोजन करना ।	* पाठ्यपुस्तक में दिये गये स्वतंत्र दिवस के भाषण के बारे में प्रश्न पूछना और उत्तर पाना । * भाषण का सारांश कहलाना। * अन्य क्रियाएँ -- बाल दिवस, पर्यावरण दिवस के बारे में कैसेट के भाषण संबंधी प्रश्न पूछना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* अपरिचित परिवेश में वार्तालाप को समझना ।	* एक ही समय पर दो या तीन लोगों के वार्तालाप को सुनने के साथ-साथ अर्थग्रहण करना । * वार्तालाप में कौन भाग ले रहे हैं - यह जानना । * वार्तालाप की आवश्यकता के बारे में समझना ।	* बैंक, बस अड्डा, डाक घर अथवा रेलवे स्टेशन में यात्रा पर निकले यात्रियों के साथ किये ऐतिहासिक स्थानों के संभाषण के बारे में वार्तालाप युक्त गद्य पाठ ।	* पाठ में दिये गये, रेलवे स्टेशन से निकले यात्रियों के साथ किये ऐतिहासिक स्थानों के बारे में वार्तालाप युक्त गद्य को पढ़ाकर, सुनने के साथ अर्थग्रहण करने का अवसर देना । * वार्तालाप के प्रधानांशों को समझाना । * मेले की विशेषताओं के बारे में छात्रों से वार्तालाप का आयोजन करना और अन्य छात्रों को सुनने का अवसर देना ।	* पाठ्य-पुस्तक में दिये गये ऐतिहासिक स्थान के वार्तालाप पाठ के बारे में प्रश्न पूछना और उत्तर पाना । * वार्तालाप में किसने भाग लिया ? इसका निरीक्षण करना । वार्तालाप के आधार पर मौखिक प्रश्न पूछना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* खेल-खेलना तथा सरल क्रियाओं को कार्यगत करने की मौखिक सूचनाओं की तालिका को समझ पाना ।	* सूचनाओं के अनुकरण की आवश्यकताओं को समझना । * दी गयी सूचनाओं का पालन कर उद्दिष्ट क्रियाकलापों को कार्यगत करना ।	* पाठाशाला का वार्षिकोत्सव मनाने के लिए तैयारियाँ - जैसे - प्रांगण की स्वच्छता, वैयक्तिक सफाई, कार्यक्रम में भाग लेने हेतु सूचनाओं से युक्त गद्य पाठ ।	* पाठ में शाला-वार्षिकोत्सव की तैयारी के संबंध में दी गयी सूचनाओं को पढ़कर छात्रों को समझाना । * शाला प्रांगण व वैयक्तिक सफाई के बारे में दी गयी सूचनाओं की तालिका देकर क्रियाकलापों के निर्वाहण पर ध्यान देना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन कर जानना कि बच्चों ने कितना सीखा है ? * ध्यान देना कि सूचनाओं का पालन कहाँ तक हुआ है ?
* पाठ में अभिव्यक्त विचारों या घटनाओं को समझना ।	* घटनानुक्रम को ग्रहण करना । * सुनने के बाद उन घटित घटनाओं के कारणों को पहचानना ।	* छात्र पद्य/गद्य को सुनना । * घटित घटनाओं के कारण समझना ।	* कविता का वाचन करना और छात्रों को सुनाना । * कविता में व्यक्त विचारों तथा आशय का वर्णन करना । * विचार अभिव्यक्ति के लिए प्रेरणा देना ।	* तत्संबंधी पद्य/गद्य के बारे में प्रश्न करना और उत्तर पाना । * अन्य कविताओं को सुनकर समझने का अवसर देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सुनने के बाद क्यों ? कैसे ? -- प्रश्नों का उत्तर देना ।	* सुनने के बाद क्यों ? कैसे ? -- प्रश्नों का विवरणात्मक उत्तर देने की क्षमता प्राप्त करना । * सरल विचारधाराओं पर ध्यान देकर (सुनकर) उत्तर देना ।	* किसी घटना को घटित होने के पीछे जो कारण होते हैं, उनको समझना ।	* अध्यापक पद्य का वाचन करें । * छात्रों से अनुकरण वाचन कराना । * कविता के प्रधानांशों का अर्थ बताना । * कौशलाधारित कुछ प्रश्न पूछना । * संवाद में भाग लेने के लिए बच्चों को प्रेरित करना ।	* कविता की कुछ पंक्तियाँ कहलाना । * क्यों ? कैसे ? - प्रश्न पूछकर उत्तर पाना । * कौशल की प्राप्ति हुई है या नहीं ? - यह जानना । * प्रश्नों का सही उत्तर दिये हैं या नहीं, इस पर ध्यान देना ।

बोलना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* स्पष्टता के साथ अबाधित रूप से बोलना ।	* अबाधित रूप से बोलने का कौशल बढ़ाना । * बोलने के महत्व को समझना । * बोलने में होनेवाले दोषों को पहचानकर सुधार करना ।	* अपनी शाला, अपने घर और परिवार के वातावरणा-नुकूल भाषा का प्रयोग करना । * सुना, पढ़ा या अपने अनुभव के विषयों को अबाधित रूप से बोलना । * सामाजिक नाटक दिया जा सकता है ।	* बोलने के महत्व को समझाना । * बोलने के कुछ लक्षणों को समझाना । * अध्यापक पाठ्य-पुस्तक के नाटक को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ें तथा पढ़ायें । * छात्रों से नाटक के कुछ पात्रों का अभिनय कराना । * स्वयं को प्राणी-पक्षी समझकर बोलने के लिए कहना ।	* पाठ्य के प्रमुख अंशों को कहलाना । * पाठ के प्रमुख पात्रों का अभिनय कराना । * पात्रों के संवाद को लिखाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* कंठस्थ करके बोलना ।	* कंठस्थ विषय को स्पष्टता से बोलने का कौशल बढ़ाना ।	* लगभग 05-20 पंक्तियाँ कंठस्थ कर बोलना । * कोई सरल कविता । * प्राचीन दोहों में पंक्तियों की संख्या सीमित हो ।	* अध्यापक पद्य को अभिनय के साथ लयबद्धता से वाचन करें । * छात्रों द्वारा अनुकरण-वाचन करायें । * छात्रों को कोई घटना सुनाकर उनसे फिर कहलाना ।	* प्रत्येक छात्र से पद्य का वाचन कराना । * पद्य के प्रमुख अंशों को पहचानने के लिए कहना । * कविता का सारांश प्रश्नों द्वारा पाना ।
* अपरिचित वस्तुओं के बारे में विवरण देना ।	* सामग्री-संकलन का कौशल बढ़ाना । * संकलित सामग्री का विवरण उचित रूप से देने का कौशल बढ़ाना ।	* अपने आस-पास की वस्तुओं के बारे में विवरण देना । * दूरदर्शन, रेडियो, दूरभाष आदि के उपयोगों के बारे में विवरण देना । विवरण युक्त गद्य पाठ । (जन संचार माध्यम)	* पाठ में दी गयी वस्तुओं को दर्शाकर उनके बारे में पढ़कर सुनाना । * उन वस्तुओं को छूने का अवसर प्रदान करना । * उन वस्तुओं के बारे में विवरण देने के लिए कहना ।	* पाठाधारित प्रश्नों का प्रयोग करके उत्तर पाना । * अन्य वस्तुओं के उपयोग के बारे में विवरण कहलाना । * परियोजना करवाना।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* कक्षा में आयोजित सरल वार्तालाप तथा चर्चा में भाग लेना ।	* वार्तालाप तथा चर्चा करने का कौशल बढ़ाना । * वार्तालाप तथा चर्चा में भाग लेने की क्षमता बढ़ाना ।	* बागबानी के बारे में अध्यापक छात्रों के साथ चर्चा करने का पाठ ।	* पाठ को पढ़कर अर्थ समझाना । * किसी एक विषय पर चर्चा का आयोजन करना । * डाक घर, बैंक आदि के बारे में छात्रों द्वारा संवाद का आयोजन करना ।	* पाठाधारित प्रश्नों को पूछकर उत्तर पाना । * कोई एक विषय देकर छात्रों द्वारा चर्चा कराना ।
* बोलचाल की भाषा और साहित्यिक भाषा का अंतर समझना ।	* बोलचाल की भाषा और साहित्यिक भाषा के अंतर को समझने का कौशल बढ़ाना । * साहित्यिक भाषा के लक्षणों से अवगत होना ।	* बोलचाल की भाषा तथा साहित्यिक भाषा युक्त कविता पाठ । * लोकगीत या कोई सरल कविता ।	* पद्य का अभिनय के साथ लयबद्धता से वाचन करना । * छात्रों द्वारा वाचन कराना । * बोलचाल की भाषा के शब्दों को ढूँढ़ना । * साहित्यिक भाषा के शब्दों को ढूँढ़ना ।	* पाठाधारित प्रश्नों को पूछकर उत्तर पाना । * बोलचाल की भाषा के शब्दों के लिए साहित्यिक भाषा के शब्दों को लिखाना ।

पढ़ना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* चित्रकथा और विज्ञापनों को पढ़ना ।	* पढ़ने की क्षमता का विकास करना । * पढ़ने से मनोरंजन पाने के कौशल का विकास करना । * चित्रों की सहायता से पढ़ने की क्षमता का विकास करना ।	* चित्र सहित बाल-कथा । * चार-छः चित्रों से युक्त हास्य चित्र-कथा ।	* चित्रकथा को पढ़कर समझाना । * विविध पत्रिकाओं से प्रकाशित चित्र-कथाओं को बच्चों से पढ़ाना । * विज्ञापनों को पढ़ने के लिए प्रेरणा देना ।	* पाठाधारित प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन करना । * पाठ का हास्य-प्रसंग कहलाना । * विज्ञापनों को पढ़ाना ।
* अपने और अन्य लोगों के द्वारा लिखित पत्रों को पढ़ना ।	* हस्तलिखित लेखों को पढ़ने की क्षमता को विकसित कराना । * हस्तलिखित उत्तम लेखनों के लक्षण समझाना । * उत्तम हस्तलेखन का अभ्यास कराना ।	* चिड़ियाघर के संबंध में अपने द्वारा लिखित पत्रों को अपने मित्र को देना । (चिड़ियाघर के संबंध में हस्तलिखित लेख) * एक पन्ने का हो ।	* पाठ में दिया गया पत्र पढ़ना तथा समझाना । * छात्रों द्वारा हस्तलेखन का अभ्यास कराना । * प्रसिद्ध कवियों के हस्तलेखन को पढ़ाना । * सहपाठियों द्वारा लिखित पत्रों को एक-दूसरे से पढ़ाना ।	* पाठाधारित प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन करना । * हस्तलेखन का अभ्यास कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* पत्र पत्रिकाओं को पढ़ना ।	* पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विषयों को पढ़ने की क्षमता का विकास करना । * पढ़ने की सामग्री का संकलन करने की क्षमता को विकसित करना ।	* पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित बालगीतों को पढ़ना । * 14-16 पंक्तियाँ हों । * शिशुगीत / कविता ।	* अध्यापक बालगीत का अभिनय के साथ वाचन करना । * छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन कराना ।	* पाठाधारित प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन करना । * कविता का सारांश कहलाना । * कविता के प्रमुख अंशों को कहलाना ।
* लगभग 4000 शब्दों को पढ़कर सीखना ।	* शब्द-भण्डार की वृद्धि करना । * कम-से-कम चार हज़ार शब्दों का ग्रहण करना । * नये-नये शब्दों को पढ़कर सीखना ।	* नये शब्दों से युक्त, ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित पाठ । * विजातीय, संयुक्ताक्षर युक्त शब्दों का प्रयोग हो ।	* पाठ पढ़कर अर्थ समझाना । * नये शब्दों के समनार्थक शब्द ढूँढ़कर बताना । * लोकोक्ति, मुहावरों का संग्रह कराना और चार्ट बनाना ।	* पाठाधारित प्रश्न पूछकर उत्तर पाना । * नये शब्दों की सूची बनाना । * बच्चों द्वारा संग्रहीत लोकोक्ति और मुहावरों का अर्थ पूछना ।

लिखना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* स्पष्टता से लिखना ।	* लेखन - कौशल का विकास करना । * अपने लेखन-कौशल की गलतियों को पहचानना ।	* भाषाभिमान युक्त कोई एक पद्य । * लगभग 16-20 पंक्तियाँ हों । * सरल हिन्दी भाषा में हों ।	* पद्य भाग का रागात्मक ढंग से वाचन करना । * पद्य की प्रमुख बातों को श्यामपट पर लिखना तथा अनुलेखन कराना । * क्ष, त्र, ज्ञ - इन विशेष अक्षरों की रचना के बारे में कहना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * छात्रों द्वारा लिखित लेखन को छात्रों द्वारा ही जाँच करायें । * उनका निरीक्षण करना ।
* लेखन चिह्नों का प्रयोग श्रुतलेखन में लिखना ।	* लेखन चिह्नों का प्रयोग संदर्भानुसार करने का कौशल बढ़ाना । * लेखन चिह्नों को पहचानना । * श्रुतलेखन की क्षमता का विकास करना ।	* लेखन चिह्नों से युक्त एक गद्य पाठ । उदा : एक पौराणिक नाटक	* नाटक का वाचन करना । * बच्चों से नाटक पढ़ाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * नाटक के कुछ पात्रों को छात्रों द्वारा अभिनय कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* लेखन चिह्नों के साथ सूचनानुसार अनुच्छेदों को लिखना ।	* अनुच्छेद लेखन का कौशल बढ़ाना ।	* किसी बालक की वीरतापूर्ण घटना । * साहस प्रधान पाठ ।	* पाठ को लेखन चिह्नों के अनुसार पढ़ना । * उसी तरह छात्रों से पढ़ाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * परिच्छेद लिखने का अभ्यास कराना ।
* सरल क्रियात्मक नियमों का अर्थग्रहण कर वाक्यों की रचना करना ।	* वर्णों और शब्दों के बीच के संबंध को और अंतर को पहचानना । * संज्ञा तथा क्रियापदों का अर्थग्रहण करना ।	* देशाभिमान को अभिव्यक्त करनेवाला एक गद्य पाठ ।	* पाठ को पढ़ना । * शिक्षक वाक्य-रचना का अभ्यास कराना । उदा : सरला दूध पीती है ।	* पाठाधारित मूल्यांकन करना । * वाक्य रचना कराना । * वाक्यों को विभाजित कराना ।

प्रथम भाषा हिंदी

कक्षा - 5, 6 एवं 7

प्रस्तावना

1. भाषा, अभिव्यक्ति का वह सरलतम साधन है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भावों को प्रकट करता है और दूसरों के भावों को समझता है । पाठशाला आने से बहुत पहले से ही बच्चे अपनी मातृभाषा में योग्यता प्राप्त करना आरंभ करते हैं । इस कारण आशा की जाती है कि पहली से चौथी कक्षाओं में औपचारिक भाषा-शिक्षण द्वारा बच्चों में निम्नलिखित भाषाई योग्यताओं का कुछ हद तक विकास हो ।

* बोलने में अपनी मातृभाषा की ध्वनियों का शुद्ध एवं स्पष्टता, प्रवाहमयता के साथ प्रयोग करने की कुछ योग्यता ।
* हिंदी के सभी लिपि-संकेतों को तथा उनसे बनने वाले जाने-पहचाने शब्दों, वाक्यों एवं छोटी-छोटी कहानियों और कविताओं को पढ़ने की योग्यता ।
* मातृभाषा के परिचित शब्दों तथा कुछ वाक्यों को लिखने की योग्यता ।

2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम पाँचवीं से सातवीं कक्षाओं के बालकों में उपरोक्त योग्यताओं को परिपक्व बनाने की दृष्टि से निर्माण किया गया है । यदि पाँचवीं कक्षा के प्रारंभ में छात्रों में कुछ भाषाई कमियाँ रह गयी हों तो निदानात्मक अध्यापन द्वारा उन कमियों को दूर करना आवश्यक होगा, क्योंकि भाषा की आधारभूत कुशलताओं के अभाव में भाषाई योग्यताएँ प्राप्त करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य होगा ।

3. यों तो भाषा के अध्यापक भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की जानकारी रखते हैं । फिर भी, उनकी सुविधा के लिए उन उद्देश्यों का विवरण नीचे दिया गया है ।

उद्देश्य

* बोध के साथ सुनने और पढ़ने की योग्यताओं का विकास करना ।
* मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास करना ।
* शुद्ध उच्चारण करने में सक्षम बनाना ।
* लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास करना ।
* लिखने की यांत्रिक कुशलताओं में क्षमता प्राप्त करना ।
* शब्द-भंडार की वृद्धि करना ।
* ज्ञानवर्धन एवं आनंद-प्राप्ति के लिए स्वतंत्र रूप से पढ़ने की योग्यता का विकास करना ।
* निजी अनुभवों के आधार पर सृजनशील भाषा का इस्तेमाल करना ।
* छात्रों के मानसिक क्षितिज का विस्तार और उनकी अनुभूति को तीव्र बनाना ।
* सौन्दर्य-प्रियता, मौलिकता और सृजनात्मकता का विकास करना ।
* चिंतन की योग्यता का विकास करना ।
* पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त अभिनय, गीत, संवाद, परिचर्चा, अंत्याक्षरी, घटना-वर्णन, प्रश्नोत्तर, भाषण, खेल-कूद आदि में रुचि उत्पन्न करना ।
* महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम, सहगामी क्रियाकलापों के आधार पर भाषा और साहित्य को समझना ।

* * *

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 5

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 5

1. पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा
2. अवधि आबंटन कोष्ठक
3. सामर्थ्यों का विवरण
4. कौशलाधारित पाठ्यक्रम

1.	शब्द-भण्डार	-	1200 अवधि - 245	
			[चौथी कक्षा के पाठ्य-पुस्तक के आधार पर ।]	
2.	सेतुबंध-शिक्षण	-	भाषा कौशल के विकास के लिए सरल भाषा द्वारा परिवेश का परिचय कराना ।	
3.	शिक्षण-युक्तियाँ	-	(i) वार्तालाप (ii) जीवनी-परिचय (iii) कविताओं का स्वतंत्र लेखन	
4.	पाठों की संख्या	-	11 पाठ	
5.	पद्य	-	06	
6.	परियोजना	-	01	
7.	पाठ-चयन	-	राष्ट्रीय व्यक्तित्व	- 01
			त्योहार	- 01
			कहानी	- 02
			ग्रामोद्योग	- 01
			खेल-कूद	- 01
			परिवार	- 01
			समाज सेवा	- 01
			विज्ञान	- 01
			पर्यावरण	- 01
			साहस संबंधी वृत्तांत	- 01

8. पद्य-चयन - दोहे - कबीर - 02 (कंठस्थ)

तुलसी - 02 (कंठस्थ)

आधुनिक-लयबद्ध - राष्ट्रीयता आदि पर - 2 (कंठस्थ-1)

सूचना : पाठ तथा पद्यों का चयन छात्रों की आयु को ध्यान में रखें । रोचकता एवं राष्ट्रीय भावात्मक एकता को भी ध्यान में रखें ।

व्याकरण

* तरह-तरह के पाठों के संदर्भ में और कक्षा के अनुरूप क्रिया, काल और कारक चिह्नों की पहचान ।
* शब्दों के संदर्भ में लिंग का प्रयोग ।

  अभ्यास-प्रश्नों के ही माध्यम से बच्चों को व्याकरण सिखाया जाए । इस प्रकार के अभ्यास दिए जाए, जिनसे बच्चे सहज रूप से संज्ञा, सर्वनाम और शब्द-व्यवस्था (पर्याय और विलोम) की जानकारी प्राप्त करें । उदा : पर्यायवाची शब्दों का अभ्यास कराना हो तो तत्संबंधी प्रश्न दिया जा सकता है ।
* उचित लेखन चिह्नों का प्रयोग करना ।
* मुहावरों के विस्तृत रूप, लोकोक्तियाँ, रीति-रिवाजों का प्रयोग ।
* समानार्थक, विविधार्थक, विरुद्धार्थक, भिन्नार्थक-प्रयोग युक्त घटनाओं को सुनकर लिखना ।

* * *

पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम तैयार करते समय राज्य पाठ्यक्रम 2001-02 और एन.सी.एफ. - 2005, इन दोनों को ध्यान में रखा गया है ।
2. पूर्वनिर्धारित सामर्थ्यों को प्रस्तुत एन.सी.एफ 2005 के अनुरूप परिष्कृत किया गया है ।
3. पाठ्यक्रम को शिशुकेंद्रित, सामर्थ्याधारित, क्रियाकलाप और आनंददायक संदर्भानुसार बनाया गया है ।
4. बच्चे की मातृभाषा, स्थानीय / प्रादेशिक भाषा को यथावत् अपनाने हेतु अवसर दिया गया है ।
5. बच्चों द्वारा विद्यालय में प्राप्त ज्ञान को निज-जीवन में अपनाने की अनुकूलता दी गयी है ।
6. राष्ट्रीय मूल्यों, राष्ट्रीय एकता से संबंधित अंशों का पाठ्यक्रम में समावेश किया गया है ।
7. सरलता से कठिनता की ओर बढ़ने के क्रम में पाठ्यक्रम को बनाया गया है ।
8. मूल्यांकन व पाठ्य विस्तार को पाठ्यक्रम में ही सूचित किया गया है ।
9. छात्र बोलचाल की भाषा से क्रमशः साहित्यिक भाषा की ओर बढ़ें - इस तरह पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है ।
10. अवधि का निर्धारण करके उनके अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण किया गया है ।
11. छात्रों में राष्ट्र, समाज, व्यवसायोपयोगी व जीवन मूल्यों को बढ़ाने का अवसर दिया गया है ।
12. भाषा-अभिवृद्धि के साथ भाषा-कौशलों को सही ढंग से रूपित करके सीखने के निरीक्षित परिणामों को ध्यान में रखा गया है ।
13. कृतज्ञता, आत्मप्रतिष्ठा, धैर्य, समय तत्परता, दृढ़ निश्चय, धैर्य आदि मूल्यों को पाठ्य रचना में अभिव्यक्त किया जाए ।

13. शैक्षणिक क्षेत्र के नये-नये संशोधन, प्रयोग तथा समीकरण के परिणामों को ग्रहण करने का अवसर दिया गया है ।

14. भाषा विज्ञान के धरातल पर रूपित होते हुए भी प्रादेशिक भाषा की विविधता को समाहित किया गया है ।

15. राष्ट्रीय शिक्षण नीति 1986 में सूचित विद्यार्थियों के सर्वतोमुख व्यक्तित्व-विकास के लिए आवश्यक तत्वों के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है ।

16. ग्रामीण व नगर के शैक्षणिक अंतर को घटाने का प्रयास किया गया है । बालकों के मनोविकास की भूमिका की ओर भी ध्यान दिया गया है ।

17. परिणामकारी शिक्षा में क्रियाकलाप तथा अन्य पूरक/सहायक विधानों को अपनाने का अवसर दिया गया है ।

* * * * *

अवधि की तालिका

सोपान	गद्य	पद्य
पूर्व तैयारी सोपान	01	01
सीखने-सिखाने की क्रियाएँ	06	03
अभ्यास-उपयोगी क्रियाएँ	04	03
मूल्यांकन	02	02
नैदानिक शिक्षण	02	02
कुल अवधि	**15**	**11**

कुल शाला-दिन	210
हफ्ते में प्राप्त अवधियाँ	008
कुल प्राप्त अवधियाँ	**280**

पाठ्य-पुस्तक रचनाधारित अवधि की तालिका

पाठ्यभाग	संख्या	निश्चित अवधि
गद्य पाठ	11	165
पद्य पाठ	06	066
सेतुबंध	—	016
पुनर्बलन	—	016
लघु परीक्षा	—	004
छमाही परीक्षा-मूल्यांकन	—	008
परियोजना	—	005
कुल अवधि	—	**280**

सामर्थ्यों का विवरण

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* संवाद, चर्चा और नाटकों को सुनने के साथ अर्थग्रहण करना ।	* परिचित विषयों के बारे में अबाधित और सरल रूप से बोलना ।	* चित्र-कथा, विज्ञापनों को पढ़ना ।	* सही क्रम में वाक्यों को लिखना ।
* अपरिचित परिवेश के संदर्भ में वार्तालाप, चर्चा आदि का अर्थग्रहण करना ।	* संदर्भ और घटनाओं का विवरण देना ।	* लिखावट और छपे विषयों को खूब पढ़ना ।	* श्रुतलेखन के समय लेखन चिह्नों का सही प्रयोग करके वाक्य-रचना करना ।
* मौखिक सूचनाओं की तालिका का अर्थग्रहण करके सामूहिक कार्यों को कार्यगत करना ।	* नाटक और चर्चा आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेना ।	* दैनिक पत्रिका और अन्य प्रकाशित पत्रिकाओं को पढ़ना ।	* अनौपचारिक पत्र तथा सरल निबंधों का स्वतंत्र लेखन करना ।

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* सुने विषय को ग्रहण कर, ऐसा हो तो ? ऐसा न हो तो ? -- प्रश्नों का उत्तर देना ।	* संदर्भानुसार उचित बोलचाल की भाषा तथा साहित्यिक भाषा को प्रयोग में लाना ।	* पाठ्य-विषयों को पढ़ने के बाद पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देना ।	* सरल क्रियात्मक व्याकरण के नियमों को समझकर उन्हें लिखने में प्रयोग करना ।
		* लगभग 5000 शब्दों को पढ़ना और अर्थग्रहण करना।	**कुल 17 कौशल हैं ।**

सुनना

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* संवाद, चर्चा और नाटकों को सुनने के साथ अर्थग्रहण करना ।	* संदर्भ : पाठशाला में विविध समारोहों में आयोजित संवाद, चर्चा, नाटकों को सुनकर अर्थग्रहण करने के कौशल को बढ़ाना ।	* वार्तालाप युक्त गद्य पाठ । * बच्चों की आयु के अनुरूप क्रमानुसार पाठ हों । * नीति प्रधान गद्यभाग / कहानियाँ ।	* राष्ट्रीय नेताओं के पात्रों द्वारा संवाद के संदर्भ का आयोजन करना । * विषय के संबंध में छात्रों में चर्चा का आयोजन करना । * कैसेट/रेडियो द्वारा सुने पौराणिक नाटकों के अभिनय के लिए बच्चों को तैयार करना । * छात्रों में किसी एक विषय के संवाद का आयोजन करना ।	* संवाद के बाद संवाद संबंधी प्रश्नों को पूछना । * चर्चा के बाद केंद्रविषय के प्रमुख अंशों को पूछना । * रेडियो और टैपरिकार्डर आदि का उपयोग करके संवाद, चर्चा, आदि को सुनने का अवसर देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* अपरिचित परिवेश में वार्तालाप, चर्चा आदि का अर्थग्रहण करना ।	* अपरिचित परिवेश में संवाद चर्चा आदि का अर्थग्रहण करने का कौशल बढ़ाना ।	* अपरिचित परिवेश में संवाद, चर्चा तथा वार्तालाप । * रेलवे-स्टेशन, हवाई-अड्डा, अस्पताल, बाज़ार, वहाँ के अपरिचित परिवेश का गद्य भाग ।	* अपरिचित परिवेश में होनेवाले संवाद, चर्चाओं को सुनने के साथ अर्थग्रहण कर लौटने के लिए कहना । * किसी एक विषय को सुनकर चर्चा द्वारा कोई निर्णय लेने के लिए कहना ।	* अवसर मिले तो डाक घर, बैंक जाना तथा वहाँ के परिवेश के बारे में बताने के लिए कहना । * छात्रों से, अपरिचित परिवेश में वार्तालाप, संवाद करवाकर सुनने का अवसर देना तथा उचित प्रश्न पूछकर उत्तर पाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* मौखिक आदेश, सूचनाओं की तालिका का अर्थग्रहण करके सामूहिक कार्यों को कार्यगत करना ।	* मौखिक सूचनाएँ दी जाय तो उनका अर्थग्रहण करके कार्यगत करने का कौशल बढ़ाना ।	* सूचनाओं को कार्यगत करनेवाली सूचनाएँ युक्त गद्य पाठ ।	* हिंदी में कुछ मौखिक सूचनाओं को देना तथा छात्र उनका अनुसरण कर रहा है या नहीं - इसका निरीक्षण करना । * सूचनाओं की तालिका को पहले शिक्षकों को पढ़ना है, बाद में बच्चों से पढ़ाना है ।	* सूचनानुसार कार्य निर्वहण करवाना । * सूचनाओं की तालिका का अर्थग्रहण करके की गयी क्रियाओं का परिचय देना । * मौखिक सूचनाओं का अर्थग्रहण करके सामूहिक कार्य करने की क्रियाएँ ।
* सुने हर विषय को ग्रहण कर ऐसा हो तो ? ऐसा न हो तो ? -- प्रश्नों का उत्तर देना ।	* छात्र किसी विषय को सुनने के बाद उनमें ऐसा हो तो ? ऐसा न हो तो ? - प्रश्नों के उत्तर देने का कौशल बढ़ाना ।	* ऐसा हो तो ? ऐसा न हो तो ? जैसे कार्य-कारण संबंध को सूचित करनेवाला गद्य भाग । यात्रा वृत्तांत, आत्मकथा या ऐतिहासिक घटना ।	* छात्रों ने विषय को कहाँ तक सुना है ? इसकी परीक्षा करना । * उपयोगी प्रश्नों को पूछना । * कक्षा में छात्रों को दो दलों में बाँटकर विषय की चर्चा करवाना ।	* प्रश्न पूछना । * सुनी हुई कहानी में आनेवाले कार्य-कारण संबंध को कहकर समझाना ।

बोलना

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* परिचित विषयों के बारे में अबाधित और सहज रूप में बोलना ।	* परिचित विषयों के बारे में अबाधित तथा सहज रूप से बोलने का कौशल बढ़ाना ।	* लेखन चिह्नों का सही प्रयोग । * मुहावरों का विवरण । * लोकोक्तियों का प्रयोग । * नीतियुक्त पद्य ।	* परिचित विषय देकर उस पर उतार-चढ़ाव के साथ बोलने के लिए कहना । * कहावतों, लोकोक्तियों को कहलाना । * कक्षा में चित्र आदि दर्शाकर उन पर बोलने के लिए कहना । * सहज तथा अबाधित रूप से बोलने के लिए विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन करना । जैसे - गीत गाना, आशुभाषण प्रतियोगिता आदि ।	* परिचित विषय के बारे में अबाधित रूप से बोलने की क्षमता की परीक्षा करना । * अबाधित रूप से बोलने का कौशल बढ़ाने की क्रियाओं को आयोजित करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* संदर्भ तथा घटनाओं का विवरण देना ।	* संदर्भ तथा घटनाओं के विवरण देने का कौशल बढ़ाना ।	* राष्ट्रीय नेता तथा देश प्रेमियों के जीवन के प्रमुख संदर्भ या घटना को प्रतिबिंबित करने-वाला गद्य/पद्य ।	* प्रतिनित्य होनेवाली घटनाओं का विवरण देना । * कोई एक घटना को कहकर उसका विवरण देने के लिए कहना । * छात्रों में विचारात्मक भावना बढ़ाना । * दर्शनीय स्थानों के बारे में विवरण देना ।	* संदर्भ तथा घटना से संबंधित प्रश्न । * देखे हुए संदर्भ तथा घटनाओं का विवरण देना । * राष्ट्रीय नेताओं के जीवन के प्रमुख अंशों को कहलाना ।
* नाटक और चर्चा आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेना ।	* नाटक तथा चर्चा आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेने का कौशल बढ़ाना ।	* किसी नाटक का दृश्य भाग । * विषय के अनुरूप चर्चा - विषय । * नाटक में तीन-चार पात्र मात्र हो ।	* पाठशाला के समारोहों में नाटकों में भाग लेना । * छात्रों के दो दल बनाना । एक विषय पर एक दल से विषय के पक्ष पर, दूसरे दल से विषय के विपक्ष पर चर्चा करने के लिए कहना ।	* छोटे-छोटे नाटकों के दृश्यों द्वारा मूल्यांकन करना । * विविध विषयों पर चर्चा के लिए अवसर देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* किसी संदर्भ के लिए उचित बोलचाल की भाषा तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग करना ।	* बोलचाल की भाषा तथा साहित्यिक भाषा का संदर्भानुसार प्रयोग करने का कौशल बढ़ाना ।	* निबंध, पत्रलेखन, कहानी, कविता, घटना, टिप्पणी आदि लिखना । * पद्य/गद्य	* बोलचाल के कुछ शब्दों को देकर, साहित्यिक भाषा में लिखने के लिये कहना । * साहित्यिक भाषा के शब्दों को बोलचाल की भाषा में कहलाना ।	* बोलचाल की भाषा के वाक्यों को देकर अर्थ कहलवाना । * बोलचाल की भाषा के वाक्यों को साहित्यिक भाषा के वाक्यों में बदलने के लिए कहना ।

पढ़ना

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* चित्र-कथा, विज्ञापनों को पढ़ना ।	* चित्रों को देखकर पहचानने का कौशल बढ़ाना । * विज्ञापनों का अवलोकन करके, विषयों को संकलित करने का कौशल बढ़ाना । * विज्ञापनों को क्रमानुसार पढ़ने का कौशल बढ़ाना ।	* 8 से 10 चित्र युक्त कहानी । * दो या तीन विज्ञापन पत्र । (चित्र बच्चों की कल्पना के लिए पूरक हों)	* चित्र-कथाओं को पढ़ाना। * एक चित्र-कथा का विभाजन कर, उन्हें क्रमानुसार जोड़ने के लिए बच्चों से कहना । * विज्ञापनों को पढ़ने के लिए कहना । * पत्रिकाओं में प्रकाशित चित्र-कथाओं को पढ़ाना ।	* चित्र-कथाओं को पढ़ाना । * विज्ञापनों को पढ़ाना । * छात्र को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए अवसर देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* लिखावट और अन्य विषयों को अबाधित रूप से पढ़ना ।	* अन्यों की लिखावट तथा रचनाओं को पढ़ने का कौशल बढ़ाना । * शुद्ध उच्चरण के साथ पढ़ने का कौशल बढ़ाना ।	* प्रसिद्ध साहित्यकार की कोई रचना (उनकी लिखावट में कुछ अंश हो) * गद्य/पद्य	* लिखावट, लेखों को पढ़ाना । * सहपाठियों की लिखावट की किताबों को आपस में पढ़ाना । * विवाह निमंत्रण तथा अन्य निमंत्रण पत्रों को पढ़ाना ।	* पाठाधारित प्रश्न पूछना । * अन्य प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचना को पढ़ाना ।
* पाठ्य विषय को पढ़ने के बाद प्रश्नों का उत्तर देना ।	* प्रश्नों के उत्तर देने का कौशल बढ़ाना ।	* छात्रों में रुचि उत्पन्न करनेवाला पद्य भाग ।	* पद्य पढ़ना, बाद में बच्चों से पढ़ाना । * एक कथा का दो भाग करना, छात्रों के दो दल बनना । * पहले दल से पहले भाग को, दूसरे से दूसरे भाग को पढ़ने के लिए कहना । * पहले दल के छात्र दूसरे दलवालों से प्रश्न करना और दूसरे पहले से ।	* पठित पद्य के आधार पर प्रश्न पूछना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* दैनिक पत्र और अन्य पत्रिकाओं को पढ़ना । * तर्क-वितर्क करने की क्षमता प्राप्त करना ।	* पत्र पत्रिकाओं को पढ़ाने का कौशल बढ़ाना । * तार्किक दृष्टिकोण का विकास करना ।	* कहानी, प्रगीत, मनोरंजन युक्त चित्र-कथा । * बालगीत । * 14 से 16 पंक्तियों का बालगीत ।	* पद्य को लयबद्ध तथा अभिनय के साथ पढ़ना, छात्रों से अनुकरण वाचन करने के लिए कहना । * तार्किक चिंतन कर किसी निर्णय पर पहुँचने के लिएं प्रेरित करना ।	* पद्य को पढ़ाना । * प्रमुख अंशों को कहलाना । * पद्य का सारांश कहलाना ।
* लगभग 5000 शब्दों को पढ़ना, तथा अर्थग्रहण करना ।	* गद्य, पद्य में प्रयुक्त शब्दों और उनके लिए समनार्थक, विलोमार्थ, अनेकार्थ शब्द तथा क्रियात्मक व्याकरणिक नियमों को पढ़कर ग्रहण करने के कौशल को बढ़ाना ।	* समनार्थक, विलोमार्थ शब्द, वचन, लिंग, संज्ञा, भिन्नार्थक शब्द, मुहावरे लोकोक्ति से यंक्त गद्य पाठ ।	* छात्रों से कुछ शब्दों के समनार्थक शब्दों को कहलाना । * छात्रों के दो दल बनाना। * एक दल एक शब्द कहें, तो दूसरा दल उसके लिए अनेकार्थ तथा विलोमर्थ शब्दों को कहना । * लिंग और वचन के लिए भी इसी क्रम का अनुसरण करना ।	* प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन करना । * मुहावरों का अर्थ कहलाना। * वाक्य-रचना कराना । * नये शब्दों की तालिका बनवाना ।

लिखना

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सही क्रम में वाक्यों को लिखना ।	* वाक्य-रचना का कौशल बढ़ाना ।	* लोकोक्ति, मुहावरे युक्त पाठ ।	* वाक्यों को कहना । * वाक्यों को लिखने के लिए कहना । * अक्षर-अक्षर का अंतर बताकर मार्गदर्शन करना ।	* प्रश्नोत्तर करना। * श्रुतलेखन । * प्रमुख अंश लिखाना । * कापी लिखाना ।
* श्रुतलेखन के समय लेखन चिह्नों का सही प्रयोग करके वाक्य-रचना करना ।	* लेखन चिह्नों का उपयोग करके लिखने का कौशल बढ़ाना ।	* लेखन चिह्नों का उपयोग करके लिखना । * लेखन चिह्नों से युक्त गद्य पाठ । * वार्तालाप, चर्चा, आदि के साथ लेखन चिह्नों से युक्त गद्य पाठ ।	* लेखन चिह्नों के सामने उनके नामों को लिखने के लिए कहना । * चमक कार्ड (Flash card) द्वारा लेखन चिह्नों का परिचय कराना । * कुछ वाक्यों को देकर उनमें उचित लेखन चिह्नों का प्रयोग करने के लिए कहना ।	* कहानी, कविता, प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा मूल्यांकन करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* अनौपचारिक पत्र तथा सरल निबंधों को खुद लिखना ।	* पत्र, निबंध लिखने का कौशल बढ़ाना ।	* पत्रों के प्रकार, निबंध, माता-पिता, मित्रों के लिखे पत्र । * मित्रों को यात्रा पर लिखित पत्र । * पारिवारिक पत्रों को लिखने का क्रम । * छोटा निबंध ।	* अनौपचारिक पत्रों को लिखने के लिए कहना । * छोटे-छोटे विषय देकर उसके बारे में निबंध लिखने के लिए कहना । * निबंध की प्रतियोगिता का आयोजन करना ।	* अनौपचारिक पत्र लिखाना । * छोटा निबंध लिखाना । * यात्रा के बारे में पत्र लिखाना । * यात्रा के बारे में निबंध लिखाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	क्षेत्र विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सरल, क्रियात्मक व्याकरण के नियमों को समझकर उनका लेखन में प्रयोग करना ।	* क्रियात्मक व्याकरण के नियमों को लेखन में प्रयोग करने का कौशल बढ़ाना ।	* समनार्थक, विलोमार्थ, वचन, वर्णमाला, संज्ञा, भाषा में संदर्भानुकूल मुहावरों का विवरण । * क्रियात्मक व्याकरणिक नियमों सहित गद्यभाग । * व्याकरणांश युक्त गद्य पाठ । (निबंध) * देशप्रेम को व्यक्त करने वाली कोई एक घटना । * छोटे निबंधों की रचना । * पाठ के प्रमुख अंशों को पहचानना ।	* लोकोक्तियों को लिखाना । * मुहावरों का संदर्भानुसार प्रयोग करने के लिए कहना, समझाना और लिखाना । * व्याकरणांशों के बारे में समझाना ।	* अर्थपूर्ण वाक्यों को लिखाना । * छोटे निबंधों को लिखाना । * पाठ के प्रमुख अंशों को लिखाना । * छोटी टिप्पणी लिखाना ।

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 6

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 6

1. पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा
2. अवधि आबंटन कोष्ठक
3. संकलित सामर्थ्यों का विवरण
4. कौशलाधारित पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम तैयार करते समय राज्य पाठ्यक्रम 2001-02 और एन.सी.एफ. - 2005, इन दोनों को ध्यान में रखा गया है ।
2. पूर्वनिर्धारित सामर्थ्यों को प्रस्तुत एन.सी.एफ 2005 के अनुरूप परिष्कृत किया गया है ।
3. पाठ्यक्रम को शिशुकेंद्रित, सामर्थ्याधारित, क्रियाकलाप और आनंददायक संदर्भानुसार बनाया गया है ।
4. बच्चे की मातृभाषा, स्थानीय / प्रादेशिक भाषा को यथावत् अपनाने हेतु अवसर दिया गया है ।
5. बच्चों द्वारा विद्यालय में प्राप्त ज्ञान को निज-जीवन में अपनाने की अनुकूलता दी गयी है ।
6. राष्ट्रीय मूल्यों, राष्ट्रीय एकता से संबंधित अंशों का पाठ्यक्रम में समावेश किया गया है ।
7. सरलता से कठिनता की ओर बढ़ने के क्रम में पाठ्यक्रम को बनाया गया है ।
8. मूल्यांकन व पाठ्य विस्तार को पाठ्यक्रम में ही सूचित किया गया है ।
9. छात्र बोलचाल की भाषा से क्रमशः साहित्यिक भाषा की ओर बढ़ें - इस तरह पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है ।
10. अवधि का निर्धारण करके उनके अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण किया गया है ।
11. छात्रों में राष्ट्र, समाज, व्यवसायोपयोगी व जीवन मूल्यों को बढ़ाने का अवसर दिया गया है ।
12. भाषा-अभिवृद्धि के साथ भाषा-कौशलों को सही ढंग से रूपित करके सीखने के निरीक्षित परिणामों को ध्यान में रखा गया है ।
13. आत्मीयता, सहकार्य की भावना, समर्पित भावना, परिसर प्रेम, मानव सेवा आदि मूल्यों को पाठ्य रचना में सम्मिलित करें।

13. शैक्षणिक क्षेत्र के नये-नये संशोधन, प्रयोग तथा समीकरण के परिणामों को ग्रहण करने का अवसर दिया गया है ।

14. भाषा विज्ञान के धरातल पर रूपित होते हुए भी प्रादेशिक भाषा की विविधता को समाहित किया गया है ।

15. राष्ट्रीय शिक्षण नीति 1986 में सूचित विद्यार्थियों के सर्वतोमुख व्यक्तित्व-विकास के लिए आवश्यक तत्वों के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है ।

16. ग्रामीण व नगर के शैक्षणिक अंतर को घटाने का प्रयास किया गया है । बालकों के मनोविकास की भूमिका की ओर भी ध्यान दिया गया है ।

17. परिणामकारी शिक्षा में क्रियाकलाप तथा अन्य पूरक/सहायक विधानों को अपनाने का अवसर दिया गया है ।

* * * *

अवधि आबंटन का विवरण

सेतुबंध (प्रथम सेमिस्टर)	18	अवधियाँ
पुनर्बलन (द्वितीय सेमिस्टर)	15	"
लघु-परीक्षाओं के लिए	04	"
सेमिस्टर मूल्यांकन (समालोचना सहित)	08	"
परियोजना के लिए	08	"
परिहार बोधन (प्रति सामर्थ्य के लिए 02 के क्रम में)	36	"
बोधन के लिए	156	"
कुल	**245**	**अवधियाँ**

* शाला कार्य दिवस : 210
* सप्ताह की अवधि : 07
* उपलब्ध अवधि : 245

गद्य-पद्य के लिए अवधि आबंटन

श्रेणी	गद्य	पद्य
पूर्व तैयारी	01	01
सिखाने के अंश	04	03
अभ्यास अन्वय	03	02
मूल्यांकन	02	01
कुल	**10**	**07**

* गद्य पाठ के लिए 10 अवधियों के रूप में - 100
* पद्य पाठ के लिए 07 अवधियों के रूप में - 56

कुल - 156

सामर्थ्यानुसार अवधि आबंटन

क्षेत्र	सामर्थ्य गद्य	अवधि	सामर्थ्य गद्य	अवधि	कुल अवधि
सुनना	02	20	02	14	34
बोलना	03	30	01	07	37
पढ़ना	02	20	03	21	41
लिखना	03	30	02	14	44
कुल	**10**	**100**	**08**	**56**	**156**

सेमिस्टर के अनुकूल आबंटन

सेमिस्टर	सामर्थ्य	प्रतिशत	गद्य	पद्य	अवधियाँ
I	08	45%	05	03	71
II	10	55%	05	05	85
कुल	**18**		**10**	**08**	**156**

सामर्थ्यों का विवरण

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* वार्तालाप, चर्चा और नाटकों को सुनकर समझना ।	* दिए गए विषय के संबंध में सहज बातचीत ।	* विशिष्ट अक्षरों के ध्वनि-अंतर का अर्थ जानना ।	* शब्द-समूह, लोकोक्तियाँ और मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग करना ।
* अपरिचित घटनाओं के वार्तालाप और चर्चाओं को सुनना और ग्रहण करना ।	* घटनाओं के बारे में निर्दिष्ट रूप से बोलना ।	* शब्द-समूह, मुहावरे और लोकोक्तियों का अर्थ जानना ।	* कहानी, विवरणात्मक, टिप्पणी, कविता-सार, वार्तालाप आदि को ढाँचे के अनुसार लिखना ।
* सामूहिक क्रियाकलाप के निर्देशनों को सुनकर उन्हें कार्यान्वित करना ।	* नए विषयों को ध्यान से सुनकर स्पष्ट रूप से प्रकट करना ।	* पढ़े गए विषयों पर चिंतन करते हुए तार्किक स्तर पर निर्णय लेने की सामर्थ्य ।	* पठित और श्रुत विषयों का उचित लेखन चिह्नों का उपयोग करके अर्थपूर्ण वाक्य बनाना ।

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* विषय सुनने के बाद क्यों ? कैसे ?, ऐसा हो तो ? ऐसा नहीं हो तो ? – इन प्रश्नों का उत्तर देना ।		* विषय ग्रहण करने के बाद प्रश्नों का उत्तर देना ।	* विविध प्रकार के पत्र तथा यात्रा संबंधी लेख लिखना ।
	* गैर लोगों से बात करने के संदर्भ में आदरपूर्वक शब्दों का प्रयोग करना । उचित स्वर-परिवर्तन से परिणामकारी ढंग से अभिव्यक्त करना ।	* लगभग 6000 से भी अधिक शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़कर ग्रहण करने की सामर्थ्य पाना ।	* पद्य क्षेत्र में सरल व्याकरण नियमों को समझकर उनका लेखन में प्रयोग करना ।

सुनना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* संवाद, चर्चा और नाटकों को सुनकर अभिनय के अनुसार अर्थ समझना ।	* संवाद, चर्चा नाटकों के मुख्य अंशों को (अर्थ) समझना । * ध्वनि / अभिनय के द्वारा भावनाओं का अर्थ समझना । * संवाद से युक्त विषयों को जानना । * दैनिक जीवन में संवादों का अर्थ समझ लेना ।	* 4-5 पात्र होने चाहिए । * 3-4 अंक होना चाहिए । (1/2 से 2 पृष्ठ तक सीमित रहे) उदा :लव-कुश (बच्चों के नाटक का एक भाग)	* विद्यार्थियों में पात्रों को बाँटकर सह-विद्यार्थियों के सामने नाटक का अभिनय कराना । सभी विद्यार्थियों को संभाषण सुनने का अवसर देना । * विद्यार्थियों में संवाद करवाना । * कोई एक विषय देकर बच्चों में चर्चा करवाना । * चर्चा सुननेवाले छात्रों से मुख्यांश पूछना ।	* संवाद, चर्चाओं का आयोजन करके मंख्य अंशों को बतलाना । * सुने हुए विषय के आधार पर प्रश्न पूछना । * विद्यालय के प्रमुख समारोहों में नाटकों का मंचन करने के लिए प्रेरित करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* अपरिचित प्रसंग तथा घटनाओं में होनेवाले संभाषण तथा चर्चाओं को सुनकर अर्थ समझना ।	* अपरिचित प्रसंगों के अंशों का परिचय कराना । * संभाषण का अर्थ-प्रदान करने के लिए जो अंश हैं उनकी सूची बनाना । * दैनिक जीवन में होनेवाले संभाषण तथा चर्चाओं में भाग लेना । * संवादों को समझने में सहायक अंशों की सूची बनाना ।	* बच्चों के लिए अपरिचित घटना, संभाषण अथवा चर्चा योग्य विषय होने चाहिए । उदा : साहसिक कथाएँ ।	* अपरिचित घटनाओं का परिचय कराना । * कई परिचित और अपरिचित घटनाओं को बताकर इनमें बच्चों को परिचित और अपरिचित घटनाओं को अलग-अलग करने के लिए बोलना । * अपरिचित प्रसंगों में होनेवाली चर्चा, संभाषण सुनकर अर्थग्रहण करने के लिए बताना ।	* अपरिचित प्रसंगों में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करना । * सुने हुए विषयों का विवरण देने के लिए बताना । * अपरिचित घटनाओं की सूची बनाने के लिए कहना । * अपरिचित प्रसंग, घटना के मुख्य अंशों को पूछना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* सामूहिक कार्यक्रमों के निर्देशों को सुनकर कार्यरूप में लाना ।	* समूहों में क्रियाकलाप करते समय निर्देशों को सुनकर, उन्हें कार्यरूप में लाने के लिए समर्थ बनाना । * सामूहिक क्रियाकलापों के निर्देशों का अर्थ समझना । * निर्देश के अनुसार कार्य निर्वहण करना ।	* समूह में क्रियाकलापों के निर्वहण के लिए योग्य पाठ होने चाहिए । * उचित निर्देश देने के बाद उन्हें कार्य रूप में लाने चाहिए । * निर्देशानुसार कार्य-निर्वहण करना । उदा : पर्यटन संबंधी गद्य ।	* बच्चों को कक्षा में कई निर्देश देने के बाद बच्चे कहाँ तक इन निर्देशों को सुनकर कार्यरूप में लाते हैं । उसका निरीक्षण कर उन्हें मार्गदर्शन देना । * विद्यालय के समारोह में निर्देश देने के बाद उन्हें कहाँ तक कार्यरूप में ला सकते हैं - उसका निरीक्षण करना । * बच्चों का अपने में परस्पर निर्देश देकर-लेकर कार्य करना । * विद्यालय के दैनिक कार्यों को बच्चों में बाँटकर परिशीलन करना कि वे इस कार्य-निर्वहण में कहाँ तक निर्देशों का अनुसरण कर सकते हैं ।	* विविध निर्देश देकर बच्चों से प्रश्न पूछना । * निर्देश देकर खेल खेलने के लिए कहना । * सुने हुए निर्देशों को कार्य रूप में लाए हैं या नहीं ? -- इस ओर ध्यान देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* विषय सुनने के बाद प्रतिक्रिया-सामर्थ्य पाना । क्यों ? कैसे ? ऐसा हो तो ? ऐसा न हो तो ? जैसे प्रश्नों के लिए उत्तर देना ।	* विषयों को स्पष्ट रूप से सुनने की प्रेरणा देना । * विषय सुनने के बाद क्यों ? कहाँ ? कैसे ? ऐसा हो तो ? ऐसा न हो तो ? -- इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए समर्थ बनाना ।	* अद्भुत और रोचक पाठ हों । * पाठ में कैसे ? क्यों ? ऐसे प्रश्नों के पूरक पाठ हों । उदा : विचार प्रधान कथाएँ ।	* कहानी, वाक्य-समूह, घटना परिवेश, रेखाचित्र आदि पढ़ना और पढ़ने के बाद कैसे ? क्यों ? — ऐसे प्रश्नों का उत्तर पूछना । * ध्वनि मुद्रिकाओं का इस्तेमाल करते हुए कहानी, नाटक आदि सुनाना और उनके आधार पर ऐसा होता तो ? ऐसा न होता तो ? जैसे प्रश्न पूछकर उत्तर पाना । * सुने हुए विषयों पर संदर्भानुसार प्रश्न करना ।	* सुनने के बाद छात्रों से क्यों ? कैसे ? ऐसा होता तो ? ऐसा न होता तो ? -- प्रश्नों का उत्तर पाना ।

बोलना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* विषयों की स्पष्ट चर्चा करना ।	* चर्चा में बोलने का कौशल बढ़ाना । * चर्चा में भाग लेकर अपने विचारों का समर्थन करने की क्षमता बढ़ाना । * विषय के अनुसार बोलने का कौशल बढ़ाना ।	* सामाजिक समस्या संबंधी पाठ । * आबादी और जीवन मूल्य संबंधी पाठ ।	* परिचित विषय देकर वार्तालाप करवाना । * सामाजिक समस्याओं की चर्चा कराना । * भाषण, आशुभाषण कला में रुचि बढ़ाना । * किसी एक विषय पर अपने विचारों को प्रकट करने के लिए कहना ।	* चर्चा स्पर्धा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन देना और परिवीक्षण करना । * छात्रों के वार्तालाप पर ध्यान देना ।
* प्रसंग और घटनाओं के बारे में स्पष्ट रूप से बोलना ।	* संदर्भ और घटनाओं को समझ लेने की क्षमता बढ़ाना । * घटनाओं की जानकारी और उसकी सत्यासत्यता समझना । * स्पष्ट रूप से बोलने की क्षमता बढ़ाना ।	* महान व्यक्तियों की जीवनी और यात्रा साहित्य के बारे में विषय देना । * मेले का विशिष्ट प्रसंग । * स्वतंत्र सेनानियों की जीवनी -- गद्य पाठ ।	* किसी एक प्रसंग के चित्र को प्रस्तुत करके बोलने का अवसर देना । * किसी एक घटना के संबंध में बोलने के लिए कहना । * चर्चा स्पर्धा । * भाषण । * आशुभाषण ।	* किसी एक प्रसंग, घटना और विषय के बारे में कहलवाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* नये विषयों को ध्यान से सुनकर अपने शब्दों में स्पष्ट रूप से प्रकट करना ।	* नये-नये विषयों को समझने के लिए प्रोत्साहन देना / प्रेरित करना । * नये विषयों का संग्रह करने की इच्छा बढ़ाना ।	* वैचारिक और आलोचना शक्ति बढ़ाने वाले पद्य पाठ । * सरल गीत जिसे छात्र पढ़कर आसानी से समझ सकते हैं ।	* विषय सुनकर अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने का अवसर देना । * पद्य का भावार्थ अपने शब्दों में बोलने का अवसर देना । * ध्वनि मुद्रिका का उपयोग करके नाटक / प्रसंग और भाषण सुनवाना ।	* सुने विषयों के बारे में अपने विचारों को प्रस्तुत करने का अवसर देना ।
* वार्तालाप में आदर सूचक शब्दों का इस्तेमाल करना ।	* वार्तालाप में आदर सूचक शब्दों के प्रयोग करने का कौशल बढ़ाना । * उच्च मूल्यों को बढ़ाना । * सहज बातचीत की क्षमता बढ़ाना ।	* आदर सूचक शब्दों से युक्त गद्य पाठ । * संवाद, पौराणिक, ऐतिहासिक नाटक के दृश्यों का गद्य पाठ । * देश प्रेम, गुरु भक्ति की भावनाओं से संबंधित नाटक-भाग ।	* आदर सूचक शब्दों को वार्तालाप में व्यक्त करना । * गुरु-शिष्य संवाद । * बाप-बेटे की बातचीत । * डॉक्टर-रोगी का संवाद - ऐसे प्रसंगों की व्याख्या करना ।	* समूह में वार्तालाप करते समय ध्यान देना । * आदर सूचक शब्द देकर वार्तालाप की व्यवस्था करना । * पाठ्य पर आधारित मूल्यांकन । * आदर सूचक शब्दों की तालिका बनवाना ।

पढ़ना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* अक्षरों के अंतर को समझकर पढ़ना ।	* ध्वनि की पूरी जानकारी पाना । * ध्वनि के अंतर को समझकर पढ़ना । * पढ़ना परिणामकारी होना चाहिए ।	* ध्वनियों के अंतर बताने वाले पद्य की पंक्तियाँ होनी चाहिए । * आधुनिक हिंदी के परिचित कवियों की कविता । * आधुनिक पद्य 15-20 पंक्तियाँ ।	* कविता को स्पष्ट रूप से पढ़ना । * पदों में हानेवाली ध्वनियों का अंतर समझाना । * विषय संबंधी अन्य साहित्य का अध्ययन ।	* कविता पढ़ाकर उसकी स्पष्टता पर ध्यान देना । * हर एक अक्षर की ध्वनि कहलवाना । * ध्वनि के अंतर से निकलनेवाले अर्थ का ग्रहण करवाना । * घटना का विश्लेषण करने के लिए कहना ।
* शब्द-समूह, कहावत, मुहावरे आदि का अर्थ समझना ।	* कहावत, मुहावरों की पहचान । * शब्द-समूह को स्पष्ट रूप से पढ़ना । * कहावत, मुहावरों के अर्थ समझना । * प्रयोग में रहनेवाले कहावत, मुहावरों का संग्रह करना ।	* गद्य पाठ में कहावत, मुहावरे और पद-समूह होना चाहिए । * रोचक लोककथा 2 से 3 पृष्ठ की होनी चाहिए ।	* गद्य पाठ का स्पष्ट पठन । * कहावत, मुहावरों की पहचान । * इनका अर्थ बताना । * पूरक साहित्य पढ़कर अर्थग्रहण कराना ।	* साहित्य की अन्य विधाओं को पढ़ाना । * भाषा-खेल खिलाना । * कहावत, मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करवाना और संग्रह करवाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* पाठ्येतर विषयों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देना ।	* पाठ्येतर विषय पढ़ने के लिए रुचि जगाना। * पठित विषय के अर्थ समझने का कौशल बढ़ाना । * प्रश्नों के सही उत्तर देने के लिए तैयार करना । * उत्तर देने की क्षमता बढ़ाना ।	* व्यक्ति चित्रण का पद्य पाठ । * नारी संबंधी गीत । * 15 से 20 पंक्तियाँ । * व्यक्ति चित्रण रसपूर्ण हो । * भावार्थ को सरल रूप से पहचानना ।	* पद्य का स्पष्ट वाचन । * सारांश बताकर विश्लेषण करना । * प्रश्नों की रचना करना । * उत्तर लिखने का विवरण देना । * पत्र, बाल साहित्य और पत्रिकाओं से परिचय कराना ।	* पद्य का स्पष्ट वाचन करने के लिए कहना । * पद्य का भावार्थ बताने के लिए कहना । * पद्य-विषय लेकर प्रश्नों की रचना करने के लिए बताना । * प्रश्नों के उत्तर पाना ।
* विषयों के बारे में विचार कर तार्किक निर्णय करना ।	* पढ़ाई में अर्थ ग्रहण करना । * आलोचना शक्ति बढ़ाना । * विषय का कार्य-कारण संबंध समझना ।	* सोचने की शक्ति बढ़ाने का पद्य पाठ । * कबीर के दोहे- 4 या 5 । * सोचने तथा तर्क करने योग्य पद्य ।	* पद्य का सार्थक वाचन करना । * पद्यों में प्रतिबिंबित उत्तर ढूँढ़ना । * सोचकर अर्थग्रहण करने के लिए अवसर देना ।	* दोहा वाचन करवाना । * विषय-ग्रहण का उत्तर पाना । * विषय की आलोचना, विवरण के साथ कहलवाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* लगभग 6000 से भी अधिक शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़कर ग्रहण करना ।	* तर्कबद्ध आलोचना करने की प्रेरणा देना । * शब्द-भंडार की वृद्धि करना । * पढ़ने में अभिरुचि पैदा करना । * स्वतंत्रता से पढ़ने की कुशलता बढ़ाना । * ग्रहण शक्ति बढ़ाना । * पुस्तक पढ़ने की आदत ।	* परिचित और अपरिचित शब्द युक्त पद्य पाठ । * गीत । * प्रसिद्ध कवियों की रचना । * 12 से 16 पंक्तियाँ ।	* तर्क करके निर्णय पर पहुँचने के लिए मार्गदर्शन देना । * गीतों का स्पष्ट रूप से वाचन करना । * शब्दों का अर्थ-विवरण देना । * पढ़ने का अवसर देकर ग्रहित अंशों को पूछना । * वाचनालय का उपयोग करना । * पढ़ने के महत्व का विश्लेषण करना ।	* पद्य वाचन के लिए कहना । * पदों का अर्थ कहलवाना । * वाक्य में शब्दों का प्रयोग करने के लिए कहना । * छोटी टिप्पणियाँ लिखने के लिए कहना । * छात्रों की दैनिक पढ़ाई की जानकारी पाना । * नए शब्दों की तालिका बनवाना ।

लिखना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* शब्द-समूह, लोकोक्तियाँ और मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करना । * संदर्भानुसार परिणामकारी ढंग से लिखने की सामर्थ्य पाना ।	* शब्द-समूह और मुहावरों का ग्रहण करके वाक्य रचना करना । * वाक्य-रचना की क्षमता की वृद्धि करना ।	* लोक कथा । * ऐसी लोक कथा हो, जिसमें अधिक शब्द-समूह, कहावत और मुहावरों का प्रयोग हो । * वार्तालाप शैली का गद्य पाठ हो ।	* गद्य में पद्य-अंशों को समझाना । * वाक्य में शब्द-समूह, कहावतों का प्रयोग कराना । * श्यामपट पर लिखकर अर्थ समझाना ।	* पाठ के आधार पर मूल्यांकन । * वाक्य-रचना करवाना । * मुहावरों के अर्थ को विस्तार से लिखाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* कहानी, विवरणात्मक टिप्पणी, कविता-सार, वार्तालाप आदि को ढाँचे के अनुसार लिखना ।	* ज्ञात विचारों को सारांश और वार्तालाप के रूप में लिखने की प्रेरणा देना । * साहित्य के विविध-प्रकारों के प्रति उत्सुकता बढ़ाना ।	* ऐतिहासिक कहानी जैसे : 1. लक्ष्मीबाई 2. शिवाजी 3. राणा प्रताप 4. अकबर	* सुने हुए विचारों, कथा, वार्तालाप आदि का सारांश क्रमबद्ध रूप में लिखने के लिए कहना । * अन्य पद्य, गद्य, अन्य विधाओं में लिखने का क्रम बताना ।	* पाठ के आधार पर मूल्यांकन । * कथा को वार्तालाप के रूप में और वार्तालाप को कथा के रूप में छात्रों से लिखवाना ।
* पढ़ने में और बोलने में स्वरभार को अर्थ पूर्ण लेखन में व्यक्त करना । * श्रुतलेखन और लेखन चिह्नों का उपयोग करके अर्थपूर्ण लेखन की सामर्थ्य पाना ।	* लेखन चिह्नों के उपयोग की जानकारी । * वाक्यों में उचित लेखन चिह्नों का प्रयोग करना । * लेखन चिह्नों के प्रयोग की उपयोगिता समझना ।	* संवाद शैली के गद्य में लेखन चिह्नों का उपयोग करना ।	* पाठ में प्रयुक्त चिह्नों की पहचान कराना । * वाक्यों में उचित चिह्नों का प्रयोग करने का कौशल बढ़ाना ।	* पाठ के आधार पर मूल्यांकन करना । * सरल वाक्य देकर उचित चिह्न लगाने को कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार / प्रकार	प्रविधि	मूल्यांकन
* कई प्रकार के पारिवारिक पत्र, व्यवहार और यात्रा-लेख लिखना ।	* पत्र-लेखन की आवश्यकता समझना । * विविध प्रकार के पत्र को समझाना । * सृजनात्मक लेखन पर जोर देना ।	* पत्र-लेखन । * एक विशिष्ट स्थान का यात्रा-लेखन ।	* पाठ का यात्रा-लेख समझाना । * विविध प्रकार की पत्र-शैली सिखाना । * पत्र-लेखन में प्रयुक्त होनेवाले आदर सूचक शब्दों को समझाना ।	* पाठ के आधार पर मूल्यांकन करना । * पारिवारिक पत्रों को लिखवाना ।
* सरल व्याकरण के नियमों को समझकर लेखन में उनका प्रयोग करना ।	* गद्य/पद्य के साथ-साथ व्याकरण के अंशों को समझाना । * व्याकरण के नियमों को समझकर प्रयोग करना ।	* व्यक्ति चित्रण से संबंधित गद्य पाठ । * 5 वीं कक्षा के व्याकरण को आगे बढ़ाना । * केवल दो-तीन संधि का परिचय कराना ।	* पाठ पढ़ाते समय ही व्याकरण के अंशों को बताना । * व्याकरण के नियमों को समझाते हुए उनके प्रयोग करने का कौशल बढ़ाना ।	* मूल्यांकन करते समय व्याकरण संबंधी नियमों को ध्यान में रखें । * व्याकरण के नियमों के बारे में प्रश्न पूछकर उदाहरण सहित उत्तर देने के लिए बताना ।

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 7

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 7

1. पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा
2. अवधियों के विभाजन का विवरण (वार्षिक, गद्य-पद्यानुसार, क्षेत्रानुसार)
3. गद्य-पद्यों के अपेक्षित लक्षण
4. क्षेत्रानुसार पाठों का विभाजन और अपेक्षित साहित्य-प्रकारों का विवरण
5. व्याकरणांशों का विवरण
6. सामर्थ्यों की संकलित सूची
7. पाठ्यक्रम का विवरण

पाठ्यक्रम की सामान्य रूप-रेखा

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम तैयार करते समय राज्य पाठ्यक्रम 2001-2002 तथा एन.सी.एफ 2005 - इन दोनों का ध्यान रखा गया है ।
2. सामर्थ्यों को प्रस्तुत एन.सी.एफ 2005 के अनुगुण परिष्कृत किया गया है ।
3. पाठ्यक्रम को शिशुकेन्द्रित, सामर्थ्याधारित, क्रियाकलाप और आनंददायक संदर्भानुसार बनाया गया है ।
4. बच्चे की मातृभाषा, स्थानीय भाषा को यथावत् अपनाने हेतु अवसर दिया गया है ।
5. बच्चे द्वारा विद्यालय में प्राप्त ज्ञान को निज जीवन में ढालने की अनुकूलता दी गयी है ।
6. राष्ट्रीय मूल्यों का, राष्ट्रीय एकता से सम्बन्धित अंशों का पाठ्यक्रम में समावेश किया गया है ।
7. सरलता से कठिनता की ओर बढ़ने के क्रम में पाठ्यक्रम को बनाया गया है ।
8. पाठ्यक्रम में ही बताया गया है कि मूल्यांकन व पाठ्य का विस्तार कितना हो ।
9. बोलचाल की भाषा से क्रमशः साहित्यिक भाषा की ओर बालक के बढ़ने के लिए अनुकूल पाठ्यक्रम बनाया गया है ।
10. अवधियों का निर्धारण करके, उनके अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण किया गया है ।
11. राष्ट्र, समाज, वृत्ति, अपेक्षित व निरीक्षित मूल्यों को बालकों में बढ़ाने का अवसर दिया गया है ।
12. माता-पिता के प्रति प्रेम, धैर्य, क्षमाशीलता, ब्रह्मचर्य आदि मूल्यों को पाठ्य रचना में समाविष्ट किया जाय ।

12. भाषा-अभिवृद्धि के साथ भाषा-कौशलों को सही ढंग से रूपित करके, सीखने के निरीक्षित परिणामों को ध्यान में रखा गया है ।

13. शैक्षणिक क्षेत्र के नये-नये संशोधन, प्रयोग तथा समीकरण के परिणामों को ग्रहण करने का अवसर दिया गया है ।

14. भाषा विज्ञान के धरातल पर रूपित होते हुए भी प्रादेशिक भाषा की विविधता को समाहित किया गया है ।

15. राष्ट्रीय शिक्षण नीति 1986 में सूचित बालकों के सर्वतोमुख व्यक्तित्व-विकास के आवश्यक तत्वों के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है ।

16. ग्रामीण व नगर की शैक्षणिक अंतर को घटाने का प्रयास किया गया है । बालकों के मनोविकास की भूमिका को भी समान प्रधानता दी गयी है ।

17. परिणामकारी ढ़ंग से सीखने में, क्रियाकलाप तथा अन्य सर्व विधानों को अपनाने का अवसर दिया गया है ।

* * *

अवधि विभाजन का विवरण

* शाला कार्य-दिवस : 210 * सप्ताह में उपलब्ध अवधियाँ : 07 * सामर्थ्यानुसार अवधि विभाजन

वार्षिक अवधि विभाजन

क्र. सं.	विवरण	अवधियाँ
1.	सेतुबन्ध (प्रथम सेमिस्टर)	18
2.	पुनर्बलन (द्वितीय सेमिस्टर)	15
3.	लघु-परीक्षाओं के लिए	04
4.	सेमिस्टर-मूल्यांकन(समालोचना युक्त)	08
5.	परियोजना के लिए	08
6.	परिहार बोधन (प्रति सामर्थ्य)	36
7.	बोधन के लिए	156
	कुल	245

क्षेत्र	गद्य		पद्य		कुल अवधियाँ
	सामर्थ्य	अवधि	सामर्थ्य	अवधि	
सुनना	02	20	02	14	34
बोलना	03	30	01	07	37
पढ़ना	02	20	03	21	41
लिखना	03	30	02	14	44
कुल	**10**	**100**	**08**	**56**	**156**

श्रेणी	पूर्व तैयारी	सीखना	अभ्यास/अन्वय	मूल्यांकन	कुल
गद्य	01	04	03	02	10
पद्य	01	03	02	01	07
कुल	**02**	**07**	**05**	**03**	**17**

सेमिस्टर के अनुसार पाठ-अवधि विभाजन

सेमिस्टर	सामर्थ्य	प्रतिशत	गद्य	पद्य	अवधियाँ
I	08	45%	05	03	71
II	10	55%	05	05	85
कुल	**18**	**100%**	**10**	**08**	**156**

* प्रति गद्य पाठ 10 अवधियों के रूप में - 100
* प्रति पद्य पाठ 07 अवधियों के रूप में - 56
* कुल 156

गद्य-पद्यों के लक्षण

* पाठ्यक्रम में सूचित विवरणों को ध्यान में रखें -

गद्य विभाग

* बालक के स्तरानुसार शब्द हों ।
* नित्य जीवन के अनुगुण अवसर हों ।
* उत्तम आदतों की वृद्धि के लिए प्रेरणा दें ।
* पूरक साहित्य पढ़ने की सूचना दें ।
* यथासंभव विभिन्न साहित्य प्रकार का समावेश हो ।

पद्य विभाग

* लयबद्ध पद्य हों ।
* गाने लायक हों ।
* जनप्रिय पद्यों का समावेश हो ।
* साहित्य के विभिन्न प्रकार के पद्य हों ।
* कवि का आशय सरल रूप में प्रतिबिंबित करनेवाले पद्य हों ।
* बालक के अनुभव, कल्पना के करीब समन्वय होने लायक विषय-वस्तु हो ।

पाठ्य रचना हेतु सामान्य सूचनाएँ :

* पाठ के आरंभ में आवश्यक अंश
    * पाठ का मुख्य आशय
    * प्रधान सामर्थ्य
    * व्याकरणांश

*** पाठों का वितार :**

गद्य पाठ : 350 से 400 शब्द ।

पद्य पाठ : पाठ्यक्रम के विवरण में दिया गया है ।

चित्र

* 1/2 पृष्ठ के चित्र हों तो
  गद्य में : करीब 02
  पद्य में : करीब 01
* 1/4 पृष्ठ के चित्र हों तो
  गद्य में : करीब 03
  पद्य में : करीब 04
* कवि-लेखक-परिचय
  पाठ के प्रारंभ में
  सचित्र सामान्य
  परिचय हो ।

* व्याकरणांश
  * छठी कक्षा में दिये गये अंशों को ध्यान में रखें ।
  * अन्य सामर्थ्यों से सम्बन्धित मूल्यांकन अपेक्षित है ।
  * भाषा संबंधी क्रियाकलाप हों ।
  * मौखिक-लेखन विभाग हों ।
  * अधिक अभ्यास हेतु जानकारी हो ।
  * नये शब्दों का परिचय आदर्श वाक्यों-सहित हो ।

क्षेत्रानुसार पाठों का विभाजन

क्र. सं.	गद्य पाठ	क्षेत्र
1.	यात्रा वृत्तांत	सुनना
2.	नाटक	सुनना
3.	सामाजिक समस्या	बोलना
4.	ऐतिहासिक घटना	बोलना
5.	नेतृत्व का विकास	बोलना
6.	बोलचाल की भाषा का उपयोग	पढ़ना
7.	साहित्याभिरुचि का विकास	पढ़ना
8.	हास्य साहित्य	लिखना
9.	राज्य/राष्ट्रभाषा का वैभव	लिखना
10.	लोककथा	लिखना

अपेक्षित साहित्य-प्रकार का विवरण

क्र.सं.	पद्य पाठ	क्षेत्र
1.	राष्ट्रीय-गीत	सुनना
2.	दोहे	सुनना
3.	लोक गीत	बोलना
4.	सरल गीत	पढ़ना
5.	भक्ति साहित्य	पढ़ना
6.	गीत/चौपाई	पढ़ना
7.	काल्पनिक गीत	लिखना
8.	मध्यकालीन पद्य	लिखना

व्याकरणांश

*** प्रधान अंश**

वर्णमाला
कर्तृ, कर्म, क्रियापद
संज्ञा
संधि
भिन्नार्थक-अनेकार्थक शब्द
समास
मुहावरे-कहावतें
द्विरुक्ति
मात्राओं का सामान्य परिचय

*** पिछली कक्षाओं से आगे बढ़ाये गये अंश**

लिंग
संज्ञा
समानार्थक शब्द
विरुद्धार्थक शब्द
विभक्ति-प्रत्यय
विराम-चिह्न
जोड़ी के शब्द
बोलचाल की भाषा-साहित्यिक भाषा
वाक्य-प्रयोग

सूचना :

* पाठों से सम्बन्धित व्याकरणांश दें ।
* समास जैसे व्याकरणिक अंशों को दो-तीन पाठों में दें ।
* सामर्थ्यों को ध्यान में रखकर, सम्बन्धित सामर्थ्यों के साथ व्याकरणांशों को जोड़ें ।

सामर्थ्यों का विवरण

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* कविता, कहानी, नाटक, निबंध, प्रहसन, संगोष्ठियों को सुनकर समझना ।	* किसी परिचित विषय को लेकर चर्चा एवं संवाद के विवरण का आयोजन करके बोलने की क्षमता का विकास करना ।	* ध्वनियों के साम्य और वैषम्य का अर्थ समझकर पढ़ना ।	* समानार्थक, भिन्नार्थक शब्द और पद-समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग करना ।
* अपरिचित घटनाओं के बारे में सुनना और समझना तथा अभिनय करना ।	* किसी घटना या प्रसंग के बारे में अबाधित रूप से और स्पष्ट रूप से बोलना ।	* पठित विषय के बारे में सोचकर तार्किक रूप से उत्तर देना ।	* कहानियों को नाटकों में, नाटकों को कहानियों में, परिवर्तित करने की एवं कविताओं का सारांश लिखने की सृजनशीलता को बढ़ाना ।

सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
* समूह में निर्देशों को सुनकर अर्थग्रहण करके प्रतिक्रिया व्यक्त करना ।	* समारोह के कार्यक्रमों का निरूपण करना ।	* प्रकाशित पाठ्येतर विषय और हस्तलेखन (पाण्डु लिपि) पढ़कर प्रश्नों का उत्तर देना ।	* निबंध, कहानी, कविता, पत्र, टिप्पणी, कहावत, विस्तार आदि को उचित विराम चिह्नों के साथ समर्थ रूप से लिखना ।
* विषय सुनने के बाद मन में उठनेवाले क्यों ? कहाँ ? कैसे ? ऐसा होता तो ? ऐसा न होता तो ? आदि प्रश्न करने की योग्यता प्राप्त करना ।	* मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग करके बोलना ।	* विराम चिह्न को समझकर पढ़ना ।	* सरल क्रियात्मक व्याकरण नियमों को समझकर अपनी लिखावट में उपयोग करना ।
		* लगभग 2000 शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़कर ग्रहण करना ।	* लय, प्रासों का परिचय कराना ।

सुनना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* कविता, कहानी, नाटक, निबंध, प्रहसन, संगाष्ठियों को सुनकर समझना ।	* कविताओं का सारंश ग्रहण करना । * कहानी, नाटक, निबंध प्रहसनों के सामान्य लक्षणों को समझना । * संगोष्ठियों को रुचि से सुनने की आदत डालना ।	* राष्ट्रीय भावैक्यता, शौर्य एवं साहस प्रधान पद्य । * प्रसिद्ध कवियों के गीत। * समूह में गाने के लिए योग्य हो । * 20 से 24 पक्तियाँ होनी चाहिए । * निर्दिष्ट विषय युक्त पद्य होना चाहिए ।	* कविताओं को पढ़कर, गाकर, सुनने का अवसर प्राप्त कराना । * कैसेट द्वारा कविताएँ सुनाना । * कहानियों को सुनने का अवसर प्रदान करना । * दर्शक बनकर नाटक देखना ।	* कविता सुनने के बाद मुख्यांशों को कहलाना । * कहानी, नाटक, निबंध, प्रहसनों को सुनकर मुख्यांशों को पहचानने के लिए बताना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
	* कहानी, नाटक, निबंध, प्रहसनों को सुनकर मुख्याशों को पहचानना ।	* सामूहिक क्रियाकलाप को निभाने की रुचि की अभिवृद्धि करना । * क्रियाकलाप निभाने से पहले निर्देशों को ठीक तरह से सुनना । * निर्देशों का स्पष्ट रूप से अर्थग्रहण कराना । * निर्देशों के अनुसार आंगिक प्रतिक्रिया व्यक्त कराना ।	* प्रहसनों को सुनना । * संगोष्ठियों का आयोजन करके उसमें भाग लेना ।	* संगोष्ठियों में भाग लेने के बाद उनके मुख्यांशों को कहलाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* अपरिचित घटनाओं के बारे में सुनना और समझना तथा अभिनय करना ।	* सामूहिक क्रियाकलाप का निर्वहण करने की अभिरुचि पैदा करना । * क्रियाकलापों के निर्वहण करने से पहले निर्देशों को ध्यान से सुनना ।	* राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति युक्त पद्य । * प्रसिद्ध कवियों के गीत । * समूह में गाने योग्य हो । * 20 से 24 पंक्तियाँ हों । * निर्दिष्ट विषय युक्त पद्य होना चाहिए ।	* अपरिचित घटनाओं का विवरण देना । * वहाँ के घटनाओं की संदर्भानुसार तुलना करके विश्लेषण करना । * घटना के कारण और परिणाम के बारे में संक्षिप्त रूप से चर्चा करना ।	* अपरिचित घटनाओं के बारे में विवरण देने के लिए कहना । * घटनाओं का विश्लेषण करना । * अपरिचित प्रसंग या घटना के बारे में प्रश्न करना । * घटनाओं का अभिनय करके उन्हें दिखाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
	* निर्देशों का स्पष्ट रूप से अर्थग्रहण करना । * निर्देशानुसार आंगिक रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करने का कौशल बढ़ाना। * सामूहिक क्रिया कलाप में भाग लेकर आंगिक प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता बढ़ाना ।		* घटना के मुख्यांशों को क्रमानुसार कहलाना । * घटनाओं का अभिनय करने के लिए अवसर प्रदान करना । * अपरिचित प्रसंगों में होनेवाली घटनाओं के दृश्यों (C.D) को दिखाना ।	* अभिनय में देखे हुए मुख्यांशों को कहलवाना । * घटनाओं के अंशों पर अभिनय कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* सामूहिक क्रियाकलापों के निर्देशों को सुनकर अर्थग्रहण करके प्रतिक्रिया व्यक्त करना ।	* अपरिचित घटनाओं का अर्थग्रहण करना । * घटनाओं के संदर्भ को पहचानना । * अपरिचित प्रसंग के घटनाओं की दैनिक जीवन के साथ तुलना करना । * घटनाओं का कारण और परिणामों को समझना । * अपरिचित घटनाओं को परिचित बनाना । * घटनाओं को सुनकर, समझकर, अभिनय करना । * अभिनय कौशल को बढ़ाना ।	* बच्चों को अपरिचित प्रदेश की यात्रा कराना । * गद्य पाठ । * अपरिचित प्रसंगों में घटित घटानाओं का समावेश करना । * यात्रा-कथन आकर्षक हो । * घटनाएँ रोचक हों । * दो से तीन प्रमुख घटनाएँ सम्मिलित हों ।	* समूह में क्रियाकलाप कराना । * निर्देश स्पष्ट रूप से बतायें । * निर्देश- अनुसार अर्थ-ग्रहण करवाना । * निर्देश-अनुसार आंगिक रूप से प्रतिक्रिया करने के लिए अवसर प्रदान करना । * आंगिक रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए आवश्यक क्रियाकलाप कराना । * प्रतिदिन के निर्देशों को सुनकर आंगिक रूप से प्रतिक्रिया करने के लिए अवसर देना ।	* समूह में भाग लेते वक्त उनका निरीक्षण करना । * निर्देशों को कहलवाना। * सामूहिक क्रियाकलाप के बारे में चर्चा कराना । * निर्देश-अनुसार आंगिक रूप से प्रतिक्रिया करवाना । * मूकाभिनय-क्रिया-कलाप करवाना । * पात्रों को बाँटकर नाटक के द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* विषय सुनने के बाद मन में उठनेवाले क्यों ? कहाँ ? कैसे ? ऐसा होता तो ? ऐसा न होता तो ? आदि प्रश्नों का कारण सहित विश्लेषण करने की योग्यता प्राप्त करना ।	* विषय को स्पष्ट रूप से सुनने के कौशल को बढ़ावा देना । * सुने हुए विषय पर प्रभुत्व पाना । * सुने हुए विषय के बारे में तार्किक रूप से सोचना । * विषय पर पूछे जानेवाले प्रश्नों के कारणों को पहचानना । * कारण सहित विश्लेषण करने में समर्थ बनना ।	* महाभारत की एक घटना सम्मिलित नाटक । * गद्य पाठ । * 4 से 5 दृश्य होने चाहिए । * 4 से 6 प्रमुख पात्र होने चाहिए । * नाटक निर्दिष्ट वस्तु से संबंधित होना चाहिए ।	* दोहों को स्पष्ट रूप से सुनाकर, सुनने का अवसर प्रदान करना । * विषय पर बोलने के लिए प्रेरित करना । * विषय के बारे में चर्चा करना । * प्रश्नोत्तर विधान से विषय का विवरण कराना। * विषय में निहित घटना और अंशों का विश्लेषण करना । * विषय के लिए कारण ढूँढ़ना । * कारण सहित विश्लेषण करना ।	* सुने हुए विषय पर प्रश्नों की रचना कराना । * चर्चा में भाग लेने के लिए कहकर निरीक्षण करना । * विषयानुसार बोलने के लिए प्रेरित करना । * प्रश्नों से संबंधित कारण कहलाना । * भाषा-खेलों द्वारा क्रियाकलाप कराना । * विषय में निहित कारण का विश्लेषण करने के लिए कहना। * प्रतिदिन के विषयों से संबंधित कारण कहलाना ।

बोलना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* किसी परिचित विषय को लेकर चर्चा एवं संवाद, विवरण का आयोजन करके बोलने की क्षमता का विकास करना ।	* चर्चा, संवाद में भाग लेने के लिए अभिरुचि पैदा करना । * चर्चा, संवादों के सामान्य लक्षणों को पहचानना । * चर्चा, संवादों में विषय से संबंधित विचारों की अभिव्यक्ति करना । * चंर्चा, संवादों का महत्व समझना । * विषय से संबंधित विवरण देना । * चर्चा, संवादों में स्पष्ट रूप से बोलना ।	* क्यों ? कैसे ? ऐसा होता तो ? ऐसा न होता तो ? प्रश्नों पर चिंतन करने के लिए अवसर प्रदान करने वाला पद्य । * दोहे । * भक्तिकाल के दोहे । * 8-10 दोहे । * किसी एक कवि के दोहे । * कुल 16 से 20 पंक्तियाँ होनी चाहिए ।	* विषय का स्पष्ट रूप से विवरण करना । * चर्चा, संवादों का आयोजन करना । * चर्चा में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करना । * विवरण के साथ विषय पर बोलना । * चर्चा, संवादों की ध्वनि मुद्रिकाओं को सुनाकर विषय बतलाना ।	* विषय के अनुकूल सहज रूप से प्रश्न करना । * चर्चा, संवाद में भाग लेने का अवसर प्रदान करना । * सामूहिक रूप से संवाद करने के लिए बताकर निरीक्षण करना । * विषय देकर, विवरण के साथ बात करने के लिए कहना । * विषय से संबंधित विवरण को टिप्पणी द्वारा कहलाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* किसी घटना या प्रसंग के बारे में अबाधित रूप से और सहज रूप से बोलना ।	* प्रसंगों के बारे में स्पष्ट रूप से अर्थग्रहण करना । * प्रसंग के वर्णन को समझना । * घटनाओं के बारे में आलोचना करना । * घटनाओं के बारे में स्पष्ट विषय-संग्रह करना । * प्रसंग और घटनाओं का संबंध कल्पित करना । * बोलते समय अबाधित रूप और स्पष्टता की वृद्धि करना ।	* चर्चा और संवाद के लिए अवसर युक्त गद्य पाठ । * सामाजिक समस्या पर आधारित पाठ हो । * निज जीवन में बच्चे जिन समस्याओं का सामना करते हैं, उनसे संबंधित पाठ हो । * समस्या के सहज परिणाम को समझानेवाला पाठ ।	* अभिरुचि, प्रेरणादायक, ऐतिहासिक घटनाओं से युक्त गद्य पाठ । * निर्दिष्ट प्रसंग युक्त होना चाहिए । * प्रसंग द्वारा बच्चों की कल्पना शक्ति को बढ़ावा देना । * बच्चों के अनुभवों पर आधारित घटनाएँ । * 1 या 2 घटनाएँ होनी चाहिए ।	* प्रश्नोत्तर विधान से घटनाओं के बारे में विषय-संग्रह करना । * घटनाओं के आधार पर विषय को मौखिक रूप से प्रस्तुत करवाना । * भाषण, आशुभाषण, क्रियाकलाप का आयोजन करना । * प्रसंग के बारे में विवरण देने के लिए कहना । * प्रसंग और घटनाओं के संबंध के बारे में वार्तालाप करवाना । * प्रतिदिन की घटनाओं के बारे में बोलना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* समारोह के कार्यक्रमों का निरुपण करना ।	* समारोह का उद्देश्य समझना । * समारोह की तैयारी में भाग लेना । * समारोह में जिम्मेदारी निभाना । * समारोह के कार्यक्रम के संबंध में सामान्य विवरण समझना । * निरूपण-विधान को समझना । * निरूपण का कौशल बढ़ाना । * समारोह में भाग लेकर सुस्पष्ट बातें करना ।	* विद्यालय में आयोजन करने योग्य अथवा समारोह का चित्रण करनेवाले अथवा प्रति-बिंबित करनेवाले गद्य पाठ। * उद्देश्यानुसार समारोह का निर्माण करना । * बच्चे अपने विद्यालय में आयोजन करें । * नतृत्व गुण की वृद्धि करने के अवसर हों । * कार्यक्रम रूपित कर निरुपण करने के लिए प्रेरित करनेवाले पाठ ।	* प्रसंगों के बारे में विवरण देना । * प्रसंगों के बारे में दृश्यों को जनसंचार माध्यमों से दिखाना । * घटनाओं का मार्मिक रुप से विवरण करना । * घटनाओं के बारे में चर्चा करना । * प्रसंग और घटना के बारे में विवरण देना । * घटना के आधार पर बातें करना ।	* समारोह का उद्देश्य बताना । * समारोह के कार्यक्रमों को क्रमानुसार कहलवाना । * कार्यक्रमों की सूची बनवाना । * निर्दिष्ट कार्यक्रम का निरूपण करने के लिए कहना । * निरूपण-कौशल का निरीक्षण करना । * प्रायोगिक कार्यक्रम देकर निरीक्षण करना । * समारोह में सौंपी गयी जिम्मेदारियों को निभाने की ओर ध्यान देना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग करके बोलना ।	* मुहावरे, लोकोक्तियों को पहचानना । * मुहावरे, लोकोक्तियों का लक्षण समझना । * भाषण को रोचक बनाना । * मुहावरे, लोकोक्तियों का अंतर, अर्थ समझना । * उनको अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करके बातें करना ।	* मुहावरे और लोकोक्तियों से युक्त प्रचलित पद्य गीत । * पद्य पाठ (दोहे या चौपाई), लोकगीत ।	* समारोह के उद्देश्य एवं आवश्यकताओं का विवरण देना । * समारोह के आयोजन के लिए तैयारी करना । * कार्यक्रम की क्रमबद्धता का विवरण देना । * समारोहों का (प्रायोगिक रूप में) आयोजन करना । * निरूपण-कौशल के बारे में विवरण देना । * कार्यक्रमों का निरूपण करने का अवसर प्रदान करना ।	* पद्य/गीत गवाना । * लोकोक्ति तथा मुहावरों को पहचानना । * लोकोक्ति तथा मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य लिखना और बोलना तथा उनका अंतर, अर्थ कहलवाना ।

पढ़ना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* ध्वनियों का साम्य और ध्वनि वैषम्य का अर्थ समझकर पढ़ना ।	* शब्द-संपत्ति बढ़ाना । * पद-उच्चारण को सुस्पष्ट रूप से कहना, पढ़ना । * उच्चारण-कौशल को उत्तम बनाना । * ध्वनि साम्य और वैषम्य का अर्थ समझना । * स्पष्ट रूप से पढ़ने की आदत प्राप्त करना ।	* ग्राम्य और प्रचलित भाषा युक्त गद्य पाठ । * वैविध्य/विशिष्ट पद निहित पाठ । * ध्वनि साम्य और वैषम्य पहचाननेवाले पद युक्त पाठ । ग्रामीण सभांषण युक्त पाठ ।	* मुहावरे, लोकोक्तियों के अर्थों का विवरण देना । * प्रचलित मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग व अर्थों का विवरण देना । * प्रचलित मुहावरे, लोकोक्तियों की सूची बनाना ।	* गद्य पाठ पढ़ाना । * विशिष्ट पदों की सूची बनाना । * विशिष्ट पदों का उच्चारण करने के लिए कहना । * ध्वनि साम्य और वैषम्य पहचानकर अर्थ बोलने के लिए कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
			* इनका उपयोग करके बातें करना । * वाक्य-रचना में उनका प्रयोग करना ।	* प्रचलित भाषा के पदों का उच्चारण कराना । * ग्राम्य/प्रचलित भाषा युक्त कहानी/नाटक पढ़ाना । * दैनंदिन जीवन में प्रयुक्त होनेवाले विशिष्ट पदों का साम्य-वैषम्य पहचानकर बोलने के लिए कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* पठित विषय के बारे में सोचकर तार्किक उत्तर देना ।	* सोचने की शक्ति को बढ़ाना । * निर्दिष्ट विषय के बारे में सोचना । * सोचकर तर्क करने के गुण को बढ़ावा देना । * किसी विषय के बारे में निर्णय लेना । * तर्कबद्ध रूप से निर्णय लेना । * लिए हुए निर्णय के बारे में दूसरों से चर्चा करना ।	* सोचने के लिए अवसर देने वाले, तार्किक चिंतन के लिए मौका प्रदान करनेवाले पद्य पाठ । * पद्य पाठ । * प्रचलित कविता । * 12 से 16 पंक्तियाँ । * गेय कविता । * सरल गीत ।	* पद्य पाठ का सुस्पष्ट वाचन करने का अवसर देना । * ग्राम्य/प्रचलित और ग्रांथिक रूप का उच्चारण करना । * उच्चारण करते समय ध्वनि साम्य/वैषम्यों का विवरण देना । * पदों के उच्चारण करने की रीति को स्पष्ट करना। * छात्र अपने दैनंदिन जीवन में प्रयुक्त पदों में साम्य/ वैषम्यों को पहचानना । * ग्राम्य/प्रचलित पदों का प्रयोग करके कहानी अथवा नाटकों को पढ़ना ।	* कविता वाचन के लिए कहना । * कवि के आशय को कहलवाना । * कविता के सारंश को कहलवाना । * कवि के आशय से संबंधित सोच में बदलाव लाना । * तार्किक चिंतन करवाना । * निर्णयों को कहलवाना । * दैनंदिन जीवन के विषयों के बारे में लिये गये निर्णयों को कहलवाना ।

सामर्थ्य	उदेश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* प्रकाशित पाठ्येतर विषय और हस्तलेख (पाण्डु लिपि) पढ़कर प्रश्नों का उत्तर देना ।	* पाठ्येतर विषय पढ़ने में अभिरुचि पैदा करना । * अन्य हस्तलेख पढ़कर समझने की सामर्थ्य प्राप्त करना । * पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने का शौक प्राप्त करना । * प्रश्नों के उत्तर देने का कौशल प्राप्त करना । * प्रश्नों के सही उत्तर देने का कौशल बढ़ाना ।	* अभिरुचि को बढ़ाने एवं चिंतन के लिए अवसर देनेवाले पद्य पाठ । * प्रचलित भक्ति-साहित्य। * गाने योग्य सरल पद्य । * 14 से 16 पंक्तियाँ । * भक्ति साहित्य ।	* कविता को सुरीले ढंग से गाना । * कविता का आशय स्पष्ट करना । * कविता के भावार्थ के बारे में चर्चा करना । * कविताओं के विषय के बारे में सोचने के लिए अवसर प्रदान करना । * विषयों के बारे में तर्क करना । * निर्णय लेने से पहले चर्चा करना ।	* प्रश्नों को रूपित करने के लिए कहना। * प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करना । * दूसरों की लिखावट के पत्रों को पढ़वाना । * पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ाकर उनमें निहित विषय के बारे में प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करना । * उत्तर सुस्पष्ट देने के लिए प्रश्न पूछने के लिए कहना । * सामूहिक रूप में परस्पर प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* विराम चिह्नों को समझकर पढ़ना ।	* लेखन चिह्नों में निहित विशिष्टता को समझना । * ध्वनि के उतार-चढ़ावों के साथ वाचन करना । * परिणामकारी वाचन करना । * पद्य में पदों का विभाजन करके अर्थपूर्ण ढंग से पढ़ना । * अलंकार, छंद के सामान्य लक्षणों की जानकारी प्राप्त करना ।	* विराम चिह्न युक्त पद्य पाठ । * पद्य पाठ । * 03 से 04 पद्य । * गीत/चौपाई । * अलंकार/छंद युक्त कविता ।	* पद्य का भावपूर्ण वाचन करना । * सामूहिक रूप से गाना । * प्रश्नों का निर्माण करना । * प्रश्न पूछकर उत्तर पाना । * हस्तलेख, पत्र-पत्रिकाएँ आदि पढ़ना । * पठित विषय के बारे में प्रश्न पूछकर उत्तर पाना । * परस्पर प्रश्न पूछकर उत्तर देना । * गीत/चौपाई गाना ।	* विराम चिह्नों की विशिष्टता को कहलवाना । * पद्य का वाचन करने के लिए कहना । * गाते समय विराम, अल्पविराम, आदि का निरीक्षण करना । * अलंकार/छंद के संबंध में प्रश्न कर उत्तर पाना । * अलंकारों को पहचानने के लिए कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* लगभग 7000 शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़कर ग्रहण करना ।	* शब्द-संपत्ति बढ़ाना । * पढ़ने का शौक बढ़ाना । * पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की कुशलता बढ़ाना । * स्वाध्याय को उत्तम बनाना । * शब्द कोश का उपयोग करना सीखना । * प्रचलित पदों का अर्थ समझना । * पुस्तकों से प्यार करने का गुण प्राप्त करना ।	* साहित्याभिरुचि की वृद्धि करने की प्रेरणा देनेवाले गद्य पाठ । * परिचित-अपरिचित पदों से युक्त पाठ । * प्रहसन का भाग । * बच्चों के जीवनानुभव के अनुकूल विषयवस्तु ।	* पद्य का सुरीले ढंग से वाचन करना । * समूह में गीत गाना । * विराम चिह्न के बारे में विवरण देना । * विराम चिह्नों पर ध्यान देकर पढ़ना । * विविध कविताओं का वाचन कराना ।	* विषय का वाचन करने के लिए कहना। * पढ़ने के बाद सारांश पूछना । * पूरक साहित्य पढ़वाना । * वाक्य-रचना, उनका प्रयोग आदि कराना । * शब्दों का अर्थ सहित संग्रह करने के लिए कहना । * शब्द-कोश का प्रयोग कराते हुए निरीक्षण करना ।

लिखना

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* समानार्थक, भिन्नार्थक शब्द और पद-समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग करना ।	* शब्दों के लक्षण एवं वैशिष्ट्य समझना । * विविध संदर्भों में शब्दों का प्रयोग करते हुए अर्थ समझना । * समानर्थक और भिन्नार्थक पदों का अर्थ समझना । * शब्द-समूह का अर्थ-ग्रहण करना । * वाक्यों में शब्दों का प्रसंगानुसार प्रयोग करना ।	* हास्य-व्यंग्य प्रसंगों का गद्य पाठ । * समानर्थक, भिन्नार्थक शब्दों से युक्त पाठ । * पद-समूहों से युक्त वाक्य रहें । * हास्य-व्यंग्य प्रसंग किसी के मन को दुःख पहुँचाने वाला न हो । * दैनंदिन जीवन में अनुसरण करने योग्य प्रसंग हो ।	* पाठ का सुस्पष्ट वाचन करना । * स्वपठन के लिए अवसर देना । * शब्दों का अर्थ बताना । * शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना । * पत्र-पत्रिकाओं को पढ़कर अर्थग्रहण करना । * अन्य किताब पढ़ना । * शब्दों का संग्रहण कर अर्थ बताना ।	* शब्दों को लिखवाना। गलतियों को सुधारना । * दिए हुए शब्दों के समानर्थक शब्दों की सूची बनवाना । * भिन्नार्थक शब्दों को पहचानकर वाक्यों में प्रयोग करना । * दिए हुए शब्दों का अर्थ के अनुसार अपने वाक्यों में प्रयोग करने के लिए कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
	* अपने वाक्यों में प्रयोग करने का कौशल बढ़ाना ।		* शब्दकोश की सहायता से शब्दों का अर्थ पहचानना ।	* शब्द-जोड़, भाषा-खेल आदि खिलाना । * दैनिक जीवन में प्रयोग करनेवाले शब्दों का विविध प्रसंगों में प्रयोग करने के लिए कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* कहानियों को नाटकों में, नाटकों को कहानियों में, परिवर्तन करने का एवं कविताओं का सारांश लिखने की सृजनशीलता को बढ़ाना ।	* कहानी और नाटक के सामन्य लक्षण समझना। * कहानी का सारांश स्पष्टतः और पूर्णतः ग्रहण करना । * साहित्य की दूसरी विधाओं में रूपांतर करने में समर्थ होना। * कविताओं का सारांश लिखना । * सृजनात्मकथा की कुशलता बढ़ाना । * साहित्य की विविध विधाओं के बारे में समझना ।	* सृजनात्मकथा बढ़ाने के लिए प्रेरित करने वाले और कल्पना शक्ति को बढ़ानेवाले पद्य पाठ । * आधुनिक पद्य । * 14 से 18 पंक्तियाँ । * निर्दिष्ट विषयवस्तु हो । * बच्चे आसानी से सारांश समझने योग्य हों । * ऐसा पद्य हो जिसको विविध दृष्टिकोणों से परख सके ।	* प्रसंग का आकर्षक विवरण करना । * शब्दों की विशिष्टता का विवरण करना । * भिन्नार्थक, समानार्थक शब्दों को पहचानना । * शब्दों को प्रसंगानुसार लिखने का अभ्यास कराना । अपने वाक्यों में प्रयोग कर लिखवाना । * शब्दों के लिए समानर्थक एवं भिन्नार्थक शब्द लिखवाना ।	* कविता का सार्थक वाचन करने के लिए अवसर देकर निरीक्षण करना । * कविता का सारांश लिखवाना । * कविता के सारांश को विविध दृष्टिकोणों से सोचकर लिखने के लिए कहना । * कहानी कहकर नाटक की विधा में लिखवाना । * नाटक पढ़कर कहानी की विधा में लिखने के लिए कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* निबंध, कहानी, कविता, पत्र, टिप्पणी, कहावत, विस्तार आदि, उचित विराम चिह्नों के साथ सही ढंग से लिखना ।	* साहित्य की विविध विधाएँ समझना । * विराम चिह्नों का प्रयोग समझना । * लिखने में विराम चिह्नों की अनिवार्यता को पहचानना । * विराम चिह्नों का प्रयोग कर वाक्यों में होनेवाले अर्थपरिवर्तन को समझना । * लेखन चिह्नों की विशेषताओं को समझना ।	* राष्ट्रप्रेम उत्पन्न करने वाले, देश की सुन्दरता के आकर्षणीय वर्णन से युक्त गद्य पाठ। * निबंध विधा का गद्य पाठ । * अधिक विराम चिह्नों से युक्त पाठ । * अपने देश के प्रति प्रेम बढ़ानेवाला पाठ । * काल्पनिक गीत ।	* कविता का सरल वाचन। * कविता का विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण करना । * कविता का सारांश लिखकर प्रस्तुत करना । * सारांश का निरूपण करना । * कहानी का नाटक की विधा में, नाटक का कहानी की विधा में, रूपांतरण करने में ध्यान देने के अंश बताना ।	* अनुभव के आधार पर लिखने का अभ्यास कराना । * विराम चिह्न का उपयोग करनेवाले संदर्भों को बताना । * विराम चिह्नों के संबंध में वाचन करते हुए छात्रों को सुनना। * कहावतें लिखवाकर विराम चिह्न डलवाना । * विविध साहित्यिक प्रकारों में उचित विराम चिह्न का प्रयोग कर लिखने के लिए कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
			* सामूहिक रूप से रूपांतर करवाना । * दैनिक जीवन में सुनी हुई कहानियों को नाटक की विधा में लिखना ।	* टिप्पणी देकर विराम चिह्न का प्रयोग करवाना । * पत्र लिखवाना । * निर्दिष्ट विषय देकर निबंध लिखवाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* सरल क्रियात्मक व्याकरण के नियम समझकर उनको लिखावट में उपयोग करना ।	* सरल क्रियात्मक व्याकरण के कुछ अंशों का परिचय देना । * व्याकरण-नियमों के अनुसार लिखने की कुशलता की वृद्धि करना । * स्पष्ट लेखन की क्षमता प्राप्त करना । * लिखावट को आकर्षक बनाने के लिए व्याकरणिक नियमों का पालन करना ।	* सरल क्रियात्मक व्याकरण के नियमों से युक्त गद्य पाठ या व्याकरण के नियमों का गद्य पाठ । * विशिष्ट शब्दों का पाठ । * मुहावरे और लोकोक्ति और अलंकारिक शब्दों का पाठ ।	* पाठ को भावात्मक रूप से पढ़ना । * विराम चिह्नों को ध्यान में रखकर पढ़ना । * विराम चिह्नों से युक्त वाक्यों को लिखवाना । * कहानी, टिप्पणी, कहावतें आदि को उचित विराम चिह्न डालकर लिखवाना । * बाल पत्रिकाओं में प्रसंगानुसार प्रयुक्त विराम चिह्नों का निरीक्षण करवाना ।	* सरल क्रियात्मक व्याकरण के नियमों की सूची बनवाना । * नियमों को क्रमानुसार लिखवाना । * लिखावट में नियमों का उपयोग करके लिखवाना । * भाषा-खेल खिलवाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार और विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* लय, छंद, प्रासों का परिचय प्राप्त करना ।	* लिखने में अभिरुचि पैदा करना । * रचना-कौशल की अभिवृद्धि करना । * पद्य में प्रास और लय की गति समझाना । * पद्य के रसग्रहण पर बल देना । * छंदों के नियमों की जानकारी प्राप्त करना । * पंद्य-रचना के प्रति रुचि बढ़ाना । * पद्य के चरणों के विभाजन का विधान समझना ।	* लयबद्ध, आधुनिक, सरल पद्य । * 10 से 12 पंक्तियाँ । * मध्यकालीन पद्य । * सरल छंदों से युक्त पद्य पाठ । * गाने योग्य पद्य भाग हो ।	* पद्य का प्रासबद्ध वाचन करना । * छदों का सामान्य परिचय करवाना । * सरल छंदों के नियमों की जानकारी देना । * छंदों को पहचानने का अवसर प्रदान करना ।	* पद्य वाचन करने के लिए कहना । * यति (विराम), लय आदि समझाना । * छंदों के बारे में प्रश्न करना । * पद्य के चरणों को पहचानकर लिखने के लिए कहना ।

प्रथम भाषा हिंदी

कक्षा 8 से 10

प्रस्तावना :

कर्नाटक में त्रिभाषा-सूत्र को अपनाया गया है । इसके अनुसार हिन्दी की पढ़ाई प्रथम भाषा हिन्दी तथा तृतीय भाषा हिन्दी के रूप में करायी जाती है । कर्नाटक हिन्दी भाषी राज्य नहीं है । अतः यहाँ हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में वे ही छात्र पढ़ते हैं, जिनकी मातृभाषा हिन्दी हो । हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए यह भी जानना जरूरी है कि भारत के कई प्रान्तों में हिंदी मातृभाषा के रूप में पढ़ाई जाती है, जब कि अन्य प्रांतों में यह सम्पर्क-भाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में पढ़ाई जाती है । दोनों क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण के उद्देश्य समान होते हुए भी प्रयोग एवं कौशल की दृष्टि से उद्देश्यों में किंचित् अंतर अवश्य होता है ।

हिंदी के अध्ययन-अध्यापन को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक दृष्टि से पाठ्यक्रम का होना जरूरी है । इसके लिए स्पष्ट उद्देश्य, निर्दिष्ट सामर्थ्य, सहायक सामग्री, समग्र मूल्यांकन पद्धति का समावेश हो । बच्चों की सर्वतोमुख अभिवृद्धि ही सही शिक्षा की प्रक्रिया होती है ।

आधुनिक बदलते परिवेश को ध्यान में रखकर प्रथम भाषा हिंदी के रूप में कक्षा आठवीं, नौवीं तथा दसवीं का पाठ्यक्रम तैयार किया गया है । भाषा विचारों के आदान-प्रदान एवं अभिव्यक्ति का माध्यम है । अतः बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रस्तुत पाठ्यक्रम की रचना की गई है ।

हिन्दी भारत की स्वीकृत राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है । भाषा की अभिवृद्धि स्वाभिमान का संकेत है । वैज्ञानिक तथा शैक्षणिक संशोधन के अन्तर्गत राष्ट्रीय शिक्षण नीति तथा सन् 2001 तथा 2005 के पाठ्यक्रम को आधार मानकर प्रस्तुत पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है । बच्चों की आवश्यकता एवं सामर्थ्य के अनुगुण प्रादेशिक व सांस्कृतिक परंपरा को ध्यान में रखा गया है । इस दृष्टि से पाठों का चयन होगा । भाषा की रचनात्मक दृष्टि से सार्वत्रिक दृष्टिकोण रखते हुए एकरूपता दर्शायी गई है ।

यद्यपि पाठों की संख्या सीमित हों, तथापि उन पर आधारित भाषायी अभ्यास अधिक तथा विविधतापूर्ण हों, जिससे छात्र भाषा का सही प्रयोग करना सीख सकें । प्रथम भाषा हिन्दी की पहली से सातवीं कक्षाओं को ध्यान में रखकर, आठवीं, नौवीं तथा दसवीं कक्षाओं के पाठ्यक्रम को बनाया गया है ।

पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय एकता, देशप्रेम, धर्मनिरपेक्षता, विश्वबंधुत्व, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि मूल्यों को बच्चों में आत्मसात् कराने हेतु विशेष ध्यान रखा गया है ।

पद्य-विभाग में छंद व अलंकारों का यथावत् प्रयोग हेतु निर्देश दिया गया है । प्रति पाठ के अन्त में लेखक या कवि का परिचय, पाठ का आशय, नये शब्द, टिप्पणी के साथ-साथ विभिन्न स्तरों के भाषाभ्यास देकर, निर्धारित पाठ को ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने का प्रयास किया गया है ।

* * *

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. सुनना, समझना, बोलना और स्पष्ट सस्वर वाचन के कौशल को विकसित करना ।
2. सृजनात्मक अभिव्यक्ति (मौखिक-लिखित) का विकास करना ।
3. ज्ञानार्जन, साहित्य-ज्ञान की अभिवृद्धि, चिंतन तथा आनन्द प्राप्ति के लिए सक्षम बनाना ।
4. शब्द-भंडार की वृद्धि, स्पष्ट उच्चरण के साथ वाक्यों के अर्थ समझना ।
5. शुद्ध एवं प्रभावी भाषा-उपयोग करने की कला का विकास करना ।
6. भाषा का सौन्दर्य जानने की शक्ति, कल्पना और सृजनात्मक भावनाओं का विकास करना ।
7. अपना देश, अपनी भाषा और अपनी संस्कृति के बारे में स्वाभिमान जागृत करना ।
8. साहित्य की विभिन्न विधाओं के बारे में जानकारी देना ।
9. व्याकरण, अलंकार और छंदों के भेदों को सरलता से समझाना ।
10. राष्ट्रीय स्वाभिमान, लोकतंत्र और जीवन मूल्यों की ओर मुख्य रूप से आकृष्ट करना ।
11. लिंग-समानता, जात्यातीतता, विश्वशांति, स्वावलंबन, आत्मगौरव आदि मूल्यों का विकास करना ।
12. पर्यावरण संरक्षण, राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक परंपरा व वैज्ञानिक दृष्टिकोण को साहित्य के द्वारा परिचय कराना ।

13. समकालीन समस्याओं के बारे में चिंतन करके, कारण तथा निवारण की क्षमता का विकास करना ।

14. महिला एवं बालकों के अधिकारों की पहचान और सुविधाओं को प्राप्त करने की क्षमता का विकास करना ।

15. ग्रामीण-जीवन एवं कला को जानने की अभिरुचि बढ़ाना ।

16. पाठ्यपुस्तक में आने वाले सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का परिचय कराना ।

17. कक्षा के स्तरानुसार भाषाई दक्षता का विकास करना ।

18. वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान से संबंधित अध्ययन द्वारा बच्चों में तार्किक दृष्टि जगाना ।

19. बच्चों को कर्नाटक की संस्कृति व सभ्यता का परिचय देना ।

20. परिनिष्ठित भाषा तथा बोल-चाल की भाषा का विषयगत ज्ञान एवं व्यावहारिक ज्ञान का विकास करना ।

21. औपचारिक एवं अनौपचारिक भाषा-रूपों से परिचित कर, उनके प्रयोग की क्षमता बढ़ाना ।

22. विभिन्न संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी भाषा के विविध रूपों को समझने की दक्षता का विकास करना ।

23. सोचने की शक्ति बढ़ाकर अमूर्त भावों को मूर्त बनाने की सामर्थ्य का विकास करना ।

24. हिंदी के किशोर-साहित्य, अखबार व पत्रिकाओं को पढ़कर समझ पाना और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास करना ।

25. कक्षा में बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील सकारात्मक सोच बनाना ।

26. मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील, व्यावहारिक और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास करना ।

27. स्वतंत्र और मौखिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विकास करना ।

28. ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना ।

29. समर्पण, आशावाद, भावनात्मक संतुलन, प्रदूषण, नेतृत्व, समाज सेवा, स्व अनुशासन, आत्म-प्रेम, सहनशीलता, पर्यावरण की सुरक्षा आदि तथ्यों का पाठ्य-पुस्तक रचना में सम्मिलित करें।

8 वीं से 10 वीं कक्षा : भाषा अध्ययन

विवरण तथा अवधि-विभाजन

प्रथम भाषा हिन्दी

सूचना : त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत प्रथम तथा तृतीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन किया जाता है । प्रथम भाषा के लिए सप्ताह में 45 मिनट की 06 अवधियाँ और वार्षिक 230 अवधियाँ होंगी । इनका विभाजन इस प्रकार होगा -

* गद्य, पद्य, क्रियात्मक-व्याकरण छंद एवम् अलंकार	....	150 अवधियाँ
* पत्रलेखन, निबन्ध	....	35 अवधियाँ
* परिहार बोध, परीक्षा	....	25 अवधियाँ
कुल		**210 अवधियाँ**

परिहार बोध, शिक्षण में पिछड़े बच्चों की दृष्टि से अनिवार्य है । प्रति इकाई (घटक) की पढ़ाई के पश्चात् मूल्यांकन करके, दोष-निवारण हेतु योग्य क्रम अपनाना उचित है ।

परीक्षा :

8 वीं तथा 9 वीं कक्षा को सेमिस्टर शिक्षण पद्धति के अनुसार पाठ्यक्रम तथा परीक्षा क्रम बनाया गया है । 10 वीं का वार्षिक परीक्षा-क्रम होने से, उसके अनुसार पाठ्यक्रम एवं परीक्षा क्रम की रचना की गई है ।

8 वीं और 9 वीं कक्षाओं के लिए हर सेमिस्टर के पूर्व में एक लघु-परीक्षा करना अनिवार्य है । 10 वीं कक्षा के लिए चार लघु परीक्षाएँ, अर्धवार्षिक परीक्षा तथा पूर्व-सिद्धता परीक्षा अनिवार्य है ।

अंक :

8 वीं और 9 वीं कक्षा के लिए लिखित परीक्षा 40 अंकों की और मौखिक मूल्यांकन के लिए 10 अंक हर सेमिस्टर हेतु निश्चित किया गया है । 10 वीं कक्षा की वार्षिक-परीक्षा होने से प्रथम भाषा के लिए 125 अंक निर्धारित किये गये हैं । 8 वीं तथा 9 वीं कक्षाओं के लिए परीक्षा-अवधि 90 मिनट तथा 10 वीं कक्षा के लिए 180 मिनट का प्रश्नपत्र होता है ।

* * * * *

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 8

सप्ताह में 6 अवधियों के हिसाब से वर्ष में कुल 210 अवधियाँ प्राप्त होती हैं ।

गद्यभाग

विविध ग्रंथों से चयनित कम-से-कम 08, अधिकाधिक 10 गद्य पाठ होंगे ।

सूचनाएँ :

जिला, राजनैतिक गतिविधियाँ, राष्ट्रीय व्यक्तित्व, लिंग समानता, प्रादेशिकतानुसार तथा शैली की विविधता सहित गद्यभाग में करीब 70 पृष्ठों का समावेश हो ।

साहित्य-विधाएँ : (प्रकार)

कहानी, एकांकी, निबन्ध, प्रसिद्ध व्यक्ति की जीवनी, रेखाचित्र व संस्मरण, लोककथा, पर्यावरण, कलाओं का परिचय, समाज सेवा, राष्ट्रीय एकता, विज्ञान, साहस संबंधी लेख, पत्रलेखन आदि ।

पद्यभाग

250 पंक्तियाँ पद्य-विभाग के लिए निर्धारित हैं ।

कम-से-कम 08 और अधिकाधिक 10 पद्यों से युक्त शीर्षक हों ।

*	आधुनिक-पद्य	....	150 पंक्तियाँ
*	प्राचीन-पद्य	....	100 पंक्तियाँ
		कुल	**250 पंक्तियाँ**

सूचना :

1. हिन्दी के प्रायः सभी कवियों को आद्यता दें ।
2. मध्यकालीन एवं आधुनिक हिन्दी कवियों को आद्यता दें ।
3. गद्य और पद्य दोनों शीर्षक की दृष्टि से समान संख्या में हों ।

कंठस्थ भाग :

कुल 50 पंक्तियाँ

प्राचीन पद्य	....	30 पंक्तियाँ
आधुनिक पद्य	....	20 पंक्तियाँ
कुल		**50 पंक्तियाँ**

रचना :

कुल 40 अवधियाँ

भाषाभ्यास, क्रियाकलाप में सूचित करें ।

1. **निबन्ध :**

   स्वरूप, लक्ष्य, निबन्ध-रचना विधान, सामान्य विषयों पर निबन्ध । (पर्यावरण, माध्यम, स्वास्थ्य, नैर्मलिनीकरण, प्रकृति-प्रकोप)

2. **पत्र-लेखन :**

स्वरूप-सामान्य प्रकार : घरेलू तथा प्रार्थना पत्र

वैयक्तिक-पत्र (1) सम्बन्धियों को पत्र

(2) छुट्टी के लिए पत्र

3. **अपठित गद्यांश/पद्यांश**

* अपठित गद्यांश दें ।
* अपठित/पठित पद्यांश दें ।

4. **लोकोक्तियों का विस्तार**

* प्रचलित कहावतें/लोकोक्तियाँ
* मुहावरों या उक्तियों का प्रयोग

5. **वर्णन**

* यात्रा-कथन, अनुभव, निरीक्षण, सृजनशीलता, स्वरचित वाक्य, लघु कथाएँ, कविताएँ, निबन्ध-लेखन, ढाँचे के आधार पर कहानी-लेखन ।
* अर्थग्रहण ।

व्याकरण

1. वर्णमाला :

    वर्णमाला के स्वर, व्यंजन, योगवाह - इनके भेदों का परिचय दें ।

2. संयुक्ताक्षरों का परिचय दें ।

3. हिन्दी-संधि ।

4. शब्द, वाक्य, उपवाक्य, विराम चिह्नों का सही प्रयोग ।

5. हिन्दी-संस्कृत शब्द :

    देशज, संस्कृत, विदेशी शब्द ।

6. संज्ञा - भेद ।

7. लिंग-वचन संबंधी नियम ।

8. सर्वनाम - स्वरूप और भेद ।

9. विभक्ति-प्रत्यय :
   कारक तथा कारक के भेद, वाक्य-रचना, वाक्य के भेद ।

10. क्रिया - सकर्मक, अकर्मक ।

11. विशेषण ।

12. अव्यय - भेद ।

13. मुहावरे और कहावतें ।

14. छंद :
    छंद का अर्थ, स्वरूप, परिचय ।
    लघु-गुरु, मात्रा, गण, यति, गति ।

15. अलंकार :
    अलंकार का सामान्य परिचय ।
    शब्दालंकार, अर्थालंकार ।
    अनुप्रास अलंकार ।

<u>सूचना</u> : उपर्युक्त व्याकरणिक अंश पाठों पर आधारित हों ।

* * *

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 9

सप्ताह में 06 अवधियों के अनुसार वर्ष में 210 अवधियाँ प्राप्त हैं ।

गद्यभाग

सूचना :

8 वीं कक्षा के स्तर को आगे बढ़ाते हुए, नौवीं कक्षा में करीब 8 से 10 पृष्ठ अधिक हों । हर गद्य पाठ कम-से-कम 3 पृष्ठों का, अधिक-से-अधिक 4 पृष्ठों के मात्र हों । गद्य पाठों की संख्या 8 से 10 तक सीमित हों । ये पाठ गद्य की विभिन्न विधाओं से युक्त हों । गद्य भाग 80 पृष्ठों से अधिक न हों ।

पद्यभाग

पद्यभाग 300 पंक्तियों का हो, जिनमें कम-से-कम 8 तथा अधिक-से-अधिक 10 कविताएँ सम्मिलित हों ।

*	आधुनिक पद्य	....	100 पंक्तियाँ
*	प्राचीन पद्य	....	200 पंक्तियाँ
		कुल	**300 पंक्तियाँ**

सूचना : 1. हिन्दी के प्रायः सभी प्रमुख आधुनिक कवियों को आद्यता दें ।
2. हालावाद, प्रयोगवाद, छायावाद, रहस्यवाद आदि की कविताएँ ली जा सकती हैं ।
3. प्राचीन पद्यों में छंद की दृष्टि से दोहा, चौपाई, सोरठा, पद आदि ले सकते हैं ।
4. शीर्षक की दृष्टि से गद्य व पद्य की संख्या समान हो ।

कंठस्थ : (कुल 60 पंक्तियाँ)

आधुनिक पद्य	....	40 पंक्तियाँ
प्राचीन पद्य	....	20 पंक्तियाँ
कुल		**60 पंक्तियाँ**

सूचना : कंठस्थ कविताएँ नीतिपरक, गेय, भावपूर्ण एवं रसयुक्त हों ।

व्याकरण :

गत वर्ष के व्याकरण की पुनरावृत्ति ।

1. काल : भूतकाल, भविष्यत्काल, वर्तमानकाल ।
2. क्रिया : सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया ।
3. वाच्य : कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य ।
4. संधि : संधि के प्रकार ।
5. समास : समास के भेद ।
6. छंद : मात्रा-नियम, दोहा, चौपाई, सोरठा ।
7. अलंकार : अनुप्रास, यमक, उपमा ।

रचना : (कुल 40 अवधियाँ)

1. निबन्ध : जनसंख्या, दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, देशभक्ति, वर्णनात्मक, कल्पना प्रधान, देखी-सुनी या पढ़ी घटनाओं और दृश्यों का वर्णन, प्राकृतिक शैली के निबन्ध ।
2. पत्रलेखन : आवेदन-पत्र, शिकायती-पत्र, वृत्तांत ।
3. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश
4. लोकोक्तियों/कहावतों का विस्तार
5. ढाँचे के आधार पर कहानी-लेखन ।

* * * * *

प्रथम भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 10

सप्ताह में 06 अवधियों के अनुसार वर्ष में 210 अवधियाँ प्रात होती हैं ।

गद्यभाग

सूचना :

8 वीं तथा 9 वीं कक्षाओं के गद्य-पाठों के अनुगुण शैली को ही आगे बढ़ाया जाय । नौवीं कक्षा से करीब 8-10 पृष्ठ गद्य पाठों के अधिक हों । प्रति पाठ 3-4 पृष्ठों से अधिक न हों । 10 शीर्षकों के अन्तर्गत गद्य पाठ हों । हिन्दी गद्य-साहित्य की विभिन्न विधाओं का समावेश हो । भाषाभ्यास-सहित गद्य-पाठों के कुल पृष्ठ 90 से अधिक न हों ।

पद्यभाग

करीब 300 पंक्तियों के पद्यभाग में 08 से 10 कविताएँ हों ।

प्राचीन पद्य	....	160 पंक्तियाँ
आधुनिक पद्य	....	140 पंक्तियाँ
	कुल	**300 पंक्तियाँ**

सूचना : 1. गद्य-पद्य पाठों के चयन में प्रादेशिकता व राष्ट्रीयता का विशेष ध्यान दें ।
2. शीर्षक की दृष्टि से गद्य-पद्य पाठ समान हों ।

कंठस्थ : कुल 75 पंक्तियाँ मात्र

आधुनिक पद्य	....	करीब 40 पंक्तियाँ
प्राचीन पद्य	....	करीब 35 पंक्तियाँ
	कुल	**75 पंक्तियाँ**

सूचना : 1. कंठस्थ के लिये चयनित कविताएँ नीति प्रधान, गेय एवं रसात्मक हों ।

2. पाठ चयन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर अवश्य ध्यान दें -
राष्ट्रीय व्यक्तित्व, लोककथा, खेल, परिवार, कहानी, प्रौद्योगिकी, सामाजिक समानता, उदारता, जीवन-मूल्य, पर्यावरण-प्रदूषण आदि ।

रचना :

1. निबन्धों का स्वरूप-लक्षण -
राष्ट्रीय त्योहार, भावैक्यता, सामाजिक समस्या, आधुनिक विज्ञान व तंत्रज्ञान, ग्राम-स्वराज्य, ललित कला आदि ।
2. लोकोक्तियों का विस्तार ।
3. पत्र-लेखन : व्यक्तिगत-पत्र, व्यापारिक-पत्र, आवेदन-पत्र, वृत्तांत-लेखन ।
4. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश के माध्यम से सृजनशील-अभिव्यक्ति का विकास करना ।
5. रिपोर्ताज ।

व्याकरण :

पिछली कक्षाओं में पढ़ाये गये व्याकरणांशों की पुनरावृत्ति ।

1. संधि एवं समास (विस्तृत रूप में) ।
2. कृदन्त तथा तद्धित, उपसर्ग-प्रत्यय, शब्द रचना ।
3. क्रिया विशेषण ।
4. वाक्य तथा वाक्य के प्रकार ।
5. वाक्य परिवर्तन और वाक्य विश्लेषण ।
6. लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे ।
7. वाच्य तथा वाच्य परिवर्तन ।
8. छंद : वर्णिक-छंद, मात्रिक-छंद
   कवित्त, सवैया, कुंडलिया, द्रुतविलंबित -
   लक्षण एवं उदाहरण ।
9. अलंकार : शब्दालंकार, अर्थालंकार -
   उपमा, रूपक, दृष्टांत, श्लेष, यमक, अतिशयोक्ति, वक्रोक्ति आदि अलंकार के लक्षण तथा उदाहरण बतायें ।

सूचना : पाठ्य-पुस्तक गद्य-पद्य, भाषाभ्यास सहित कुल 150 पृष्ठों से अधिक न हों ।

* * * * *

6-10 Hindi
Third language

तृतीय भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

तृतीय भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 6 एवं 7

प्रस्तावना

भारत बहुभाषी देश होने के कारण भारत को एक सूत्र में बांधने के लिए देश में 'हिंदी' को 'राष्ट्रभाषा' के रूप में अपनाया गया है । भारत के विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं । इसलिए हिंदी भाषा को संपर्क भाषा के रूप में काम करना है । हिंदी भाषा के अध्ययन से बच्चों में भावनात्मक एकता बढ़ सकती है, हिंदी भाषी या अन्य भाषी राज्यों में कभी जाना हुआ, तो वहाँ के लोगों से संप्रेषण कर सकते हैं और उनमें पारस्परिक सौहार्द्र भावना जाग सकती है । तृतीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिए पाठ्यक्रम इस प्रकार तैयार किया गया है कि वे हिंदी के अध्ययन में रुचि लें और सरलता से सुनें-बोलें, पढ़े-लिखें ।

उद्देश्य

तृतीय भाषा के रूप में छठी और सातवीं कक्षा के हिंदी-शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं :-

1. सामान्य वार्तालाप की दक्षता को विकसित करना ।
2. सरल वाक्यों को समझना और बोलना ।
3. वर्णों को पहचानना, शब्दों को पढ़ना और वाक्यों को पढ़ना ।
4. वर्णों का सुलेखन, संरचक रेखाओं का लेखन, संयुक्ताक्षर लेखन, शब्द लेखन आदि सिखाना ।
5. सरल वाक्यों को क्रमबद्ध रूप से बोलने एवं लिखने की क्षमता को विकसित करना ।
6. छात्रों को अपने आस-पास, सामान्य रूप से प्राप्त वस्तुओं और प्राणियों के बारे में हिंदी में बोलना और लिखना सिखाना ।

7. हिंदी और अन्य प्रदेशों की कुछ विशेषताओं या महान व्यक्तियों के बारे में हिंदी के माध्यम से सामान्य तौर पर जानकारी प्राप्त कर अभिव्यक्त करने का कौशल बढ़ाना ।
8. हिंदी शब्द-भण्डार निर्मित करना (आधारभूत शब्दावली) ।
9. स्वास्थ्य, सफाई, विज्ञान, लोकतंत्र आदि की आधुनिक बातों को हिंदी में सामान्य रूप से समझने और समझाने की दक्षता को विकसित करना ।
10. कर्नाटक के विशिष्ट व्यक्तियों, वस्तुओं, त्यौहारों एवं स्थानों के बारे में सामान्य रूप से हिंदी में समझने एवं समझाने की दक्षता को विकसित करना ।
11. श्रवण, वाचन, लेखन, भाषण (अभिव्यक्ति) कौशलों का विकास करना ।

* * * *

तृतीय भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 6

तृतीय भाषा हिंदी - छठी कक्षा : 'पाठ्यवस्तु'

1.	शब्द-भण्डार	:	200 शब्द
2.	पाठों की संख्या	:	प्रयोग-पाठ - 16, गद्य - 06, पद्य - 04 गिनती : एक से पचास तक
3.	शिक्षण-युक्तियाँ	:	वार्तालाप कहानी परिचित चित्र चमक कार्ड
4.	पाठों की रूप-रेखा	:	शीर्षक पाठ्यवस्तु अभ्यास क्रियाकलाप अध्यापन संकेत
5.	पाठों का स्तर	:	अति सरल से सरल

6.	परियोजना	:	01
7.	पाठ-चयन	:	**वर्णमाला :** (शब्द और चित्र द्वारा) स्वर मात्राएँ और बारहखड़ी । परिचित परिवेश के चित्रों द्वारा हिंदी शब्दों का परिचय ।

प्रयोग पाठ : मैं हूँ, हम हैं, तू है, तुम हो, आप हैं, यह है, वह है, ये हैं, वे हैं, मेरा, हमारा, तेरा, तुम्हारा, इसका, इनका, उसका, उनका, का, की, के, आया, आये, आयी, आयीं, था, थी, थे, ता, ती, ते, तीं रहा, रही, रहे, जायेगा, जायेगी, जायेंगे, जायेंगी ।

[इन विषयों पर छात्र-छात्राओं की आयु को ध्यान में रखकर प्रयोग-पाठों की रचना हो]

गद्य पाठ : कहानी (नीतिपरक) - (2)

जीवनी

संवाद

पारिवारिक पाठ

पालतू जानवार

[इन विषयों पर आधारित पाठों की रचना सरल भाषा में हो]

पद्य पाठ : लयबद्ध गीतों की रचना करें ।

सूचना : * पाठ का चयन करते समय छात्र-छात्राओं की आयु को ध्यान में रखें ।

* चयनकर्ता अथवा पाठ्य-पुस्तक के लेखक अन्य प्रकार के उचित पाठों का चयन कर सकते हैं या लिख सकते हैं ।
* पाठों में चित्रों का प्रयोग होना ज़रूरी है ।

पाठ्य-पुस्तक : कुल पृष्ठों की संख्या : 100

कुल वार्षिक अवधि : 140

अवधियों का आबंटन

विषय	**तृतीय भाषा**
गद्य, पद्य, क्रियात्मक व्याकरण	100
पत्र-लेखन, सरल निबंध,	20
परिहार बोधन, परीक्षा	20
कुल	**140**

* * * *

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
1. * अपरिचित परिवेश में हिन्दी के बालगीतों या लयबद्ध गीतों को सुनना तथा समझना ।	* हिन्दी के बालगीतों या प्रासगीतों को सुनने के साथ-साथ अर्थग्रहण करने की क्षमता का विकास करना ।	* दो बालगीत या प्रासगीत हों ।	* बालगीतों को पढ़ना । * छात्रों द्वारा कहलाना ।	* अन्य बालगीत या लयबद्ध गीतों को कहलाना ।
2. * संरचक-रेखाएँ समझना तथा लिखना ।	* संरचक-रेखाओं को लिखने की क्षमता को विकसित करना ।	* हिन्दी वर्णों की रचना के लिए उपयोगी संरचक-रेखाओं का पाठ ।	* संरचक-रेखाओं को लिखना । * संरचक-रेखाओं को लिखाना ।	* संरचक-रेखाओं को लिखाना तथा गलतियों को सुधारना ।
3. * हिन्दी वर्णों को लिखना तथा उनका सही उच्चारण करना ।	* हिन्दी वर्णों को सुंदर तथा सुड़ौलता से लिखने की क्षमता का विकास करना ।	* शब्द और चित्र युक्त वर्णमाला पाठ ।	* चित्र दर्शाते हुए उसके नीचे लिखे शब्दों को पढ़ना । * छात्रों द्वारा पढ़ाना ।	* चमक कार्ड का उपयोग करके वर्णों को पहचानना और उच्चारण कर लिखाना। * वर्णों का सही उच्चारण कराना । * मिलते-जुलते वर्णों को समझाना । **उदा :** च,ज,य,थ,ढ, द,छ,घ,ध

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
* स्वर मात्राएँ तथा बारहखड़ी समझना ।	* हिन्दी वर्णों का सही उच्चारण करने की क्षमता का विकास करना । * बारहखड़ी को समझने की क्षमता का विकास करना ।	* बारहखड़ी का पाठ ।	* वर्ण पहचानने के साथ सही उच्चारण कराना ।	* बारहखड़ी लिखाना । * सही उच्चारण कराना ।
4. * परिचित-परिवेश के लिए उपयुक्त हिन्दी शब्दों को समझना ।	* परिचित परिवेश के चित्रों को देखकर हिन्दी में समझने की क्षमता का विकास करना । * चित्रों के लिए उपयुक्त हिंदी शब्दों को समझने की क्षमता का विकास करना ।	* फल-फूल, जानवर साग-सब्ज़ी आदि के चित्रों के लिए, हिन्दी शब्दों का प्रयोग । * दो-चार पाठ हों ।	* चित्रों को दर्शाते हुए उन चित्रों के नीचे लिखे हिन्दी शब्दों को पढ़ना । * चित्रों की सहायता से उनके नीचे लिखे हिन्दी शब्दों को पढ़ाना ।	* चित्रों की सहायता से प्रश्न पूछकर मूल्यांकन करना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
5. * 'मैं-हूँ ।' और 'हम-हैं।' का सही प्रयोग समझना ।	* 'मैं-हूँ' और 'हम-हैं' का प्रयोग समझने की क्षमता का विकास करना ।	* 'मैं-हूँ' का प्रयोग-पाठ । * 'हम-हैं' का प्रयोग - पाठ । (पाठ चित्रसहित हो)	* 'मैं-हूँ' और 'हम-हैं' का प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * 'मैं-हूँ' और 'हम-हैं' का प्रयोग समझाना ।	* 'मैं-हूँ' और 'हम-हैं' का प्रयोग वाक्यों द्वारा कराना ।
6.* 'तू-है','तुम-हो' और 'आप-हैं' का सही प्रयोग समझना ।	* 'तू-है', तुम-हो, और आप-हैं का प्रयोग समझने की क्षमता का विकास करना ।	* 'तू-है' का प्रयोग-पाठ । * 'तुम-हो' का प्रयोग - पाठ । * 'आप-हैं' का प्रयोग - पाठ । (पाठ चित्रसहित हो)	* 'तू-है', 'तुम-हो' और 'आप-हैं' का प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * 'तू-है','तुम-हो' और 'आप-हैं' का प्रयोग समझाना ।	* 'तू-है', 'तुम-हो' और 'आप-हैं' - इनका प्रयोग वाक्यों द्वारा कराना । * प्रायोगिक अभ्यास द्वारा सिखाना और प्रश्न पूछना ।
7. * 'यह-है' और 'वह-है' का सही प्रयोग समझना ।	* 'यह-है' और 'वह-है' का सही प्रयोग समझने की क्षमता का विकास करना ।	* 'यह-है' का प्रयोग - पाठ । * 'वह-है' का प्रयोग - पाठ । (पाठ चित्रसहित हो)	* 'यह-है' और 'वह-है' का प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * 'यह-है' और 'वह-है' का प्रयोग समझाना ।	* 'यह-है' और 'वह-है' - इनका प्रयोग वाक्यों द्वारा कराना । * वस्तुओं का उपयोग करके निकट-दूर का अंतर समझाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
8. * 'ये-हैं' और 'वे-हैं' का सही प्रयोग समझना ।	* 'ये-हैं' और 'वे-हैं' का सही प्रयोग समझने की क्षमता का विकास करना ।	* ये-हैं का प्रयोग-पाठ । * वे-हैं का प्रयोग-पाठ । (पाठ चित्रसहित हो)	* 'ये-हैं' और 'वे-हैं' का प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * इनका प्रयोग समझाना ।	* 'ये-हैं' और 'वे-हैं' - इनका प्रयोग वाक्यों द्वारा कराना ।
9. * मेरा, हमारा का सही प्रयोग समझना ।	* मेरा, हमारा का प्रयोग समझने की क्षमता का विकास करना ।	* मेरा, हमारा का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * मेरा, हमारा का प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * मेरा, हमारा, शब्दों द्वारा वाक्यों की रचना कराना ।
10. * तेरा, तुम्हारा का सही प्रयोग समझना ।	* तेरा, तुम्हारा का प्रयोग समझने की क्षमता का विकास करना ।	* तेरा, तुम्हारा का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * तेरा, तुम्हारा का प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * तेरा, तुम्हारा शब्दों द्वारा वाक्यों की रचना कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
11.* 'इसका, इनका' का सही प्रयोग समझना ।	* इसका, इनका, का प्रयोग समझने की क्षमता का विकास करना ।	* इसका, इनका, का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * इसका, इनका का प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * इसका, इनका - शब्दों द्वारा वाक्यों की रचना कराना ।
12.* 'उसका, उनका' का सही प्रयोग समझना ।	* उसका, उनका, का प्रयोग समझने की कुशलता का विकास करना ।	* उसका, उनका का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * उसका, उनका का प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * उसका, उनका - शब्दों द्वारा वाक्यों की रचना कराना ।
13. * का, की, के, का सही प्रयोग समझना ।	* का, की, के, का सही प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना ।	* का, की, के - प्रयोग युक्त पाठ ।	* प्रयोग युक्त पाठ पढ़ना । * प्रयोग युक्त पाठ पढ़ाना । * का, की, के, का वाक्यों द्वारा प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यंकन हो । * का, की, के, का वाक्यों में प्रयोग कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
14. * आया, आये, का सही प्रयोग समझना ।	* आया, आये शब्दों का प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना ।	* आया, आये का प्रयोग युक्त पाठ ।	* प्रयोग युक्त पाठ पढ़ना। * पाठ पढ़ाना । * आया, आये का वाक्यों में प्रयोग करके समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * आया, आये, शब्दों से वाक्यों की रचना कराना ।
15. * आयी, आयीं का सही प्रयोग समझना ।	* आयी, आयीं आदि प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना	* आयी-आयीं का प्रयोग युक्त पाठ ।	* प्रयोग सिखाना । * प्रयोग युक्त पाठ पढ़ाना। * आयी, आयीं, का प्रयोग वाक्यों द्वारा करके समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * वाक्यों की रचना करायें ।
16. * था, थे, का सही प्रयोग समझना ।	* था, थे, का प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना ।	* था, थे, का प्रयोग युक्त पाठ ।	* प्रयोग सिखाना । * प्रयोग युक्त पाठ पढ़ाना । * था, थे, का वाक्यों द्वारा प्रयोग करके समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * वाक्यों की रचना करायें ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
17. * थी, थीं का सही प्रयोग समझना ।	* थी, थीं का प्रयोग समझने की क्षमता का विकास करना ।	* थी, थीं का प्रयोग-पाठ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * थी, थीं का प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * थी, थीं का प्रयोग कराना ।
18. * ता, ते का प्रयोग समझना ।	* ता, ते का प्रयोग करने की कुशलता का विकास करना ।	* ता, ते, का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * ता, ते, का प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * ता, ते, का प्रयोग कराना ।
19. * ती, तीं का प्रयोग समझना ।	* ती, तीं के प्रयोग करने की कुशलता का विकास करना ।	* ती, तीं का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * ती, तीं, का प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * ती, तीं का प्रयोग कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
20. * रहा, रही, रहे का प्रयोग समझना ।	* रहा, रही, रहे का प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना ।	* रहा, रही, रहे, का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * प्रयोग-पाठ पढ़ाना । * रहा, रही, रहे का प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * रहा, रही, रहे, का प्रयोग करवाना ।
21. * जायेगा, जायेंगे का प्रयोग समझना ।	* जायेगा, जायेंगे का प्रयोग करने की कुशलता का विकास करना ।	* जायेगा, जायेंगे का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना । * पाठ पढ़ाना । * प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * प्रयोग कराना ।
22. * जायेगी, जायेंगी का प्रयोग समझना ।	* जायेगी, जायेंगी का प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना ।	* जायेगी, जायेंगी का प्रयोग-पाठ ।	* प्रयोग-पाठ पढ़ना। * प्रयोग-पाठ पढ़ाना। * प्रयोग समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * प्रयोग कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
23. * सरल बालगीत/ प्रासगीतों को सुनना तथा समझना ।	* बालगीतों/प्रासगीतों को सुनकर समझने की क्षमता का विकास करना ।	* सरल बालगीत/प्रासगीत (दो बालगीत हों)	* अभिनय के साथ वाचन करना । * अभिनय के साथ वाचन कराना ।	* छात्रों द्वारा अन्य बालगीतों/प्रासगीतों/ देशभक्ति गीतों का वाचन कराना ।
24. * परिचित परिवेश का संवाद/ वार्तालाप समझना ।	* संवाद/वार्तालाप समझने की क्षमता का विकास करना ।	* परिचित विषय से संबंधित संवाद/ वार्तालाप का पाठ । (पाठ से संबंधित दो-तीन चित्र हों)	* पाठ को पढ़ना । * पाठ को पढ़ाना । * पाठ को समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो ।
25. * नैतिक मूल्य समझना और अपनाना ।	* नैतिक मूल्य समझने की क्षमता का विकास करना ।	* पंचतंत्र की दो कहानियाँ । * कहानियाँ सरल हों । (कहानी के अनुसार चित्र हों)	* कहानी पढ़ना । * कहानी पढ़ाना । * कहानी की सीख और नैतिक मूल्य को समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * अन्य नैतिक मूल्य की कहानियों को कहलाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार तथा विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
26. * राष्ट्रीय व्यक्ति का परिचय प्राप्त करना ।	* राष्ट्रीय व्यक्ति की महानता के बारे में समझने की क्षमता का विकास करना ।	* कोई एक प्रसिद्ध व्यक्ति की जीवनी हो । * जीवनी छात्रों की उम्र के अनुसार हो । (चित्र के साथ हो)	* जीवनी पढ़ना । * जीवनी पढ़ाना । * जीवनी में उल्लिखित सूचनाओं को समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * अन्य जीवनियाँ कहलाना ।
27. * देशप्रेम/सांस्कृतिक मूल्य समझना ।	* देशप्रेम को उत्पन्न करना ।	* राष्ट्रीय भावना बढ़ाने-वाला कोई पाठ । * पाठ सरल हो । * चित्र के साथ हो ।	* पाठ पढ़ना । * पाठ पढ़ाना । * राष्ट्रीय भावना के बारे में कहना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * राष्ट्रीय त्यौहारों के बारे में कहलाना ।
28. * प्रासगीत / बालगीत ।	* बालगीत/प्रासगीत समझने की कुशलता का विकास करना ।	* बालगीत/प्रासगीत । * राष्ट्रीय भावना हो । (दो बालगीत हों)	* अभिनय के साथ वाचन करना । * अभिनय के साथ वाचन कराना ।	* अन्य प्रासगीत/ बालगीतों को कहलाना ।

तृतीय भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 7

तृतीय भाषा हिंदी - सातवीं कक्षा : 'पाठ्यवस्तु'

1.	शब्द-भण्डार	:	300 नये शब्द
2.	सेतुबंध शिक्षण	:	छठी कक्षा में पठित अंशों के आधार पर । (भाषा कौशलों के विकास के लिए सरल-भाषा द्वारा परिचित परिवेश के साधनों का प्रयोग करना)
3.	पाठों की संख्या	:	गद्य - 12, पद्य - 06 गिनती : एक से सौ तक
4.	पाठों की रूप-रेखा	:	शीर्षक पाठ्यवस्तु अभ्यास क्रियाकलाप अध्यापन संकेत
5.	पाठों का स्तर	:	अति सरल से सरल

6. कविताओं की संख्या : पद्य - 06 (बीस पंक्तियाँ कंठस्थ के लिए)
(लयबद्ध कविता)

7. परियोजना : 01

8. पाठ-चयन

गद्य पाठ : कहानी (नीतिपरक/सामाजिक मूल्य), एकांकी, एक ऐतिहासिक स्थल का परिचय, सरल निबंध, जंगली जानवार का परिचय, छुट्टी पत्र, नेता का परिचय, पर्यावरण, राष्ट्रीय-त्यौहार (कोई एक), सफाई, सेवा मनोभाव ।
[पाठ्यवस्तु के चयन के अवसर पर इन विषयों की ओर ध्यान दें]

पठ्य पाठ : लयबद्ध गीतों की रचना या चयन करना ।

व्याकरण : संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, द्विरुक्ति, विरुद्धार्थक शब्द, प्रेरणार्थक क्रिया, जो और सो का प्रयोग, मुहावरों का प्रयोग ।
[इन व्याकरण विषयों का सामान्य परिचय की ओर ध्यान दें । व्याकरण विषयों का परिचय निगमन विधि या क्रियात्मक व्याकरण विधि द्वारा दें ।]

सूचना :
* पाठ का चयन करते समय छात्र-छात्राओं की आयु को ध्यान में रखें ।
* चयनकर्ता अथवा पाठ्य-पुस्तक के लेखक अन्य प्रकार के उचित पाठों का चयन कर सकते हैं या लिख सकते हैं ।
* पाठों में चित्रों का प्रयोग सुविधा अनुसार हो ।

पाठ्य-पुस्तक : कुल पृष्ठों की संख्या : 120

कुल वार्षिक अवधि : 140

अवधियों का आबंटन

विषय	तृतीय भाषा
गद्य, पद्य, क्रियात्मक व्याकरण	100
पत्र-लेखन, सरल निबंध,	20
परिहार बोधन, परीक्षा	20
कुल	**140**

* * * *

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
1. * सरल संवाद/ वार्तालाप सुनना और समझना ।	* सरल संवाद/वार्तालाप सुनकर समझने की क्षमता का विकास करना ।	* संवाद/वार्तालाप का पाठ । * परिचित परिवेश के किसी एक विषय पर संवाद हो ।	* संवाद/वार्तालाप पढ़कर समझाना । * बच्चों से पढ़ाना । * संवाद की विशेषताओं को समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * एक विषय देकर पक्ष-विपक्ष में बातें कराना ।
2. * बालगीत/प्रासगीत सुनकर समझना ।	* बालगीत/प्रासगीत सुनकर अर्थ ग्रहण करने की कुशलता का विकास करना ।	* गाने योग्य बालगीत/ प्रासगीत हो । * सरल भाषा में हो ।	* अभिनय के साथ गायन करना । * अभिनय के साथ वाचन कराना । * नये शब्दों का अर्थ समझाना । * समूह में छात्रों से गायन कराना । * छात्रों को गायन का अवसर देना - छोटे-छोटे बालगीतों की रचना दोहराना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * अन्य बालगीत/ प्रासगीतों को गवाना । * बालगीत कंठस्थ कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
3. * 'सद्भावना' मूल्य को समझना ।	* 'सद्भावना' बढ़ाने की क्षमता का विकास करना ।	* सद्भावना से युक्त एक सामाजिक कहानी हो । * छात्रों की उम्र के अनुसार हो । * सरल शब्दों का प्रयोग हो ।	* पाठ पढ़ना । * पाठ पढ़ाना । * सद्भावना को समझाना । * नये शब्दों को समझाने के लिये चमक कार्ड़ों का प्रयोग करें । * सद्भावना युक्त कहानियों के अंशों को बताना । **जैसे** - गाँधीजी के जीवन की कोई घटना।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो। * सद्भावना अभिव्यक्त करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन करना ।
4. * 'परोपकार' को समझना ।	* 'परोपकार' की भावना को समझने की क्षमता को विकास करना ।	* परोपकार से युक्त एक ऐतिहासिक / सामाजिक कहानी हो । * कहानी सरल भाषा में हो ।	* कहानी पढ़ना । * कहानी पढ़ाना । * परोपकार के रूपों को समझाना । * नये शब्दों को श्यामपट पर लिखकर अर्थ समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * परोपकार की अन्य कहानियों को कहलवाना । * छात्रों द्वारा अपने जीवन में किए गये किसी परोपकार को कहलवाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
5. * 'राष्ट्रप्रेम' को जानना ।	* राष्ट्रप्रेम समझने की दक्षता का विकास करना ।	* राष्ट्रप्रेम से युक्त कोई एक सरल पद्य हो । * पद्य सरल भाषा में हो ।	* अभिनय के साथ पद्य का वाचन करना । * अभिनय के साथ पद्य का वाचन कराना । * पद्य में प्रतिपादित राष्ट्रप्रेम को समझाना ।	* पद्याधारित मूल्यांकन हो । * राष्ट्रप्रेम से युक्त अन्य पद्यों को सुनाना । * पद्य को कंठस्थ कराना ।
6. * साहसिक भावना को समझना ।	* साहसिक कार्य करने की क्षमता का विकास करना ।	* साहसिक भावना युक्त कोई एक ऐतिहासिक एकांकी । * बच्चों की मानसिकता के अनुरूप हो । * एकांकी सरल भाषा में हो । * पुरस्कृत साहसी बच्चों से संबंधित कोई घटना सुनाना ।	* एकांकी पढ़ना । * छात्रों द्वारा पढ़ाना । * कुछ पात्रों का अभिनय कराना ।	* एकांकी पर आधारित मूल्यांकन हो । * कुछ पात्रों का अभिनय कराना । * देखी, पढ़ी और सुनी किसी साहसिक कहानी/घटना को स्मृति के आधार पर सुनाने को कहना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
7. * ऐतिहासिक स्थान का परिचय पाना ।	* ऐतिहासिक स्थल की महत्ता को समझाना ।	* ऐतिहासिक परिचय युक्त कोई एक पाठ (स्थल परिचय) । * पाठ उस स्थल की विशेषताओं से संपन्न हो ।	* पाठ को पढ़ना । * पाठ को पढ़ाना । * ऐतिहासिक स्थल का चित्र दिखाना । आस-पास के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों की विशेषताओं को समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * अन्य ऐतिहासिक स्थलों का परिचय कराना ।
8. * आदर भावना को समझना ।	* आदर भावना को अपनाने की क्षमता को बढ़ाना ।	* आदर भावना युक्त कोई पद्य । * पद्य सरल और बच्चों की उम्र के अनुसार हो ।	* पद्य का वाचन अभिनय के साथ करना । * अभिनय के साथ पद्य का वाचन कराना । * आदर भावना से युक्त गद्य/पद्य के कैसटों को सुनाना ।	* पद्याधारित मूल्यांकन हो । * अन्य आदर भाव युक्त पद्यों/कहानियों को सुनाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
9. * वैज्ञानिक भावना को समझना ।	* वैज्ञानिक भावना समझने की क्षमता का विकास करना ।	* किसी एक वैज्ञानिक विषय पर एक सरल निबंध हो ।	* पाठ संबंधी चित्र/चार्ट का प्रयोग कर पाठ पढ़ाना । * अन्य वैज्ञानिक विषय की विशेषताओं को कहना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * किसी एक वैज्ञानिक विषय पर संवाद का आयोजन करना ।
10. * 'राष्ट्रीय व्यक्तित्व' की जीवनी को जानना ।	* किसी राष्ट्रीय व्यक्ति की जीवनी को समझने के साथ, उनके गुणों को अपनाने की प्रेरणा देना ।	* किसी राष्ट्रीय व्यक्ति का जीवनी-पाठ । * पाठ सरल और बच्चों की उम्र के अनुसार हो ।	* जीवनी पढ़ना तथा पढ़ाना । * अन्य राष्ट्रीय व्यक्तियों की जीवनी कहना ।	* जीवनी-पाठ के आधार पर मूल्यांकन हो । * अन्य राष्ट्रीय व्यक्तियों की जीवनी को कहलाना ।
11. * वीरता की भावना को समझना ।	* वीर भावना को समझने की क्षमता का विकास करना ।	* वीर भावना युक्त कहानी हो । * कहानी-पाठ सरल और बच्चों की उम्र के अनुसार हो ।	* कहानी पढ़ना । * कहानी पढ़ाना । * अन्य वीर भावना युक्त कहानियाँ सुनाना ।	* कहानी पाठाधारित मूल्यांकन हो । * अन्य वीर भावना युक्त कहानियों को कहलाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
12.* राष्ट्रीय एकता की भावना को समझना ।	* राष्ट्रीय एकता की भावना को समझने की क्षमता का विकास करना ।	* राष्ट्रीय एकता से युक्त पद्य । * पद्य सरल भाषा में हो । * बच्चों की रुचि के अनुसार हो ।	* पद्य का वाचन अभिनय के साथ करना । * पद्य का वाचन अभिनय के साथ कराना । * अन्य राष्ट्रीय एकता से युक्त पद्यों को कहना । * सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना ।	* पद्याधारित मूल्यांकन हो । * राष्ट्रीय एकता से युक्त पद्यों के कैसटों को सुनाना । * राष्ट्रीय त्योहारों का आयोजन शाला में करना ।
13. * 'सरल जीवन' का अर्थ समझना ।	* सरलता से जीवन बिंताने की क्षमता का विकास करना ।	* किसी प्रख्यात व्यक्ति का सरल जीवन युक्त पाठ । * पाठ सरल और बच्चों के लिए प्रेरणाप्रद हो ।	* पाठ पढ़ना । * पाठ पढ़ाना । * अन्य व्यक्तियों का सरल जीवन बताना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * अन्य व्यक्तियों के सरल जीवन को कहलाना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
14. * 'त्याग भावना' के महत्व को समझना ।	* त्याग भावना को समझने की क्षमता का विकास करना ।	* त्याग भावना युक्त पद्य हो । * पद्य सरल भाषा में हो ।	* पद्य का वाचन अभिनय के साथ करना । * छात्रों से वाचन कराना । * अन्य कविताओं को गाकर सुनाना ।	* पद्याधारित मूल्यांकन हो । * अन्य कविताओं का गायन करवाना ।
15. * 'समानता की भावना' को समझना ।	* समानता की भावना को समझने की क्षमता का विकास करना ।	* समानता-भावना से युक्त पाठ हो । * पाठ बच्चों की उम्र के अनुसार हो ।	* पाठ को पढ़ना । * पाठ को पढ़ाना । * अन्य समानता की भावना युक्त कहानियों को कहना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * अन्य समानता भाव युक्त कहानियों को कहलाना और नाटक आदि का प्रदर्शन कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
16. * 'पर्यावरण की महत्ता' को समझना ।	* पर्यावरण की महत्ता को समझने की कुशलता बढ़ाना ।	* पर्यावरण से संबंधित एक निबंध । * निबंध वैज्ञानिक ढंग से लिखित हो । * पर्यावरण संबंधी व्यक्तियों के बारे में जानकारी ।	* निबंध पढ़ना । * निबंध पढ़ाना । * अन्य विषयों पर निबंध लिखाना । * पर्यावरण संबंधी विविध क्रिया-कलापों का आयोजन करना । **उदा :** कक्षा की स्वच्छता आस-पास सफाई आदि ।	* निबंधाधारित मूल्यांकन हो । * शाला में निबंध-प्रतियोगिता का आयोजन करना ।
17. * 'जंगली जानवारों' का परिचय पाना ।	* जंगली जानवारों का सामान्य परिचय जानने की कुशलता का विकास करना ।	* जंगली जानवारों से संबंधित पाठ । * पाठ सामान्य परिचय देनेवाला हो ।	* पाठ पढ़ना । * पाठ पढ़ाना । * जानवरों के चित्र दिखाकर उनके बारे में समझाना ।	* पाठाधारित मूल्यांकन हो । * छात्रों द्वारा अन्य प्राणियों के चित्रों का संग्रह कराना ।

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
18. * अहिंसा भावना को समझना ।	* अहिंसा भावना को अपनाने की कुशलता का विकास करना ।	* अहिंसा भावना युक्त पद्य हो । * सरल और बच्चों की उम्र के अनुसार हो ।	* पद्य का वाचन अभिनय के साथ करना । * अभिनय के साथ वाचन कराना । * अन्य अहिंसा भाव युक्त गीतों को गाना । * अहिंसा के महत्व को समझाना ।	* पद्याधारित मूल्यांकन करना । * अन्य गीतों को कहलाना । * अहिंसा की महत्ता के बारे में प्रश्न पूछना ।

व्याकरण

सामर्थ्य	उद्देश्य	विषय विस्तार/विधा	प्रविधि	मूल्यांकन
1. * संज्ञा का सामान्य परिचय समझना ।	* संज्ञा का सामान्य परिचय पाकर उसके प्रयोग के बारे में जानकारी प्राप्त करना ।	* संज्ञा पाठ । * पाठ निगमन विधि के अनुसार लिखित हो । * पाठ उदाहरण युक्त हो । * उदाहरण छात्रों की उम्र के अनुसार हो ।	* निगमन विधि द्वारा समझाना । * उदाहरणों द्वारा पहचानने के लिए कहना । * चमक कार्ड़ों का प्रयोग कर पढ़ाना ।	* उदाहरणों के आधार पर मूल्यांकन हो । * चमक कार्ड़ दर्शाकर संज्ञा शब्दों को चुनने को कहना ।
2. * सर्वनाम, विशेषण क्रिया का सामान्य परिचय प्राप्त करना ।	* सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का सामान्य परिचय पाना । * वाक्यों में उनका प्रयोग करने का कौशल बढ़ाना ।	* संज्ञा पाठ । * पाठ निगमन विधि द्वारा अनुसरणीय हो । * पाठ उदाहरण युक्त हो । * उदाहरण छात्रों की रुचि के अनुसार हो ।	* निगमन विधि द्वारा समझाना । * उदाहरणों द्वारा पहचानना । * चमक कर्ड़ों का प्रयोग करना ।	* उदाहरणों के आधार पर मूल्यांकन हो । * चमक कार्ड़ लिखवाना ।

तृतीय भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 8, 9 एवं 10

प्रस्तावना :

"कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी" - हिंदी के प्रसिद्ध एवं आदि कवि चंदबरदाई ने अपनी रचना "पृथ्वीराज रासो" में यह बात कही थी, जिसका अर्थ है हर मील की दूरी पर पानी का स्वाद बदलता है और हर चार मील की दूरी पर वाणी बदलती है ।

भारत देश के संदर्भ में यह तथ्य अत्यंत प्रासंगिक है । इस दृष्टि से देश की भावात्मक एकता को बनाए रखने में हिंदी का योगदान अमूल्य है । कर्नाटक सरकार ने आठवीं, नौवीं तथा दसवीं कक्षाओं के अध्यापन में अंग्रेजी, मातृभाषा या प्रांतीय भाषा तथा हिंदी अर्थात् राष्ट्रभाषा के रूप में त्रिभाषा सूत्र को अपनाया है । इसके अंतर्गत हिंदी को प्रथम भाषा तथा तृतीय भाषा के रूप में अलग-अलग स्तरों पर सिखाया जाता है । हिंदी सरल सुबोध तथा प्रवाहमयी भाषा है । व्यावहारिक जीवन-यापन के लिए हिंदी सीखना अत्यंत आवश्यक है । आधुनिक एवं वैश्वीकरण के संदर्भ में हिंदी का प्रयोजनमूलक महत्व भी बढ़ता जा रहा है । इस तथ्य को मद्देनज़र रखते हुए तीसरी भाषा के रूप में हिंदी-पाठ्यक्रम की तैयारी की गई है ।

तृतीय भाषा हिंदी सीखने के उद्देश्य :

1. दैनिक जीवन में हिंदी में समझने-बोलने के साथ-साथ लिखने की क्षमता का विकास करना ।
2. हिंदी के ज़रिए अपने अनुभवों को सहज अभिव्यक्ति देने में सक्षम बनना ।
3. पढ़ने में रुचि उत्पन्न करना और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास करना ।
4. अपनी मातृभाषा और परिवेशगत भाषा के संदर्भ में हिंदी की रचनाओं की जानकारी देना ।
5. भाषा और बोली का अंतर तथा पारस्परिक संबंध समझाकर हिंदी के ज्ञान का विकास करना ।
6. अल्पावधि में हिंदी के व्यापक व विविध स्वरूपों की सामान्य जानकारी उपलब्ध कराना ।
7. हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकारों व उनके विचारों का परिचय कराना ।
8. राष्ट्रीय स्तर पर भाषाई क्षमता बढ़ाना और आत्मविश्वास जगाना ।
9. हिंदी शिक्षण द्वारा बच्चों में देश की भावात्मक एकता का विकास करना ।
10. विभिन्न साहित्यिक विधाओं के बारे में जानकारी देना ।
11. रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास करना ।
12. छात्रों में सुनना, समझना, बोलना, पढ़ना और लिखना - इन भाषायी कौशलों का विकास करना ।

तृतीय भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 8

सेतुबंध कार्य - सातवीं कक्षा में पठित पाठों के आधार पर हो ।

1. साल में उपलब्ध होने वाले कुल कालांश : **140**

इन अवधियों का विभाजन यूँ होगा -

1.	गद्य एवं पद्य (अध्ययन)	-	80 कालांश
2.	सरल वार्तालाप एवं साहित्यिक गतिविधियाँ	-	10 कालांश
3.	व्याकरण	-	15 कालांश
4.	पत्र लेखन, निबंध, अर्थग्रहण आदि	-	15 कालांश
5.	बोधन सुधार एवं परीक्षाएँ	-	20 कालांश
	कुल	-	**140 कालांश**

2. शब्द-भंडार : **400**

3. पाठों की संख्या : i) गद्य : **12**

ii) पद्य : **06**

4. पाठों की रूप-रेखा :

1. शीर्षक
2. पाठ / कविता / गद्य
3. लेखक / कवि परिचय
4. शब्दार्थ (नये शब्द)
5. अभ्यास :
   - i) विभिन्न स्तरों का अर्थग्रहण
   - ii) शब्द-संग्रह

iii) व्याकरण

iv) मुहावरे / कहावतें

v) अर्थ और प्रयोग

vi) पूरक वाचन संबंधी सूचना

vii) संवाद

viii) पाठ संबंधी क्रिया कलाप

ix) अध्यापन संकेत ।

(पाठ संबंधी अन्य विशेष सूचनाएँ)

5. पाठों का स्तर : सरल से कठिन

6. गद्य पाठों का चयन : **कुल 12 पाठ**

	गद्य की विधाएँ	**विषय**
1.	कहानी - 4	नीतिपरक, हास्य, साहस प्रधान, ऐतिहासिक घटना प्रधान
2.	निबंध - 2	राष्ट्रप्रेम, वैज्ञानिक, समाज सेवा, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय त्यौहार
3.	एकांकी - 1	सामाजिक
4.	जीवनी - 2	राष्ट्रीय नेता, प्रादेशिक नेता, प्रसिद्ध व्यक्ति - कलाकार, साहित्यकार
5.	लेख - 2	पर्यावरण, मूल्याधारित-सच्चाई और ईमानदारी
6.	पत्रलेखन नमूना - 1	घरेलू, पारिवारिक

7. पद्यों का चयन : **कुल 06 पद्य**

पद्य के प्रकार : **विषय**

1. नीतिबोध / उच्च विचार
2. आशावादिता
3. प्रकृतिपरक

4. परिश्रम का महत्व
5. धार्मिक सहिष्णुता
6. समाज सेवा
7. दोहे - 2

(बीस पंक्तियाँ कंठस्थ्य के लिए हों ।)

8. **परियोजना** : **1**

उदाहरण : मौलिक कहानी या पद्य की रचना

9. **व्याकरण** :
1. उच्चारण
2. विकारी शब्द - परिचय
3. लिंग, वचन, समानार्थक, विरुद्धार्थक पदों का परिचय
4. काल का परिचय
5. पाठ में आए हुए मुहावरे और कहावतों का अर्थ और प्रयोग ।

10. **रचना** : पत्र-लेखन

1. छुट्टी-पत्र
2. पारिवारिक पत्र
3. अनुवाद - हिंदी से मातृभाषा में ।

सूचना : उपर्युक्त व्याकरणिक अंश पाठों पर आधारित हों । उचित चित्रों का प्रयोग करें ।

कुल पृष्ठ संख्या : 90 - 100

* * * * *

तृतीय भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 9

<u>सेतुबंध कार्य</u> - आठवीं कक्षा में पठित पाठों के आधार पर हो ।

1. साल में उपलब्ध होने वाले कुल कालांश : **140**

<u>इन अवधियों का विभाजन यूँ होगा</u> -

1.	गद्य एवं पद्य (अध्ययन)	-	80 कालांश
2.	सरल वार्तालाप एवं साहित्यिक गतिविधियाँ	-	10 कालांश
3.	व्याकरण	-	15 कालांश
4.	पत्र लेखन, निबंध, अर्थग्रहण आदि	-	15 कालांश
5.	बोधन सुधार एवं परीक्षाएँ	-	20 कालांश
	कुल	-	**140 कालांश**

2. शब्द-भंडार : 500 नये शब्द

3. पाठों की संख्या : i) गद्य : **12**

ii) पद्य : **06**

4. **पाठों की रूप-रेखा :**

1. शीर्षक
2. पाठ / कविता / गद्य
3. लेखक / कवि परिचय
4. शब्दार्थ (नये शब्द)
5. अभ्यास :

    5.1 विभिन्न स्तरों का अर्थग्रहण

    5.2 शब्द-संग्रह

5.3 व्याकरण

5.4 मुहावरे / कहावतें

5.5 अर्थ और प्रयोग

5.6 पूरक वाचन संबंधी सूचना

5.7 संवाद

5.8 पाठ संबंधी क्रिया कलाप

5.9 अध्यापन संकेत ।

(पाठ संबंधी अन्य विशेष सूचनाएँ)

5. पाठों का स्तर : सरल से कठिन

6. गद्य पाठों का चयन : **कुल 12 पाठ**

गद्य की विधाएँ	**विषय**
6.1 कहानी - 4	चरित्र प्रधान, बाल मनोविज्ञान, परोपकार, त्याग, सांप्रदायिक एकता, सामाजिक समानता, सच्चाई का महत्व आदि मूल्यों पर आधारित
6.2 एकांकी - 2	पौराणिक, वीर महिला
6.3 निबंध - 2	सफाई और स्वास्थ्य
6.4 लेख - 2	व्यंग्य, खेल-कूद
6.5 आत्मकथा - 1	राजनैतिक, ऐतिहासिक
6.6 प्रवास कथन - 1	ऐतिहासिक स्थल

7. पद्यों का चयन : **कुल 06 पद्य**

पद्य के प्रकार : **विषय**

7.1 देशभक्ति गीत

7.2 सेवा मनोभाव

7.3 प्रेरणात्मक

7.4 नव समाज निर्माण

7.5 कर्मठता

7.6 आठ पंक्तियों का प्राचीन पद्य ।

(तीस पंक्तियाँ कंठस्थ्य के लिए हों)

8. **परियोजना** : 1

विषय - 'पाठशाला में अनुशासन'

9. **व्याकरण** : आठवीं कक्षा की आवृत्ति

i) समस्त कारकों का परिचय / प्रयोग

ii) वाक्य के प्रकार

iii) अविकारी शब्दों का परिचय

iv) 'कि' - 'की' का अंतर और प्रयोग

v) लिंग, वचन, विरुद्धार्थक शब्दों का परिचय

vi) मुहावरे और कहावतों का प्रयोग

vii) संधि : स्वर संधि ।

10. **रचना** : कम-से-कम पाँच रचनाएँ अपेक्षित हैं ।

1. पत्र लेखन : i) व्यावहारिक

ii) पारिवारिक

2. अनुवाद : हिंदी से मातृभाषा में

3. लघु निबंध : वर्णनात्मक

4. अर्थग्रहण ।

सूचना : उपर्युक्त व्याकरणिक अंश पाठों पर आधारित हों ।

कुल पृष्ठ संख्या : 100 - 110

* * * * *

तृतीय भाषा हिंदी पाठ्यक्रम

कक्षा - 10

<u>सेतुबंध कार्य</u> - नौवीं कक्षा में पठित पाठों के आधार पर हो ।

1. साल में उपलब्ध होने वाले कुल कालांश : **140**

<u>इन अवधियों का विभाजन यूँ होगा</u>

1.	गद्य एवं पद्य (अध्ययन)	-	80 कालांश
2.	सरल वार्तालाप एवं साहित्यिक गतिविधियाँ	-	10 कालांश
3.	व्याकरण	-	15 कालांश
4.	पत्र-लेखन, निबंध, अर्थग्रहण आदि	-	15 कालांश
5.	बोधन सुधार एवं परीक्षाएँ	-	20 कालांश
	कुल	-	**140 कालांश**

2. शब्द-भंडार : 600 (नये शब्द)

3. पाठों की संख्या : i) गद्य : **14**

ii) पद्य : **06**

4. पाठों की रूप-रेखा :

1. शीर्षक
2. पाठ / कविता / गद्य
3. लेखक / कवि परिचय
4. शब्दार्थ (नये शब्द)
5. अभ्यास :

   5.1 विभिन्न स्तरों का अर्थग्रहण

   5.2 शब्द-संग्रह

5.3 व्याकरण

5.4 मुहावरे / कहावतें

5.5 अर्थ और प्रयोग

5.6 पूरक वाचन संबंधी सूचना

5.7 संवाद

5.8 पाठ संबंधी क्रिया कलाप

5.9 अध्यापन संकेत

(पाठ संबंधी अन्य विशेष सूचनाएँ)

5. पाठों का स्तर : सरल से कठिन

6. गद्य पाठों का चयन : **कुल 14 पाठ**

गद्य की विधाएँ		विषय
6.1	आत्म कथन, जीवनी - 2	व्यक्तिपरक
6.2	कहानी - 3	मूल्याधारित, महिला जागृती
6.3	रेखाचित्र - 1	कोई नेता, स्वातंत्र्य सेनानी, साहित्यकार, प्रख्यात व्यक्ति
6.4	एकांकी - 2	सामाजिक, राष्ट्रप्रेम पर आधारित
6.5	लेख/संस्मरण - 2	वैज्ञानिक आविष्कार, व्यक्ति परिचय
6.6	निबंध - 3	संचार माध्यम, ऐतिहासिक स्थल का वर्णन प्रधान, चरित्र निर्माण
6.7	साक्षात्कार - 1	साहित्यकार, नेता, प्रसिद्ध कलाकार

7. पद्यों का चयन : **कुल 06 पद्य**

पद्य के प्रकार : **विषय**

7.1 समाज सुधार

7.2 सांस्कृतिक मूल्य

7.3 उद्‌बोधनात्मक

7.4 क्रियाशीलता

7.5 वैचारिक और चिंतन प्रधान

7.6 दस पंक्तियों का प्राचीन पद्य / 5 (दोहे) या पद - मीरा, सूर आदि ।

(तीस पंक्तियाँ कंठस्थ्य के लिए हों ।)

8. **व्याकरण** : पूर्वज्ञान की आवृत्ति

i) प्रेरणार्थक क्रिया

ii) संधि : व्यंजन संधि

iii) समास

iv) कालों का परिचय

v) लिंग, वचन, विरुद्धार्थक, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग, पर्यायवाची शब्द का प्रयोग

vi) मुहावरे और कहावतों का परिचय ।

9. **<u>रचना</u> :** कम-से-कम पाँच रचनाएँ अपेक्षित हैं ।

1. पत्र लेखन : i) व्यावहारिक

ii) पारिवारिक

2. निबंध : वर्णनात्मक, विचारात्मक

3. अनुवाद : हिंदी से मातृभाषा में

4. अर्थग्रहण ।

सूचना : उपर्युक्त व्याकरणिक अंश पाठों पर आधारित हों ।

पृष्ठों की संख्या : 110 - 120

* * * * *